जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

अगस्त 2017 द्वितीय पक्ष पृष्ठ: 52 मूल्य: 7:00 रुपये

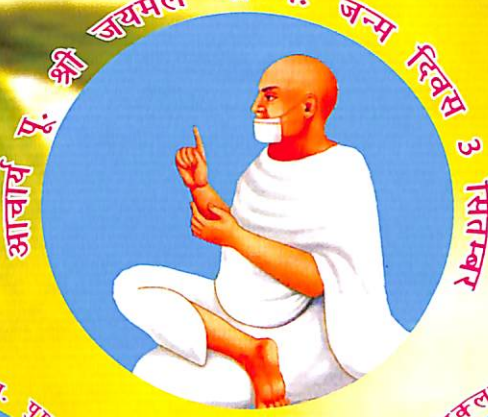

परम श्रद्धेय गुरु भगवंतों को हार्दिक वंदन-नमन्

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस,
नई दिल्ली द्वारा आत्मशुद्धि के पावन
महापर्व संवत्सरी के शुभ अवसर पर
गत् वर्ष ज्ञात-अज्ञात में हुए अविनय, राग-द्वेष,
मनोमालिन्य के लिए

।।मिच्छामि दुक्कडम्।।

RNI NO. - 2123/57
Date of Posting 23-24/08/2017
at Lodhi Road, H.O. New Delhi-110003
अगस्त 2017, द्वितीय पक्ष

Postal Regn. No. DL(ND) 11/6156/2015-16-17
U(C) 66/2015-17 Licenced to Post
Without Pre-Payment
Date of Printing 20 August 2017

णमो सिद्धाणं

गुरु पद्म जन्म शताब्दी महोत्सव

दिव्य आशीर्वाद

उत्तर भारतीय प्रवर्तक वाणी भूषण
प. पू. श्री अमर मुनि जी म. सा.

पावन प्रेरणा

श्रमण सूर्य सेवा सुमेरु उप प्रवर्तक
प. पू. श्री पंकज मुनि जी म. सा.

गुरु पद्म जन्म शताब्दी पूर्णोत्सव
त्रि दिवसीय कार्यक्रम
आप अपने क्षेत्र में आयोजित करें

30 सितम्बर 2017
महामंत्र नवकार का सामूहिक जाप-प्रातः 8 से 9 बजे तक
अन्नदानम् एवं भण्डारा
विद्यार्थियों को अभ्यास पुस्तिका एवं पैन वितरण

1 अक्टूबर 2017
सामायिक दिवस एवं गुणगान सभा
श्रुत-ज्ञान आराधना दिवस पर सचित्र जैन आगम सैट भेंट

2 अक्टूबर 2017
तप दिवस
उपवास, आयंबिल, एकासना आदि

गुरु पद्म जन्म शताब्दी वर्ष समापन समारोह
दो दिवसीय कार्यक्रम
के. जी. एफ. (कर्नाटक) श्रीसंघ के प्रांगण में

29 अक्टूबर 2017
सायं 7 बजे से
गुरु भक्ति जागरण
एक शाम गुरु पद्म के नाम

30 अक्टूबर 2017 प्रातः 7 से 8 बजे तक
गुरू भक्ति की भाव यात्रा
गुरु पद्म वन्दन नमन यात्रा

30 अक्टूबर 2017
प्रातः 8 से 12 बजे तक
गुरु गुणगान एवं आगम विमोचन समारोह

वन्दनकर्ता - समाज रत्न श्री महेन्द्र कुमार जैन
अध्यक्ष, श्री गुरु पद्म जन्म शताब्दी समापन महाहोत्सव राष्ट्रीय समिति
अध्यक्ष, पद्म प्रकाशन, पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-40

Vaibhav Graphics, ND#7417000878

Advt.

मोहनलाल चोपड़ा जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष)
डॉ. अशोककुमार एन.पगारिया जैन (राष्ट्रीय महामंत्री)
महेन्द्र बोकरिया जैन (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस

प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526, वेस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12-शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली- 110 001 से प्रकाशित

श्रमण संघीय एवं जैन कॉन्फ्रेंस की आध्यात्मिक, सामाजिक गतिविधियाँ

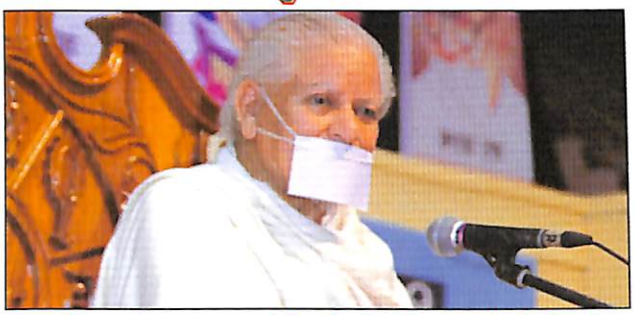

शिवाचार्य समवशरण् इंदौर में मंचासीन चातुर्मासार्थ विराजित श्रमण संघीय आचार्य सम्राट परम पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. एवं युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. आदि ठाणा तथा सुख-साता पूछते श्रद्धालु जन।

हैदराबाद (तेलंगाना) में चातुर्मास हेतु विराजित उपाध्याय पू. श्री प्रवीणऋषि जी म. आदि ठाणा के सान्निध्य में आचार्य सम्राट पूज्य श्री आनंदऋषि जी म. के 118वें जन्मोत्सव के अवसर पर 1008 अठ्ठाई तपोत्सव का दृश्य।

चेन्नई (तमिलनाडु) में चातुर्मास हेतु मंचासीन उपाध्यय प्रवर पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म. एवं साध्वीवृंद प्रवचन फरमाते हुए।

शिवाचार्य समवशरण् इंदौर में आचार्य सम्राट परम पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. के पावन सान्निध्य में निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नेमनाथ जी जैन, वर्तमान राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री चंदनमल जी चोरडिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेश भण्डारी जी जैन तपस्वियों को तप-अभिनंदन भेंट करते।

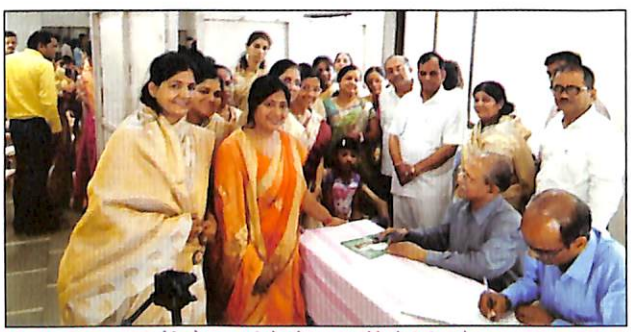

पनवेल (महाराष्ट्र)में पू. श्री अक्षय ज्योति जी म. के सान्निध्य में जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा की ओर से दिव्यांग, विकलांग एवं पोलियो ग्रस्त मरीजों को उपकरण देने के शिविर के अवसर पर ज्ञान प्रकाश योजना महिला अध्यक्षा सौ. कल्पना धारीवाल के प्रश्न मंच एवं फोटो फ्रेम का विमोचन करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी चोपड़ा जैन, उपाध्यक्ष श्री बालचंद जी खरवड, राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोककुमार पगारिया जैन, युवाध्यक्ष श्री शशिकुमार कर्नावट, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. रुचिरा जी सुराणा जैन, राष्ट्रीय महिला कोषाध्यक्ष सौ. सुनंदा भंसाली जैन आदि।

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

श्रमणसंघ निर्देशः जैन धर्म. प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः।
स्थानकवासिजैनानां कॉन्फ्रेंसनामविश्रुता, समाजोत्थानकार्येषु संस्थेयमस्ति तत्परा।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

वर्ष-60 | अंक-16 | अगस्त 2017 | द्वितीय पक्ष | 23-24 अगस्त | मूल्य एक प्रति 7 रुपये

प्रधान सम्पादक
अशोककुमार एन. पगारिया जैन
सम्पादन सहयोगी
शेर सिंह जैन
बालचंद खरवड़ जैन

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर
स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
नई दिल्ली
जैन भवन
12, शहीद भगत सिंह मार्ग
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
दूरभाषः 011 - 23363729, 23365420
फैक्स : 011 - 23344380
E - mail
aissjc1906@gmail.com
Website
www.jainconference.org

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क	
संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1000/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 1500/-
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता	
12 वर्ष	रु. 1000/-

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय	श्री अशोककुमार एन. पगारिया जैन	07
अध्यक्षीय उद्‌गार	श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन	09
सम्मानीय मार्गदर्शक मण्डल 2016-18 की सूची		10
राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा की सूचना		12
राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा की सूचना		13
राष्ट्रीय साधारण सभा की सूचना		14
आत्मा का विशेष ...	पू. श्री शिवमुनि जी म.	15
राष्ट्रीय ध्वज ...	पू. श्री समकित मुनि जी म.	16
मेवाड़ केसरी ...	पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म. 'नीरज'	18
वाणी के जादूगर ...	पू. श्री वरूण मुनि जी म.	19
पंच निश्रा स्थान	पू. श्री वैभवश्री जी म. 'आत्मा'	20
ऐसे होते है ...	श्री अविनाश चोरड़िया जी जैन	22
भव अवतारी ...	श्री औंकार सिंह सिरोया जी जैन	23
वचन सिद्धयोगी ...	श्री अशोककुमारजी धोका जैन	24
धर्म क्या है ?	श्री शेर सिंह जी जैन	25
ध्यान ...	श्री रवि लोढ़ा जी जैन	26
पर पीड़ा सम ...	डॉ. दिलीप धींग	27
क्षमा वीरस्य भूषणम्	डॉ. प्रेमसुख सुराणा जी जैन	28
संवत्सरी पर्व	श्री बनेचंद बोथरा जी जैन	30
युवा शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ		31
महिला शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ		32
समाचार प्रकाश		35
शोक समाचार		48

सम्पादक एवं जैन कॉन्फ्रेंस का लेखक के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। कृपया मौलिक विचार ही प्रेषित करें। किसी लेखक या पुस्तक से ली गई सामग्री का आभार अवश्य प्रकट करें। लेख एक पृष्ठ तक सीमित रखें तथा अपना नाम, पता एवं मोबाईल नंबर अवश्य लिखें। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान, आगम अतिधन्वा,
आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज
युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज

उपाध्याय मण्डलः
- श्री विशाल मुनि जी महाराज 'वाचनाचार्य'
- श्री मूलचंद जी महाराज
- श्री रमेश मुनि जी महाराज
- श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज
- श्री प्रवीण ऋषि जी महाराज
- श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज

प्रवर्तक मण्डलः
- श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'
- श्री रमेश मुनि जी महाराज
- श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज
- श्री सुमन मुनि जी महाराज
- श्री रतन मुनि जी महाराज
- श्री मदन मुनि जी महाराज
- श्री प्रकाश मुनि जी महाराज 'निर्भय'
- डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज

महामंत्री - श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद'

मंत्री मण्डलः
- श्री शिरीष मुनि जी महाराज (शिवाचार्य मुख्य सचिव)
- श्री आशीष मुनि जी महाराज
- श्री कमल मुनि जी महाराज 'कमलेश'

सलाहकार मण्डलः
- श्री सुमतिप्रकाश मुनि जी महाराज
- श्री सहज मुनि जी महाराज
- श्री सुकन मुनि जी महाराज
- श्री सुरेश मुनि जी महाराज 'शास्त्री'
- श्री तारक ऋषि जी महाराज
- श्री रमणीक मुनि जी महाराज
- श्री दिनेश मुनि जी महाराज
- श्री विनय मुनि जी महाराज 'भीम'
- श्री राम मुनि जी महाराज 'निर्भय'

प्रवर्तिनी मण्डलः
- श्री ज्ञानप्रभा जी महाराज
- श्री चंदना जी महाराज
- श्री सुधा जी महाराज
- श्री सुप्रभा जी महाराज
- श्री सरिता जी महाराज

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

विश्वस्त मण्डल (2011-2017)

1. श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर - चेयरमैन
2. श्री कांतिलाल जैन, मुंबई - सदस्य
3. श्री नेमीचंद चोपड़ा जैन, पाली - सदस्य
4. श्री राजेन्द्र कीमती जैन, हैदराबाद - सदस्य
5. श्री राजेन्द्र प्रसाद कोठारी जैन, बैंगलोर - सदस्य
6. श्री शेर सिंह जैन, दिल्ली - सदस्य
7. श्री चन्दनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर - सदस्य
8. श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नासिक - सदस्य
9. श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई - सदस्य
10. श्री रमेश चंद जैन (काहनी), दिल्ली - सदस्य

पदेन सदस्य -

11. श्री अविनाश चोरड़िया जैन - पदेन सदस्य
12. श्री बालचंद खरवड़ जैन - पदेन सदस्य
13. श्री नेमनाथ जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
14. श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
15. डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन - पदेन सदस्य

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

	एस.टी.डी.	दूरभाष कार्यालय	दूरभाष निवास	मोबाइल	फैक्स
राष्ट्रीय अध्यक्ष :					
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	0253	2461546, 2465569	2460026, 2461546	09423962818 09423963100	2461546
निवर्तमान अध्यक्ष :					
श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	0731	401157, 4011111		09303232777	4011110
चेयरमैन विश्वस्त मण्डल :					
श्री केसरीमल वुरड़ जैन, बैंगलोर	080	25475895, 25478567	25475901, 25475695	09844152853	41250211
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण :					
श्री जे. डी. जैन, गाजियाबाद	0120	2706100	2750100	09810006462	
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	02932	280898,280899	222125,325125	09829025729	222125
श्री सुवालाल बाफना जैन, धुले	02562	232033, 233133	235544, 235555	09422296155	
प्रमुख मार्गदर्शक :					
श्री कान्तिलाल एच. जैन, मुंवई	022	26398752	26352434	09821033225	26356983
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली	011	43573099,43573499		09313813899	23346899
श्री रामकुमार जैन, लुधियाना	0161	2449493, 2447538	2448714, 4413040	09814002335	2449957
श्री चंदनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर	0731	2540914	2540900	09826022621	
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष :					
श्री विलास लोढा जैन (वरिष्ठ), अहमदनगर				09960666065	
श्री बालचंद खरवड़ जैन, मुंबई	022	29255921, 29250508	25222104	09821668548	29200223
श्री भंवरलाल डी. वोहरा जैन, मोलेला (राज.)				09324556349	
श्री औंकारसिंह सिरोया जैन, उदयपुर	0294	2414033	2410374, 7023907574	09414167574	
श्री बालासाहेब चोरड़िया जैन, मुंवई	022	26367681	26367381	09324122233	
श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगावाद	0240	2337015, 2324811	2480979	09822659910	
श्री रमेश भण्डारी जैन, इंदौर	0731	460069 4070069		09302103817	2460069
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर	0181	5001111, 5019611		09815184311	
श्री भंवरलाल भण्डारी जैन, हैदराबाद				09440897417	
श्री वी. शांतिलाल पोखरना जैन, बैंगलोर			9845155799	09342535887	
श्री जगदीश चन्द्र जैन, पानीपत	0180	4009181		09896200081	
राष्ट्रीय महामंत्री :					
डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	020	46703433	09422036831	09028736831	
राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष :					
श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	011	43573099, 43573499		09868125710	23346899
राष्ट्रीय मंत्री :					
श्री विमल जैन, अम्बाला		7027131008	09216701008	09466701008	
श्री संजय जैन, 'निशा' लुधियाना	0161	2621237		09417253101	
श्री कंवरलाल सूर्या जैन, भीलवाड़ा	01482	236641	239104	09414113056	
श्री सोहनलाल भण्डारी जैन, नाशिक				09823079708	
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	0253	2599400	2599500	09422246500	
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	011	27372290		09810672111	
श्री विजय डागा जैन, मुंवई	022	28470384	28398165	09821095976	
श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुले	02562	278519		09423193447	
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद				09810078214	
श्री आनंद कोठारी जैन, बैंगलोर	080	28538338		09341234176	
श्री प्रसन्नकुमार संचेती जैन, चेन्नई				09035010666	
श्री सागर सांखला जैन, भोसरी				08888090999	

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018)

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री **श्री दिनेश एम. सुराणा जैन,** दिल्ली	011	27296131		09310054428	
राष्ट्रीय प्रचार - प्रसार मंत्री : **श्री सुभाष जैन 'लिली',** मंगलदेश (पंजाब) **श्री रिखबलाल सांखला जैन,** मुंबई				09814699393 09820668898	
राष्ट्रीय युवा शाखा : अध्यक्ष- **श्री शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू',** मालेगांव महामंत्री- **श्री रवि मदनलाल लोढ़ा जैन,** औरंगाबाद	0240		2338224	09823955515 09822276008	
राष्ट्रीय महिला शाखा : अध्यक्षा - **श्रीमती रूचिरा ललित सुराणा जैन,** मुंबई महामंत्री - **श्रीमती विनिता राजेन्द्र ओरड़िया जैन,** सूरत			09423966963	09820004079 09426115241	
जीवन प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **संजय बोथरा जैन,** घोटी मंत्री - **श्री लादुलाल बाफना जैन,** मुंबई				09822596781 09833866852	
जीव दया योजना : अध्यक्ष - **श्री प्रकाश सिंघवी जैन,** सूरत मंत्री - **श्री छितरमल रांका जैन,** सूरत				09879550981 08980018801	
मानव सेवा योजना : अध्यक्ष - **श्री महेश डाकोलिया जैन,** इंदौर मंत्री - **श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन,** इन्दौर	0731 0731	2531066 28753681	2970666 2780090, 2785232	07773866000 09425062147	531066
ज्ञान प्रकाश योजना : अध्यक्ष - **श्री भंवरलाल पगारिया जैन,** बैंगलोर मंत्री - **श्री अशोक कुमार धोका जैन,** बैंगलोर	080	41221890		09448238429 09844058123	
वैय्यावच्च समिति : अध्यक्ष - **श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन,** नाशिक मंत्री - **श्री महावीर नाहर जैन,** वड़गांवशेरी, पुणे	0253	2575799		09422944800 09822285538	

:: सम्माननीय प्रांतीय अध्यक्ष मण्डल ::

श्री आनन्दमल छल्लानी जैन (तमिलनाडु)	मो. : 098410 30035
श्री महावीरचंद अलिजार जैन (आंध्र प्रदेश)	मो. : 094924 44444
श्री सुरेशचन्द छल्लाणी जैन (कर्नाटक)	मो. : 093412 32573
श्री अतुल जैन (दिल्ली)	मो. : 098110 75336
श्री विनय जैन (हरियाणा)	मो. : 086075 00001
श्री राकेश जैन 'लक्की' (पंजाब)	मो. : 098150 20661
श्री मनमोहन जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098370 67082
श्री विमल तातेड़ जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 098260 62838
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 094220 74172
डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098300 30774
श्री सतीश नारायणदास लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 22138
श्री कांतिलाल बोथरा जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 094223 05755
श्री चन्द्रेश आर. कच्छारा जैन (गुजरात)	मो. : 095958 91111

:: सम्माननीय प्रांतीय महामंत्री मण्डल ::

श्री महावीरचन्द बोहरा जैन (तमिलनाडु)	मो. : 096772 47246
श्री दिलीप कुमार धारीवाल जैन (आन्ध्र प्रदेश)	मो. : 098480 54130
श्री मनोहरलाल लुकड़ जैन (कर्नाटक)	मो. : 098806 28555
श्री जसवंत जैन (दिल्ली)	मो. : 098104 35108
श्री राजेन्द्र जैन (हरियाणा)	मो. : 099963 33388
श्री अरुण जैन (पंजाब)	मो. : 098155 66885
डॉ. रश्मिकांत जैन (उत्तर प्रदेश)	मो. : 098083 79242
श्री संजय नवलखा जैन (मध्य प्रदेश)	मो. : 094251 01230
श्री बलवंत सिंह हींगड़ जैन (राजस्थान)	मो. : 098297 85197
श्री आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल)	मो. : 098302 49151
श्री मनोजकुमार एम. सेटिया जैन (महाराष्ट्र)	मो. : 094222 21511
श्री रविन्द्र रमनलाल लुकड़ जैन (मुंबई-पुणे)	मो. : 098231 29411
श्री दिनेश संचेती जैन (गुजरात)	मो. : 093769 01329

सम्पादकीय

पर्वाधिराज पर्युषण - जप, तप, दान एवं धर्म आराधना का मंगलमय महोत्सव

- **डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन,** राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : ashokpagariyaandco@gmail.com

प्रिय पाठक भाईयों एवं बहनों,

सादर जय जनेन्द्र!

गत् अंक में मैंने एक वर्ष का लेखा-जोखा आपके सामने रखा था, जिसमें महिला शाखा की गतिविधियों के बारें में एवम् योजनाओं के द्वारा किए गए कार्यों तथा जरुरतमंदों के सहायतार्थ की गई मदद के बारें में लिखा था। इस अंक में हमने युवा शाखा के एक वर्ष की सफल गतिविधियों के बारें में आपको जानकारी देना उचित समझता हूँ।

युवा शाखा की ओर से राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री शशिकुमार 'पिन्टू' जी कर्नावट जैन के नेतृत्व में 26 जनवरी 2017 को सबसे महत्वपूर्ण समाज सेवा का कार्यक्रम रक्तदान शिविर पूरे भारतवर्ष में लगाए गए। जिसके अंतर्गत 600 रक्तदान शिविरों के माध्यम से लगभग 83,000 यूनिट से ज्यादा रक्त संकलन किया गया। वृक्षारोपण कार्यक्रम के माध्यम से देशभर में एक लाख से ज्यादा पौधों का रोपण किया गया। पालघर की गौशाला में 251 छात्रों को नोट बुक तथा गौशाला में चारा, पानी की टंकी एवं सिलाई मशीन भेंट की गई।

गुजरात युवा शाखा की ओर से गुजरात बाढ़ पीड़ितों को सहायता हेतु भोजन के रूप में 1500 पूड़ी सब्जी, 12000 पानी के पाउच, 1500 बिस्किट, 1000 मोमबत्ती आदि का वितरण किया गया। दिल्ली युवा शाखा की ओर से 4000 से ज्यादा लोगों को भोजन कराया गया। औरंगाबाद में एवं नाशिक में अखिल भारतीय स्वाध्यायी संघ के साथ मिलकर पँच दिवसीय स्वाध्यायी शिविर का आयोजन किया गया, जहां पर 150 और 290 स्वाध्यायी शामिल हुए।

युवा शाखा की प्रांतीय शाखा की ओर से भी कई मानव सेवा के कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सबका ब्यौरा मैं मेरे संपादकीय में नहीं दे पाउंगा। शेष रह गए ब्यौरे के जानकारी समाचार के माध्यम से आप तक पहुंचाई जाती रहेगी। इस प्रकार ऐसे अनेकों कार्यक्रमों के माध्यम से युवा शाखा ने जैन कॉन्फ्रेंस का नाम रोशन किया है। रक्तदान एवम् वृक्षारोपण कार्यक्रम में नया कीर्तिमान स्थापित किया है। मैं सभी युवा साथियों को एवं महिला शाखा को धन्यवाद देता हूँ एवं अभिनंदन करता हूँ।

युवा शाखा एवं महिला शाखा
का करते है सम्मान
वर्षभर में उन्होंने कार्यों का
प्रस्थापित किया है कीर्तिमान !!

जैन धर्मियों का सबसे बड़ा धार्मिक त्यौहार **"पर्युषण महापर्व"** का आगमन दिनांक 19 अगस्त को हो रहा है। हमारे लिए यह त्यौहार धर्म आराधना, जप, तप और दान के माध्यम से पुण्यार्जन करने का यह पर्युषण सप्ताह कहलाता है। सालभर में हमारे लिए ऊर्जा और सकारात्मक सोच प्राप्त करने हेतु इस

:: सम्मानीय मार्गदर्शक मण्डल 2016-2018 ::

कर्नाटक, ज़ोन संख्या - एक

श्री अशोक कुमार रांका जैन, बैंगलोर 09945541200
श्री संपत्तराज मरलेचा जैन, बैंगलोर 09440029841
श्री राजेश मुथा जैन, बैंगलोर 09342863447
श्री महावीर रुणवाल जैन, बैंगलोर 09880028870
श्री महावीरचंद धोका जैन, बैंगलोर 09844095121
श्री जसवंत गन्ना जैन, बैंगलोर 09449393651
श्री आर. जबरचंद कांकरिया जैन, बैंगलोर 09980475969
श्री सुरेश कुमार बोहरा जैन, बैंगलोर 09900404040
श्री गणपतलाल दोशी जैन, बैंगलोर 09964103600
श्री भंवरलाल कोठारी जैन, मैसूर 09448958883
श्री अशोककुमार बोहरा जैन, के.जी.एफ. 09845070803

तमिलनाडु, ज़ोन संख्या - एक

श्री गौतमचंद खिंवसरा जैन, चेन्नई 09840048597
श्री राजेन्द्र जैन 'बब्बल', चेन्नई 09844010000

दिल्ली, ज़ोन संख्या - दो

श्री दिलीप कुमार रुणवाल जैन, दिल्ली 09811205545
श्री जगमंदर दास जैन, दिल्ली 09891578856
श्री सागरचंद जैन, दिल्ली 09311871067

उत्तर प्रदेश, ज़ोन संख्या - दो

श्री समरचंद जैन, आगरा 09837086386
श्री सतेन्द्र जैन, शामली 09412212818
श्री विनोदकांत जैन, मुजफ्फरनगर 09319422511
श्री धर्मपाल जैन, रामपुर 09760020977
श्री सतीश कुमार जैन, बड़ौत 09837514659

हरियाणा, ज़ोन संख्या - दो

श्री सुरेन्द्र जैन, कुरुक्षेत्र 09466436791
श्री सुमत जैन, यमुना नगर 09416121444

पंजाब, ज़ोन संख्या - दो

श्री उमेश जैन, जालंधर
श्री प्रदीप जैन, जालंधर
श्री सतीश जैन, जालंधर
श्री अनिल जैन, अंमृतसर 09316664442
श्री दर्शनलाल जैन, रोपड़
श्री विद्याप्रकाश जैन, परवानु 09216582225
श्री पारस जैन, लुधियाना 09815583500

मध्य प्रदेश, ज़ोन संख्या - दो

श्री निहालभाई गांधी जैन, रतलाम 09425103971
श्री पीयूष सागरमल जैन, इन्दौर 09425400121
श्री पारस पोखरना जैन, नागदा जंक्शन 09479806425
श्री संतोष चपलोत जैन, नगदा

राजस्थान, ज़ोन संख्या - तीन

श्री राजेन्द्र कुमार गोखरु जैन, भीलवाड़ा 09414184001
श्री मोहनलाल सूर्या जैन, भीलवाड़ा 09414201707
श्री सुरेन्द्रकुमार मेहता जैन, भीलवाड़ा 09414114369
श्री दौलत भडकत्या जैन, भीलवाड़ा 09829045591
श्री राजेन्द्र सामर जैन, भीलवाड़ा 09928796247
श्री वीरेन्द्र सिंह चौधरी जैन, भीलवाड़ा 09829046795
श्री धर्मेन्द्र कोठारी जैन, भीलवाड़ा 09982678353
श्री अशोक बोथरा जैन, भीलवाड़ा 09461340410
श्री रोशनलाल चौहान जैन, उदयपुर 09461201929
श्री उदयलाल भुतालिया जैन, उदयपुर 09414158580
श्री नानालाल कोठारी जैन, उदयपुर 08104451008
श्री मानसिंह रांका जैन, उदयपुर 09413479517
श्री नंदलाल नाबेड़िया जैन, उदयपुर 09414471559
श्री राजेन्द्र खोखावत जैन, उदयपुर 09414001031
श्री हस्तीमल जी बड़ाला जैन, उदयपुर 07597766616
श्री हिम्मतसिंह गलुंडिया जैन, उदयपुर 09414683216
श्री इन्दरमल लोढ़ा जैन, चित्तौड़गढ़ 09414111058
श्री हस्तीमल चोरड़िया जैन, चित्तौड़गढ़ 09414109764
श्री मगराज धोका जैन, पाली मारवाड़ 09829022054
श्री त्रिलोकचंद गोलेछा जैन, पाली मारवाड़ 09351087257
श्री बाबूलाल हिंगड़ जैन, कांकरोली 09414284856
श्री सुरेश जैन, कोटा 08003594479
श्री अशोक जैन, कोटा 09414188016
श्री प्रकाश लोढ़ा जैन, नाथद्वारा 09414343930
श्री लक्ष्मीलाल वड़ाला जैन, नाथद्वारा 09414171246
श्री भंवरलाल बोल्या जैन, नाथद्वारा 09928779272
श्री रंगलाल डागलिया जैन, नाथद्वारा
श्री फतेहलाल ढ़िलीवाल जैन, रेलमगरा 09414757206
श्री छोटूलाल पोखरना जैन, राशमी 09828183508
श्री देवेन्द्र चण्डालिया जैन, राशमी 09460362885
श्री बाबूलाल बोहरा जैन, सोजत 09414122452
श्री दलीचंद जैन 'दिव्येश', मावली 09928073049
श्री लक्ष्मीचंद भण्डारी जैन, ब्यावर 09414289111

महाराष्ट्र, ज़ोन संख्या - चार

श्री मोहनलाल बागमार जैन, नाशिक 09225126445
श्री रमेश नैनसुख बाफना जैन, अहमदनगर

श्री अशोक बलदोटा जैन, अहमदनगर
श्री मनसुख चोरड़िया जैन, अहमदनगर 09881712295

मुंबई-पूना, ज़ोन संख्या - पांच

श्री तेजमल रतनलाल बोहरा जैन, लातुर
श्री कांतिलाल बाफना जैन, पुणे 09890990401
श्री एन.एम. कर्नावट जैन 'सी.ए.', पुणे 09763181210
श्री अभयराज डांगी जैन, पुणे 09312248799
श्री निलेश खाब्या जैन, घोड़नदी 09763181210
श्री सुरेश सोनी जैन, मुंबई 09967020931
श्री रविन्द्र सियाल जैन, मुंबई 09324334453
श्री पारसमल सुराणा जैन, मुंबई 09869647440
श्री हिम्मत छाजेड़ जैन, मुंबई 09820445967
श्री नवरतन सोनी जैन 'सी.ए.', मुंबई 09820978130
श्री पारस तातेड़ जैन, मुंबई 09769779299
श्री सोहनलाल सेठिया जैन, मुंबई 09820243737
श्री हिम्मत कंठालिया जैन, मुंबई 09821751094
श्री भोलीलाल कोठारी जैन, मुंबई 09324070640
श्री नंदलाल डागलिया जैन, मुंबई 09820339560
श्री सुभाष हिंगड़ जैन, मुंबई 08080789100
श्री मांगीलाल वडाला जैन, मुंबई 09324282819
श्री चंद्रप्रकाश विश्लोत जैन, मुंबई 09869217768
श्री अशोककुमार बी. बाफना जैन, मुंबई 09820108903
श्री जसवंत सिंह कोठारी जैन, मुंबई 09867502987
श्री प्रकाश लोढ़ा जैन, मुंबई 09324562601
श्री सुरेश खिंवसरा जैन, मुंबई 09820426773
श्री प्रसन्न लोढ़ा जैन, मुंबई 09892058729
श्री पारसमल खिंवसरा जैन, मुंबई 09820125325
श्री अभय पी. कोटेचा जैन, मुंबई 09892756640
श्री मोतीलाल सेठिया जैन, मुंबई 09892379550
श्री मनोहरलाल चपलोत जैन, मुंबई 09320268928
श्री सुरेशचंद सिंघवी जैन, मुंबई 09892379550
श्री कोमल खेरोदिया जैन, मुंबई 09821259721
श्री प्रवीण लुणावत जैन, थाणे 09820042032
श्री हंसमुख बंबकी जैन, दापोली

गुजरात, ज़ोन संख्या - पांच

श्री सुरेश चोपड़ा जैन, सूरत 09374512674
श्री कालूलाल बडोला जैन, सलाल 09409568579

जैन प्रकाश - विशेषांक

आप सभी साधु-साध्वी जी महाराज, श्रावक-श्राविकावृंद एवं जैन प्रकाश पत्रिका के नियमित पाठकों से विशेष सादर अनुरोध है कि :-

- **पूज्य आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिव मुनि जी महाराज की हीरक जन्म जयंती के अवसर पर सितम्बर महीने के प्रथम पक्ष ।**
- **प्रवर्तक पूज्य श्री पदमचंद जी भण्डारी महाराज के जन्म शताब्दी के अवसर पर सितम्बर महीने के द्वितीय पक्ष ।**
- **श्रद्धेय युवाचार्य पूज्य श्री महेन्द्रऋषि जी महाराज की जन्म स्वर्ण जयंती के अवसर पर अक्टूबर महीने के प्रथम पक्ष ।**

विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा, ऐसी हमारी विनम्र भावना है। आप सभी से अनुरोध है कि उपरोक्त विशेषांकों के लिए आप गुरु भगवंतों के प्रति अपनी भावना के अनुसार विज्ञापन अथवा लेख उचित समय पर भेजने की कृपा करें, ताकि उनको विशेषांक में उचित स्थान दिया जा सकें। - सम्पादक मण्डल

AISSJC/MEETING-MC-V/16-18/ 2455 /17/234 दिनांक : 11.08.2017

राष्ट्रीय प्रबन्ध समिति सभा की सूचना

मान्यवर महोदय

सादर जय जिनेन्द्र!

हम आशा करते हैं कि आप सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्नचित होंगे।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की राष्ट्रीय प्रबन्ध समिति की सभा रविवार दिनांक 17 सितम्बर 2017 को प्रातः 11:30 बजे से, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शिवाचार्य समवशरण, अभय प्रसाल, रेस कोर्स रोड़, इन्दौर – 452001 (मध्य प्रदेश) में आयोजित की जा रही है। आप श्री जी से सादर अनुरोध है कि सभा में पधारकर अपने विचारों एवं सुझावों से संस्था को लाभान्वित करें।

सभा में विचारणीय विषय सूची निम्न प्रकार से है –

विषय सूची :–

01. मंगलाचरण।
02. दिवंगत साधु–साध्वीवृंद एवं श्रावक–श्राविकाओं को श्रद्धांजलि।
03. गत् सभा की कार्यवाही की पुष्टि।
04. सभा की तारीख से एक सप्ताह पूर्व तक प्राप्त आजीवन सदस्यता आवेदन पत्रों पर विचार–विमर्श एवं स्वीकृति प्रदान करना।
05. वित्तीय वर्ष 2016–2017 के ऑडिटेड अकाउंट की प्रस्तुति कर राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा में स्वीकृति लेने हेतु संस्तुति।
06. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय जी की आज्ञा से।

धन्यवाद सहित !

भवदीय

(अशोककुमार एन. पगारिया जैन)

राष्ट्रीय महामंत्री

नोट :

1. **संपूर्ण मीटिंग में आपकी उपस्थिति अनिवार्य है।**
2. **कोरम के अभाव में सभा उसी दिन उसी स्थान पर आधे घण्टे के बाद होगी।**
3. **यदि कोई सदस्य किसी प्रकार की जानकारी चाहते हैं तो कार्यालय को 7 दिन पूर्व लिखित रूप में सूचना देवें अन्यथा सभा में आपके द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर देने में हमें असमर्थता हो सकती है।**
4. **ऑडिटेड अकाउंट वर्ष 2016–17 की विस्तृत जानकारी जैन प्रकाश पत्रिका के सितम्बर प्रथम पक्ष में प्रकाशित की जाएगी।**
5. **अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र : कार्यालय : 011 – 23363729, 23365420**
6. **कृपया सभा की तारीख से 7 दिन पूर्व तक अपने आने की सूचना राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेश जी भण्डारी जैन – 09302103817 एवं मध्य प्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष श्री विमल जी तांतेड़ जैन – 09826062838 को उनके लिखे मोबाईल नंबर पर संपर्क कर अवश्य देवें ताकि आपके ठहरने आदि की व्यवस्था समुचित रूप से की जा सके।**

AISSJC/MEETING-WC-IV/16-18/ 2456/17/234 दिनांक : 11.08.2017

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा की सूचना

मान्यवर महोदय

सादर जय जिनेन्द्र !

हम आशा करते हैं कि आप सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्नचित होंगे।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की सभा रविवार दिनांक 17 सितम्बर 2017 को दोपहर 12:15 बजे से, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शिवाचार्य समवशरण, अभय प्रसाल, रेस कोर्स रोड़, इन्दौर – 452001 (मध्य प्रदेश) में आयोजित की जा रही है। आप श्री जी से सादर अनुरोध है कि सभा में पधारकर अपने विचारों एवं सुझावों से संस्था को लाभान्वित करें।

सभा में विचारणीय विषय सूची निम्न प्रकार से है –

विषय सूची :–

01. मंगलाचरण ।

02. दिवंगत साधु–साध्वीवृंद एवं श्रावक–श्राविकाओं को श्रद्धांजलि।

03. गत सभा की कार्यवाही की पुष्टि।

04. राष्ट्रीय प्रबंध समिति द्वारा पारित वित्तीय वर्ष 2016–2017 के ऑडिटेड अकाउंट की प्रस्तुति कर वार्षिक साधारण सभा में स्वीकृति लेने हेतु संस्तुति।

05. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय जी की आज्ञा से।

धन्यवाद सहित !

भवदीय

(अशोककुमार एन. पगारिया जैन)

राष्ट्रीय महामंत्री

नोट :

1. **संपूर्ण मीटिंग में आपकी उपस्थिति अनिवार्य है।**
2. **कोरम के अभाव में सभा उसी दिन उसी स्थान पर आधे घण्टे के बाद होगी।**
3. **यदि कोई सदस्य किसी प्रकार की जानकारी चाहते हैं तो कार्यालय को 7 दिन पूर्व लिखित रूप में सूचना देवें अन्यथा सभा में आपके द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर देने में हमें असमर्थता हो सकती है।**
4. **ऑडिटेड अकाउंट वर्ष 2016–17 की विस्तृत जानकारी जैन प्रकाश पत्रिका के सितम्बर प्रथम पक्ष में प्रकाशित की जाएगी।**
5. **अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र : कार्यालय : 011 – 23363729, 23365420**
6. **कृपया सभा की तारीख से 7 दिन पूर्व तक अपने आने की सूचना राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेश जी भण्डारी जैन – 09302103817 एवं मध्य प्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष श्री विमल जी तांतेड़ जैन – 09826062838 को उनके लिखे मोबाईल नंबर पर संपर्क कर अवश्य देवें ताकि आपके ठहरने आदि की व्यवस्था समुचित रूप से की जा सके।**

AISSJC/MEETING-GB-II/16-18/ 2457/17/234 दिनांक : 11.08.2017

वार्षिक साधारण सभा की सूचना

मान्यवर महोदय

सादर जय जिनेन्द्र जी !

आशा है कि आप सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त होंगे।

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय साधारण सभा रविवार **दिनांक 17 सितम्बर 2017** को **दोपहर 02:00 बजे** से, **श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शिवाचार्य समवशरण, अभय प्रसाल, रेस कोर्स रोड़, इन्दौर – 452001 (मध्य प्रदेश)** में आयोजित की जा रही है। आपश्री से सादर अनुरोध है कि आप सभा में पधारकर अपने विचारों एवं सुझावों से संस्था को लाभान्वित करें।

सभा में विचारणीय विषय सूची निम्न प्रकार से है :–

01. मंगलाचरण।
02. दिवंगत साधु–साध्वीवृंद एवं श्रावक–श्राविकाओं को श्रद्धांजलि।
03. गत सभा की कार्यवाही की पुष्टि।
04. राष्ट्रीय प्रबंध समिति एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति द्वारा पारित वर्ष 2016–2017 के ऑडिटेड अकाउंट की प्रस्तुति कर पास करना।
05. वर्ष 2017–18 के लिए ऑडिटर की नियुक्ति करना।
06. कोर्ट केस की जानकारी प्रस्तुत करना।
07. जैन भवन संबंधित व्यवस्थाओं पर विचार–विमर्श एवं निर्णय लेना।
08. जीवन प्रकाश योजना, जीव दया योजना, मानव सेवा योजना, ज्ञान प्रकाश योजना एवं वैय्यावच्च समिति के राष्ट्रीय अध्यक्षों द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
09. राष्ट्रीय युवा शाखा के अध्यक्ष द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
10. राष्ट्रीय महिला शाखा की अध्यक्षा द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत करना।
11. अन्य विषय अध्यक्ष महोदय जी की आज्ञा से।

धन्यवाद सहित

भवदीय

(अशोककुमार एन. पगारिया जैन)
राष्ट्रीय महामंत्री

नोट :
1. संपूर्ण मीटिंग में आपकी उपस्थिति अनिवार्य है।
2. कोरम के अभाव में सभा उसी दिन उसी स्थान पर आधे घण्टे के बाद होगी।
3. यदि कोई सदस्य किसी प्रकार की जानकारी चाहते हैं तो कार्यालय को 7 दिन पूर्व लिखित रूप में सूचना देवें अन्यथा सभा में आपके द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर देने में हमें असमर्थता हो सकती है।
4. ऑडिटेड अकाउंट वर्ष 2016–17 की विस्तृत जानकारी जैन प्रकाश पत्रिका के सितम्बर प्रथम पक्ष में प्रकाशित की जाएगी।
5. अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र : कार्यालय : 011 – 23363729, 23365420
6. कृपया सभा की तारीख से 7 दिन पूर्व तक अपने आने की सूचना राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेश जी भण्डारी जैन – 09302103817 एवं मध्य प्रदेश प्रांतीय अध्यक्ष श्री विमल जी तांतेड़ जैन – 09826062838 को उनके लिखे मोबाईल नंबर पर संपर्क कर अवश्य देवें ताकि आपके ठहरने आदि की व्यवस्था समुचित रूप से की जा सके।

शिव संदेश...

आत्मा का विशेष पोषण : पर्युषण

- युग सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी म.

आध्यात्मिक मार्ग में आत्मा को पोषण करने के लिए पर्युषण-पर्व की आराधना की जाती है। आत्मा सहज भाव से समाधी में रहती है तब जीवन में आनंद, शांति-ज्ञान की वर्षा होती है। किन्तु व्यवहार धर्म में संजागो के अधीन जीव विभाव की स्थिति में जाकर कार्मण शरीर को बढ़ा लेता है। किन्तु प्रतिदिन की आराधना में शड़ावश्यक करके वह पुनः स्वभाव में स्थित हो जाता है। पाक्षिक, चातुर्मासिक आराधना में जीव पुनः अपने स्वरुप में स्थित हो जाता है।

वर्ष में एक बार आठ दिन के लिए पर्युषण पर्व की विशेष आराधना करवाई जाती है। जिसके अन्तर्गत साधक शरीर व आत्मा का भेद करते हुए आत्मा की साक्षी में ज्ञाता दृष्टा भाव से पूरे वर्ष को देखता है। इसे देखकर आभ्यंतर तप के अन्तर्गत प्रायश्चित तप से आलोचना करता है। अपने विभाव की स्थिति को बेहोशी की दशा में किये शुभाशुभ कर्मो को जानता है देखता है। और होश पूर्वक आलोचना, प्रतिक्रमण करके शुद्ध होता है। कुछ कर्म आलोचना से चले जाते है, कुछ प्रतिक्रमण से।

प्रतिक्रमण अर्थात् - **'तस्स मिच्छामि दुक्कड़ं'** वो कार्य जो मैंने बेहोशी में किये, वो मेरे मिथ्या हो, दुष्कृत हो। कुछ कर्मों के लिये तदुभय- अर्थात् दोनों, करने होते है और विवेक अर्थात आगे के लिये होश पूर्वक कार्य करना जिससे नवीन कर्म का बन्ध न हो। पर्युषण आत्म शुद्धि का पर्व है जिसमें प्रत्येक साधक मोक्ष मार्ग में आगे बढते हुए सम्यक दर्शन-ज्ञान-चारित्र से मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ता है। निर्जरा के 12 भेद से 6 बाह्य 6 आभ्यंतर तप द्वारा कर्मक्षय करता है।

आठ दिवसीय आध्यात्मिक यज्ञ में साधक बाह्यतप- अनशन, उनोदरी, वृत्ति-संक्षेप, भिक्षाचारी, रस परित्याग, काय क्लेश, प्रतिसंलीनता, मौन एकांत। आभ्यंतर तप में प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान, कायोत्सर्ग से कर्म क्षय करता हुआ मुक्ति की ओर आगे बढ़ता है। आत्म रमण, आत्म चिन्तन व आत्म ध्यान से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आनंद का अनुभव करता है। जिन साधकों ने आत्म ध्यान शिविरों में आत्म शुद्धि की विशेष साधना सीखी है वे साधक पर्वाधिराज के आठ दिनों में मौन रहकर बाह्य व आभ्यंतर तप द्वारा आत्म शुद्धि करें। पर्युषण के सात दिन के बाद आत्म शुक्ल जयंति अर्थात् श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर आचार्य श्री आत्माराम जी म.सा. की जन्म जयंती आ रही है। आचार्यश्री का जीवन हम सबके लिये प्रेरणादायी जीवन है, उनका हरेक पहलु आध्यात्म से परिपूर्ण है। उनका बाल्यकाल वैराग्य में बीता। आचार्य श्री मोतीरामजी के नेतृत्व में उन्होंने आगमों का गहन अध्ययन किया। वे बीस वर्ष की उम्र में उपाध्याय बनें। तत्पश्चात पंजाब के आचार्य बने। सन् 1952 में उन्हें सम्पूर्ण स्थानकवासी परंपरा के श्रमण संघ का प्रथम आचार्य सम्राट बनाया गया। उनका अधिकांश समय स्वाध्याय व ध्यान में बीतता था। उन्होंने आगमों की गहन टीकाये लिखकर स्थानकवासी समाज में स्वाध्याय की परम्परा को आगे बढ़ाया। वे श्रमण संघ में स्वाध्याय व ध्यान की परम्परा के मूल उद्गाता थे। आचार्य श्री आत्माराम जी महाराज के आशीर्वाद से ही हम सब आत्म ध्यान कायोत्सर्ग एवं स्वाध्याय को आगे बढ़ा रहे है। यहां भी हम श्री आचारांग सूत्र व श्री ठाणांग सूत्र का स्वाध्याय कर रहे हैं।

हम सभी आचार्य श्री आत्म प्रभु के जीवन से आध्यात्म की प्रेरणा लेकर वीतरागता की ओर बढ़े। चातुर्मास में उत्तम आध्यात्मिक वातावरण बना हुआ है। प्रथम माह में ही तीन के आसपास साधक-साधिकाओं ने आत्म ध्यान किया। 25 के आस-पास मासखमण चल रहे है। प्रवचन, ध्यान, योग, प्रार्थना, महामंत्र जाप, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण आदि में जन-जन का उत्साह है। पूरे देश में आध्यात्मिक वातावरण बना हुआ है। सबका मंगल हो। सबका आध्यात्मिक विकास हो। ✧✧

राष्ट्रीय ध्वज और जैन आगम

- पू. डॉ. समकित मुनि जी म.

भारत का राष्ट्रीय ध्वज जिसे तिरंगा भी कहते हैं। तीन रंग की क्षैतिज पट्टियों के बीच नीले रंग के एक चक्र द्वारा सुशोभित ध्वज है। ध्वज की सबसे ऊपर की पट्टी केसरिया है, मध्य की पट्टी श्वेत है जिसके मध्य में एक चक्र है। सबसे नीचे हरे रंग की पट्टी है। **केसरिया रंग** साहस देश की अखंड एकता एवं शक्ति प्रतीक है। **श्वेत रंग** शांति सत्य एवं अमन जैन भाईचारा का प्रतीक है। **हरा रंग** उर्वरता पवित्रता हरितमा का प्रतीक है।

जैन आगम के अधार पर राष्ट्रीय ध्वज की कितनी महत्ता है इस पर चिंतन करने से पूर्व जैन आगमो में वर्णित छः लेश्याओं पर एक नज़र ड़ालते है। आगमों में लेश्याओं का विशद वर्णन आया है लेश्याओं के नाम यथाक्रम है:-

1. कृष्ण लेश्या 2. नील लेश्या 3. कापोत लेश्या 4. तेजो लेश्या 5. पदम लेश्या 6. शुक्ल लेश्या।

ये छः लेश्याएं मनुष्य के विभिन्न प्रकार के भावों की सूचक हैं। कृष्ण लेश्या का वर्ण (रंग) काला बताया गया है, जो कि जल से भरे मेघ के सामान काजल, आँख की पुतली जैसा काला होता है।

नील लेश्या का रंग नीले अशोक वृक्ष के सामन वैडूर्य मणि के समान नीला होता है। कापोत लेश्या का रंग अलसी के फूल के समान कबूतर के गर्दन के समान कापोत होता है। तेजो लेश्या का वर्ण उगते हुए तरुण सूर्य के समान दीपक की शिखा के समान लाल होता है। पदम लेश्या का रंग हल्दी के टुकड़े के समान पीला होता है। समान, चाँदी के हार के समान श्वेत होता है। इनमें प्रथम तीन लेश्या (कृष्ण, नील, कापोत), अश्रेष्ठ/अशुभ मानी है। अंतिम तीन लेश्या (तेजो, पदम, शुक्ल) उत्तम/श्रेष्ठ, शुभ मानी गयी है। प्रथम तीन लेश्याओं को धारण करने वाले मनुष्यों के लक्षण निर्दयी, हिसंक होते है। वे अन्यायी प्रवृत्ति वाले होते है।

ईर्ष्यालु, कदाग्रही, धूर्त भावों वाले होते हैं। अंतिम तीन लेश्याओं वाले मनुष्य अहिंसक, शांतिप्रिय, विन्रम, सत्यवादी, धर्म प्रेमी होते हैं।

राष्ट्रीय ध्वज की प्रथम पट्टी केसरिया रंग की है। केसरिया रंग लाल और पीले रंग के मिश्रण से बनता है तथा केसरिया रंग शक्ति एवं साहस का प्रतीक होता है। देश की एकता एवं अखंडता का प्रतीक है। केसरिया रंग में प्रयुक्त पहला रंग लाल है जो कि जैन आगमानुसार तेजो लेश्या का रंग है। तेजो लेश्या के भावों को धारण करने वाला व्यक्ति आगम के अनुसार भक्तिवान होता है, धर्मप्रेमी होता है, धर्म में दृढ़ रहने वाला होता है, हिम्मतवान होता है। केसरिया रंग में प्रयोग होने वाला दूसरा रंग पीला, जो कि पद्म लेश्या का रंग हैं। ऐसी लेश्या के परिणामों से युक्त व्यक्ति के भाव प्रशांत होते हैं, वह सत्यवादी होता है। आगमानुसार राष्ट्र ध्वज का प्रथम केसरिया रंग यह शिक्षा देता कि हम दृढ़तापूर्वक देश धर्म का पालन करें, हम अपने देश से प्रेम करें, हिम्मत के साथ धर्म और सत्य की रक्षा करें। संसार में अन्याय और अत्याचार का प्रसार न होने दें। हम न्यायपथ से कभी डिगें नहीं।

राष्ट्रीय ध्वज की दूसरी पट्टी श्वेत रंग की है। श्वेत रंग शुक्ल लेश्या का है। शुक्ल लेश्या के भावों में रमण करने वाला, व्यक्ति उपशांत होता है। शांतिप्रिय

होता है। राष्ट्रीय ध्वज का यह श्वेत रंग शिक्षा देता है कि लौकिक दृष्टि से संसार से अन्याय न रहने दें प्रत्युत शांति स्थापित करें और धर्म दृष्टि से हम पूरे यतन से अपना आत्म-विकास करें।

राष्ट्रीय ध्वज की तीसरी पट्टी का हरा रंग है जो कि उर्वरता, पवित्रता, हरियाली का प्रतीक है। हरा रंग नीले और पीले रंग के मिश्रण से तैया होता है। जैन आगमानुसार नील रंग लेश्या का है जो कि अशुभ लेश्या है। इस लेश्या के परिणामों वाला व्यक्ति कपटी, लालची, हिंसक, अविवेकी होता है तथा दूसरा रंग पीला जो कि शुभ लेश्या का वर्ण है। यह लेश्या, क्रोध, मान, लोभ आदि दुर्गुण को कम करती है तथा न्यायशीलता में स्थित करती है एवं अन्याय को जड़ मूल से उखाड़ फैंकती है।

अशुभ लेश्या का रंग नीला एवं शुभ लेश्या का रंग पीला दोनों का मिश्रण होता है तो हरा रंग बनता है जो कि इस बात का सूचक है कि शुभ लेश्या के रंग ने अशुभ लेश्या के दुर्गुणों को दूर करके हरा रंग उत्पन्न कर दिया। हरा रंग सूचित कर रहा है कि नील लेश्या के अवगुण नहीं रहे अपितु पद्म लेश्या के संयोग से हरियाली पर आ गया है। हरा रंग यह सूचित कर रहा है कि जीवन से दुर्गुण दूर हो गये हैं। अतः सभी प्रकार की अभिवृद्धि रहेगी, देश खुशहाल रहेगा।

हर प्रकार केसरिया, श्वेत, हरा यह तीनों रंग जो हमारे राष्ट्रीय ध्वज में रखे गये हैं वे जैन आगमानुसार इस बात का सूचक है कि हम भारतवासी स्वयं न्यायशील रहेंगे, न्यायपथ पर आगे बढ़ते हुए विश्व में शांति की स्थापना हेतु सहयोग करेंगे और अपने राष्ट्रय के गौरव में अभिवृद्धि करने के साथ-साथ आत्म विकास का पथ अपनायेंगे तथा जीवन को दुर्गुणों से रहित बना देंगे।

राष्ट्रीय ध्वज की मध्य पट्टी में चक्र बनाया गया है। जैन साहित्य में चक्र को दिग्विजय का सूचक माना गया है। जैन आगम में बारह चक्रवर्ती, नव वासुदेव, नव प्रतिवासुदेव माने गये हैं। इन सबके पास एक-एक चक्र रतन होता है। यह चक्र विजय का सूचक है। जैन आगमों में तीर्थंकर को धर्मचक्रवर्ती कहा गया हैं। तीर्थंकर विहार करते हैं तो उनके आगे चक्र चलता है जो कि उनके चौतीस अतिशय में एक अतिशय है। जो हिंसा पर अहिंसा की विजय का प्रतीक है।

देवों के विमान में मुख्य द्वार पर चक्रमुआ अर्थात् चक्रध्वजा का जिक्र आया है जोकि विजय का सूचक है। वृतिकार लिखते हैं चक्र के चिह्न वाली ध्वजा उनके विमानों पर लहरा रही है जो कि विजय का प्रतीक है। आगमों चम्पा आदि नगरियों का वर्णन आया है, उसमें कहा गया है कि नगर के मुख्य द्वार पर चक्र, गदा, तोप आदि शस्त्र लगे होते थे जो विजय का सूचक थे। जैन परम्परा के अनुसार प्रतिवासुदेव अपने ही चक्र से मारे जाते हैं। आवश्यक निर्युक्ति में कहा गया है कि समवसरण में देव धर्मचक्र की स्थापना करते हैं।

जैन आगम एवं साहित्य के अनुसार चक्र विजय का प्रतीक है। हिंसा पर अहिंसा, अन्याय पर न्याय का जीत का प्रतीक है। इस प्रकार अध्ययन करने पर यह विदित होता है कि राष्ट्रीय ध्वज धार्मिक संस्कारों से संस्कृत है। ✧✧

जो भरा नहीं है भावों से बहती
उसमें रसधार नहीं,
वो हृदय नहीं वो पत्थर है जिसको
स्वदेश से प्यार नहीं।।

मेवाड़ केसरी गुरुदेव पू. श्री मोहनलाल जी म. एक सरल और विराट व्यक्तित्व

- पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म. 'नीरज'

राजस्थान प्रांत के मेवाड़ क्षेत्र ने अपनी गौद से अनेकों वीर-दानवीर तो दिए ही है मगर अनेक संत रत्न अपने ऑचल से श्रमण परंपरा को भेंट कर के अपने आपको धन्य और गौरान्वित किया है। ऐसे ही एक श्रमण परंपरा की श्रृंखला में महान् संत हुए है:-

प्रवर्तक गुरुदेव श्री मोहन लाल जी म. जिनके नाम का जादू मेवाड़ के गाँव-गाँव में चलता था, लोग उनका नाम सुनते ही ऐसे दौड़े आते जैसे नदियाँ का बहता पानी। जो उनसे जुड़ता, संपर्क में आता, उनका ही हो कर रह जाता।

मत-मतांतरों से, चमत्कारों से, प्रदर्शन से एक अलग ही उनका व्यक्तित्व था-पारदर्शी व्यक्तित्व।

गुरुदेव अक्सर फरमाया करते थे **'जैसे हो वैसे दिखो भी'** इससे अपराध बोध कम होता है हमारा प्रतिक्रमण भी तो ये ही करता है।

गुरुदेव की इसी पारदर्शिता से मेवाड़ के लोग ही नही, पूरे भारतवर्ष के लोग उनके संपर्क में आए। श्रमण संघ के मूर्धन्य भगवंत तो गुरुदेव का समादर, बहुमान करते ही थे मगर अन्य संप्रदायों के मुनि भगवंत भी गहरी घनिष्ठता रखते थे। ये सच है कि सरल व्यक्तित्व को बनाना और बनाए रखना बहुत कुछ असंभव सा है मगर जब ये परिपक्व हो जाता है तो अनेकों कालचक्र तक विचलित और चलायमान नही होता अपितु अपनी मौजूदगी दर्शाता रहता है- रोशनी की मिनार बन कर लोगों का पथ प्रदर्शन करता रहता है। गुरुदेव पू. श्री मोहन लाल जी म. के लिए मेरे पास शब्द से ज्यादा अनुभव है और अनुभव को कभी शब्दों में पिरोना संभव नही है।

मेवाड़ केसरी गुरुदेव के सरलता के महासागर से प्रभावित हो कर एवं उनकी संयम साधना की आराधना प्रभावना को देखते हुए श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य भगवंत पू. श्री आनंदऋषि जी म. ने 'प्रवर्तक' पद की गरीमामय चादर भेंट कर के गुरुदेव का अभिनंदन किया गुरुदेव के साथ साथ ये अभिनंदन संपूर्ण मेवाड़ प्रांत का था और इस गौरव को प्राप्त करने वाले गुरु मेवाड़ केसरी शीतल संप्रदाय के प्रथम संत रत्न थे।

मुझे गर्व है मेवाड़ केसरी गुरुदेव पर जिनका अल्प समय का प्राप्त सान्निध्य मेरे जीवन का निर्माता बन गया। आज मेरा अहोभाग्य है कि गुरुदेव की रही कर्म भूमि और देवलोक गमन स्थली 'शाहपुरा' में मेरा वर्षावास प्रवास है। यहाँ अंतिम वर्षावास हो ये गुरुदेव की अंतिम भावना थी जो साकार भी हुई। गुरुदेव की पुण्यस्थली पर गुरुदेव के परमाणुओं को और निकटता से अनुभव कर रहा हूँ।

हे गुरु भगवंत! आपका आशीर्वाद हमेशा यू ही प्राणीमात्र पर बरसता रहे। ✧✧

खोलते पानी में जिस तरह
प्रतिबिम्ब नहीं देखा
जा सकता है,
ठीक उसी तरह
क्रोध की स्थिति में सच को नहीं
देखा जा सकता है।

वाणी के जादूगर थे - पू. प्रवर्तक श्री अमर मुनि जी

- पू. श्री वरुण मुनि म.

इस संसार में प्रतिदिन, प्रतिपल अनेकों प्राणी जन्म लेते हैं। परंतु हर किसी को जीवन जीने का मकसद मिल ही जाए, यह भी आवश्क नहीं है। सही मायनों में जीवन जीने का मकसद क्या है? इस पर एक शायर ने बहुत सुंदर लिखा है:-

काश! हम फूलों से पूछें, मुद्दाआ-ए-जिंदगी जो महकते भी हैं और गुलशन को महकाते भी हैं।।

ऐसा ही मकहता हुआ व्यक्तित्व था - श्रुताचार्य पू. प्र. महाश्रमण गुरुदेव श्री अमर मुनि जी म. का जो न केवल स्वयं महके अपितु अपने माता-पिता, अपने दीक्षा व शिक्षा गुरु एवं जिन शासन व जिनवाणी को भी जिन्होंने अपनी वाणी तथा व्यक्तित्व से पूरे भारतवर्ष एवं देश-विदेशों में भी महकाया।

यूं तो गुरु सेवा, गुरुभक्ति, अनुशासन, स्पष्टवादिता, समय की पाबंदी कुशल नेतृत्व कला, ओजस्वी-तेजस्वी जीवनशैली आदि अनेकों सद्गुण पूज्य गुरुदेव के जीवन में थे, परंतु यहां मैं कुछ निवेदन करना चाहूंगा - पूज्य गुरुदेव की वक्तृत्व कला के संदर्भ में। अपने युग के वे महान युगांतकारी धर्म प्रवक्त थे। उनकी वाणी में ऐसी चुम्बकीय कशिश थी कि श्रद्धालु श्रोतागण स्वतः ही खिंचे चले आते थे। पूज्य गुरुदेव के ज्ञान की गहराई व साधना की ऊंचाई से निःसृत वह अमृतवाणी एक अनूठा ही दिव्य प्रभाव सुनने वालों के मन-मस्तिष्क पर छोड़ती थी कि उनका जीवन ही रुपांतरित हो जाता था। मैंने स्वयं अपनी आँखों से कितने ही लोगों को देखा, जो एक बार गुरुदेव का व्याख्यान सुन लेते, वे उस दरबार से जीवन निखार कर जाते। कारण कि वे केवल जुबान से नहीं बल्कि स्वयं से साधना मय जीवन से बोलते थे। उनके प्रवचन की एक और विशेषता थी कि वे जाति, धर्म, वर्ण, लिंग आदि भेदभाव की दीवारों से ऊपर उठकर बोलते थे। परिणाम स्वरुप जैनों के साथ-साथ अन्य अनेक धर्मावलम्बी भी बड़ी संख्या में उनके प्रवचन सभाओं में बड़े चाव और भाव से पहुंचते थे। जब गुरुदेव प्रवचन प्रारंभ करते, उनकी मिश्री जैसी मीठी वाणी श्रोताओं को ऐसा मंत्र-मुग्ध करती कि अक्सर समय का ध्यान ही नहीं रहता था परंतु पूज्य गुरुदेव समय का स्वयं ही ध्यान रखते। उनकी समय की पाबंदी (पंक्चूअल्टी) प्रवचन कला के साथ-साथ मणि कांचन योग की तरह से थी। वे स्वयं ही प्रवचन समय से पन्द्रह मिनट पूर्व, सभा में पधार जाते।

उनकी वाणी इतनी सरल, सरसल और स्पष्ट होती थी कि बड़ी सहता के साथ हर एक दिल में उतर जाती थी। चाहे बच्चे हों या युवा, प्रौढ़ हो, वृद्ध उच्च वर्गीय हों या निम्न, जैन हों या अजैन, शिक्षित हों या अशिक्षित, गुरुदेव की वाणी सुनकर हर किसी का मन मयूर ऐसे झूम उठता, मानो गुरुदेव का व्याख्यान बस उन्हीं के लिए है।

प्रवचन प्रारंभ करने से पूर्व उनका एक ही संक्षिप्त सा वाक्य होता 'गुरु कृपा से...' और उनकी इसी गुरु भक्ति ने उन्हें भूषण, वाणी के जादूगर, सरस्वती पुत्र, श्रुतवारिधी के रुप में अलंकृत किया, ऐसे अमर आगम उद्गाता पूज्य अमर गुरुदेव की अमरवाणी भक्तों की हृदय वीणा पर सदैव झंकृत होती रहे और वे नाम के अनुरुप सदैव श्रद्धालु भक्तगणें के मन मन्दिर के अमर देवता के रुप में अमर युगपुरुष की तरह प्रतिष्ठित रहेंगे। ✧✧

पँच निश्रा स्थान

- आगमवेत्ता साध्वी पू. श्री वैभवश्री 'आत्मा' म.

आप्त पुरुषों की वाणी को सुन-समझ कर उसे सूत्र रुप गुम्फित करने वाले सत्पुरुषों को प्रणाम!!

सूत्रों की रचना से महान् अर्थ संक्षिप्त में प्रगट होते हैं और उनकी विवेचना से पुनः वे युगानुकूल समझ देने में सक्षम हो पाते हैं। इस आलेख में हम बात कर रहे हैं- स्थानांगसूत्र के पंचम स्थान में आए 'निश्रासूत्र' की। सूत्र पाठ इस प्रकार है-

धम्मस्स णं चरमाणस्स पंच ठाणा निस्सिया पण्णत्ता- छ काया, गणे, राया, धम्मायरिए, गाहावई।

सूत्रार्थ कहता है कि धर्म का आचरण करने वाले के लिए पाँच स्थानों के निश्राय अर्थात् आलम्बन बतलाए गए हैं-

1. छःकाय- छः कायं अर्थात् पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय। हम धर्माचरण करें अथवा न करें, जीवन जीने मात्र के लिए ये छः काय आलंबन रुप है, न केवल इनका आलंबन बल्कि इनका आधार न हो तो जीवन मात्र ही अशक्य है। असंभव है। इन छहों का प्रतिपल आभार है, जिनके सहयोग से हम सतत् गतिमान है। धरती मातृवत् उपकारी है, आधार देती है, सहिष्णु है। पानी बहनवत् उपकारी है, प्यास बुझाता है, जीवन देता है, हर अशुद्धि को बहा ले जाता है। 'अग्नि' (तेजस्काय) भाई के समान तेजस्वी है, प्राण रक्षक है, पाचन योग्य सामग्री बनाता है। वायु मित्रवत् उपकारी है, श्वास आधार है, शीत-उष्ण स्पर्श द्वारा जीवन रक्षित करता है। 'वनस्पति' पितश्वत् उपकारी है, वह हमें प्राणवायु, औषध-भोजन, वस्त्र-पात्र, ईंधन सामान, फूल-फल, सुगंधि, छाया आदि देता है। त्रसकाय में समस्त तिर्यन्च पशु-पक्षी, कीट-पतंगे, इंसान, देव-नारक सभी प्राणी समाहित है, जो हमारे चारों ओर है। हमें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रुप से अनंत जीव सतत् सहयोगी हैं। हम इन सबके आधार व आलंबन से अपना जीवन जीते हैं। क्यों न हम सबके उपकारों के लिए सतत् आभारमय रहें, धन्यवादी रहें, सबके प्रति कृतज्ञ होकर मंगल कामना करते रहें कि 'आप सबका कल्याण हो। मंगल हो। सभी को इष्ट सिद्धि हो। प्राण धारण करने में सहयोगी समस्त प्राणियों के प्राणों का उर्ध्वगमन हो।'

ये छः ही काय निरपेक्ष रुप से सबके सहयोगी है। कोई इनकी value करे अथवा न करे, इनको Thanks दे या न दे-ये तो सबको सहयोग करते ही हैं, बस फर्क इतना ही है, जो कोई इनके प्रति Thankful होता है, वो अपना मार्ग सकारात्मक व सहयोगपरक बना लेता है। आत्मज्ञानी पू. श्री विराट गुरुजी के गहन ध्यान से 'शट्काय आभार मंत्र' रचना प्रगट हुई, जिसे स्वयं आप्त पुरुषों ने अनुभव की और करवाई। यह शट्काय आभार प्रार्थना 'शुभ प्रभात' पुस्तक में है, साथ ही संक्षिप्त शैली में रचित लघु प्रार्थना यहाँ भी प्रस्तुत की जा रही है।

पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु को धन्यवाद
हरितक को धन्यवाद, त्रस प्राणी धन्यवाद।।
सबका सहयोग मिला, आनन्द का भोग मिला
दिल में उजास खिला, सुन्दर-सा आज मिला।
दानी उत्साह के, गुरुवर को धन्यवाद।।
प्यारे माता-पिता, प्यारी संतान हो
बढ़िया हमदम रहे, सभ्यों में शान हो।
प्यारा पड़ौस हो, परिजन को धन्यवाद।।
सबमें सद्भाव हो, प्रेमी स्वभाव हो
दिल में भाई-सखा के, बढ़-बढ़ के प्यार हो,
सबके कल्याण के भावों को धन्यवाद।।

2. गण- गण अर्थात् समूह (group)। धर्माचरण करने वाले को गण की निश्रा होती है। सूत्रकार ऐसा कहते हुए गण अर्थात् संघ की महिमा प्रगट कर रहे हैं। वे जानते हैं कि साधक कई प्रकार के होते हैं। जो शैक्ष है, प्रारम्भिक साधक है, वह बिना सहयोगों के

गति नहीं कर पाएगा। अतः उसके लिए गण प्रबल सहायक है। गण, संघ, परिवार, गच्छ या समुदाय-ये सब एकार्थक है। गण का कार्य परस्पर सहयोग भाव से जीना, एक-दूसरे के रिक्त स्थानों की पूर्ति करना, दोष परिहार साधना में प्रेरक बनना व गुणग्राम द्वारा योग्यताओं को निखारना है। हरेक साधक में कच्चावट तो है ही। किसी में क्रोध अधिक है तो किसी में लोभ, किसी में आलस बहुल है तो किसी में अधैर्य-ऐसे में सबके दोषों, कमज़ोरियों को और सबमें रहे सद्गुणों को, योग्यताओं को स्वीकार भाव से, सहज भाव से लेकर चलना गण या संघ का कार्य है। गण किसी भी प्रकार की प्रतिस्पर्धा, तुलना या पक्षपात न करते हुए हर साधक को आत्म-विकास के अवसर देता है, अतः उसका हम पर उपकार है, हम उसके आभारी रहें। साथ ही अपना सकारात्मक सहयोग देने से भी कभी न चूकें।

3. राया- राया अर्थात् राजा। आज के युग में सरकार व शासन व्यवस्था, प्रत्येक साधक को प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्ष रुप से सहयोगी तो है ही। सरकारी तंत्र सुव्यवस्थित चलता है तो ग्राम, नगर, गली-मौहल्ला, शहरवासी सभी अपने-अपने विकास के भरपूर अवसर प्राप्त करते हैं अन्यथा युद्ध आदि के दौर में सभी लोग पीड़ित व प्रभावित हो जाते हैं। हम महसूस करें कि प्रत्येक तंत्र हमारे जीवनचर्या के लिए आलंबन रुप है। सही सड़कों का निर्माण पदयात्रा कर रहे साधक को राज्यव्यवस्था की ही देन है। ऐसे अनगिनत सहयोगों के लिए 'राजा' के प्रति भी साधक को आभारी होना कल्पनीय है। राजा के प्रति साधु का दुआ भरा आशीर्वाद साधु समाज को राज्य का हितैषी व सच्चा मार्गदर्शक बनाता है।

4. धम्मायरिए-धम्मायरिए अर्थात् धर्माचार्य, जो कि गण का व्यवस्थापक होता है, संघ का अधिपति होता है, आचार व्यवस्था का प्रतिपादक होता है। उसकी निश्रा में ही एक साधक आत्म साधना करता हुआ आध्यात्मिक उत्कर्ष को प्राप्त कर पाता है। धर्माचार्य की भूमिका एक परिवार में पिता की भूमिका के तुल्य होती है। जिस प्रकार पिता अपनी सभी संतान का संरक्षक होता है, आवश्यकताओं की पूर्ति करता है, बिना भेदभाव किए सबका पालन-पोषण करता है, सबको योग्य बना कर उनको अपनी योग्यताओं के संपादन हेतु उचित कार्यक्षेत्र में नियोजित करता है, ठीक इसी तरह संघाचार्य प्रत्येक साधु-साध्वी के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक विकास हेतु सतत् उद्यमरत रहता है, व्यवस्थाएँ जुटाता है व उनको उचित मार्गदर्शन देकर गतिमान करता है। ऐसे धर्माचार्य की आज्ञा में रहना संघस्थ साधकों का अपना विनय व आदर भाव है, जो उनकी आत्मिक उन्नति में सहायक है। धर्माचार्य, एक नाविक एवं ड्राईवर की भाँति है, जो अपनी नाव एवं अपनी गाड़ी में बैठे समस्त यात्रियों को भली-भाँति यात्रा तय करवाता है, उन सबको अपनी-अपनी मंज़िल तक पहुँचाने में सहायक बनता है। अगर गाड़ी का चालक दुर्घटना कर बैठे तो सबकी जान जाएगी, इसीलिए धर्माचार्य की ज़िम्मेदारी बहुत अधिक है। वह सुरक्षित यात्रा कराने की ज़िम्मेदारी लेता है। वह सबको अपनी जोखिम खुद संभालने को कहता है, सबको सजग बनाता है और खुद उन सबकी ज़िम्मेदारी चुपचाप वहन कर लेता है। अतः धर्माचार्य की भूमिका प्रत्येक को बहुत प्रभावित करती है। प्रत्येक साधक के लिए धर्माचार्य एक सुरक्षा का परकोटा है, जिसका आलम्बन लेकर वह अपना विकास करता है।

5. गाहावई-गाथापति अर्थात् गृहस्थ। साधु या साधक, जो अध्यात्म पथ का पथिक है, उसे दैहिक यात्रा के लिए गृहस्थ का सहयोग तो सतत् लेना ही होता है। आहार, विहार आदि समस्त चर्याएँ गृहस्थों के सहयोग से ही संभव हो पाती है। अतः साधु को गाथापति का भी आलंबन है, यह बात ध्यान में रखते हुए गृहस्थ का भी आभारी होना, उसके निर्दोष सुख व आत्मिक कल्याण के लिए दुआ करना, आशीष देना। उसका तिरस्कार, अपमान या उपेक्षा न करना। आप धर्माचारी हो या नहीं, यदि अपने लिए सहयोगी प्रत्येक निमित्त के प्रति कृतज्ञ हैं तो अवश्य ही आपका आचरण धर्ममय ही कहा जाएगा। इत्यलम्!! ✧✧

ऐसे होते हैं असफल लोग

- अविनाश चोरडिया जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

हम किन आदतों को अपनाकर सफल बन सकते हैं इसके बारे में तो हर कोई पढ़ना चाहता है लेकिन हमारी कैसी आदतें हमें असफल बना रही हैं, क्यों ना आज इस विषय पर जानकारी बटोरी जाए!

असफल लोगों के लक्षणः- एक शोध के बाद उन दस बड़े प्वाइंट्स को एकत्रित किया गया है जो हमारी लाइफ की आदत बन चुके हैं, यह हमारी बुरी आदतें ही नहीं बल्कि हमारे स्वभाव का हिस्सा बन चुके हैं। लेकिन अफसोस इस बात का है कि चाहकर भी हम इन्हें छोड़ नहीं पाते और धीरे-धीरे ये हमें असफलता की ओर ले जा रहे हैं।

कोई प्लानिंग नहीं:- एक असफल व्यक्ति की सबसे बड़ी बुरी आदत या यूं कहें कि सबसे बड़ी कमजोरी यह है कि वह बिना प्लानिंग के काम करता है। ऑफिस का कोई नया प्रोजेक्ट शुरु करना हो, शिक्षा के क्षेत्र में कुछ नया करने जा रहे हों या फिर कहीं ट्रिप के लिए ही क्यों ना निकल रहे हों, ये लोग बस निकल पड़ते हैं, वो भी बिना प्लानिंग के।

सफल और असफल लोगः- इन लोगों को लगता है कि सबकुछ बस यूं ही हो जाएगा, ये हर परिस्थिति को अपने कंट्रोल में कर लेंगे, लेकिन इनकी यही सोच इन्हें अपने साथ ले डूबती है।

नो रेकार्डः- असफल लोग कभी किसी प्रकार का कोई रेकार्ड बनाकर नहीं रखते हैं। क्या किया है, क्या करना है और किस काम से कब सफलता मिली था या नहीं मिली थी, अगर इसका लेखा-जोखा हमारे पास हो तो हम भविष्य के नुकसानों से बच सकते हैं।

इनका बिहेवियरः- असफल लोग आसानी से डिस्टर्ब हो जाते हैं, यानि किसी भी छोटी-सी बात पर गुस्सा होना या चिड़ जाना इनकी निशानी होती है।

सकारात्मकता की कमीः- सफल होने के लिए हमेशा पॉजिटिव बिहेवियर बनाए रखना बहुत जरुरी है, लेकिन इस पॉजिटिव व्यवहार का 0.001 प्रतिशत भी असफल लोगों में नहीं होता। इनकी हर बात में नकारात्मकता भरी होती है। खुद के लिए समय ना निकालने वाले लोग वे लोग जो कभी अपने लिए टाइम नहीं निकालते, खुद की ख्सुही या फन के लिए नहीं सोचते, ऐसे लोग ही असफल होते हैं।

वीकेंड एंज्वाय नहीं करतेः- असफल लोगों का हर दिन एक जैसा होता है, बोरिंग...वीकेंड में भी ये खुद के लिए या अपने परिवार के लिए समय नहीं निकालते। क्या करना है पहले, नहीं जानते- अंग्रेजी का एक प्रसिद्ध शब्द है **'प्रायोरिटी'**, अर्थात् कौन सा काम महत्ता के हिसाब से करना है वह सोच लेना। लेकिन असफल लोग बस आँख मूंदकर काम करते हैं, वक्त की नजाकत को नहीं समझते। बिना उद्देश्य के काम करते हैं। कुछ भी काम करने से पहले उसे पूरा करने का निर्धारित समय, तरीका या कितनी उपलब्धी चाहिए, यह सब असफल लोग कतहि नहीं सोचते हैं।

डरपोकः- ये लोग डरते हैं हार से, इसलिए नए एक्सपेरिमेंट करना पसंद ही नहीं करते। बस जिस काम में इन्हें सफलता हासिल हो सकती है उसे ही करना पसंद करते हैं।

कामचोरः- असफल लोग तब सबसे अधिक कामचोरी दिखाते हैं जब काम उनके मन मुताबिक ना हो। इसका कोई भी कारण हो सकता है, अगर उन्हें काम नहीं करना है तो वे उसे टालते चले जाएंगे।

सुधार लें अपनी ये आदतें:- अगर बताए गए दस प्वाइंट्स में से कोई भी एक, दो या इससे भी अधिक प्वाइंत्स आपको अपने भीतर दिखें तो इन्हें जल्द से जल्द सुधार लें। क्योंकि ये कब आपके और आपकी सफलता के बीच दीवार बन खड़े हो जाएंगे आपको पता भी नहीं चलेगा और सफलता की ट्रेन छूट जाएगी। ✧✧

भव अवतारी पू. आचार्य श्री जयमल जी म.

– **ओंकार सिंह सिरोया जैन,** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

पू. आचार्य श्री जयमल जी म. के जन्म के समय भारतीय जीवन में उथल-पुथल मची हुई थी, भारतीय राजाओं के पारस्परिक युद्धों के कारण चारों ओर अराजकता और अशांति का वातावरण बना हुआ था। यति वर्ण भी अपने कर्त्तव्य पथ से च्यूत होकर आकांक्षापूर्ति हेतु बाह्य आड़म्बर और जनता को धर्म के नाम पर गुमराह रहे थे। ऐसी विषमता की घड़ी में एक भव अवतारी आचार्य पू. श्री जयमल जी म. जोधपुर संभाग के मेड़ता जैतरण जाने वाले मार्ग ग्राम लाम्बीया में कामदार श्री मोहनलाल जी मेहता (समदड़िया) माता श्रीमती महिला देवी की कुक्षी से वि.स. 1765 भादवा शुक्ला त्रयोदशी का जन्म हुआ व आपका जन्म नाम जयमल रखा गया।

जयमल जी बाल्यकाल से ही बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी लग्न, कार्यक्षमता अद्भुत थी। ओजस्वी, तेजयुक्त, उनका व्यक्तित्व अमिट छाप छोड़ने वाला था। 22 वर्ष की आयु में आपका विवाह लक्ष्मीदेवी से हुआ जो रीवा निवासी कामदार शिवकरण मुथा की पुत्री थी। सुन्दरता के साथ-साथ शालीनता, विनम्रता एवं प्रतिव्रता में लक्ष्मी, वास्तव में लक्ष्मी जैसी ही थी। विवाह हो चुका था, गौना बाकी था। इसी दौरान आप व्यापार के लिये मेड़ता आ गये। कार्तिक पूर्णिमा का दिन था वहां चातुर्मास समाप्त होने जा रहा था। मेड़ता बाजार बन्द था। जानकारी से मालूम पड़ा कि सभी लोग आचार्यश्री भूधर जी म. का प्रवचन सुनने के लिये स्थानक में गए हुए हैं। आप भी मित्रों के साथ प्रवचन में पहुंच गए। पू. श्री भूधर जी म. सेठ सुदर्शन जी का जीवन वृत सुना रहे थे। सेठ को मायाजाल से भोग वासना में फंसाने का कैसे अथक प्रयास किया वह सेठ सुदर्शन अपने वृत में कैसे सुदृढ़ रहना है।

आचार्यश्री जी ने ब्रह्मचर्य पर प्रभावी उद्बोधन दिया। इस प्रवचन को सुनने जयमल जी का हृदय परिवर्तन हो गया। भरी सभा में खड़े होकर आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर लिया, व्रत को सुदृढ़ता से पालन के लिये संयमी जीवन व्यतीत करने का निश्चय कर लिया। आचार्य पू. श्री जयमल जी म. ने विक्रम संवत् 1788 मगसर वदी दूज गुरुवार को मेड़ता में आचार्य श्री भूधर जी म. के चरणों में भगवती दीक्षा अंगीकार कर ली। लक्ष्मीबाई ने भी गुरुवर के चरणों में जाकर संयम अंगीकर कर लिया। श्रमण जीवन की दहलीज पर कदम रखते ही उन्होंने एकान्तर तप की उग्र साधना का नियम ले लिया, जिसको 16 वर्ष तक करते रहे। साथ ही पारणे में पाँच बड़ी तिथियों को लिया। पाँच विग्रह का त्याग रखते थे। इसके अतिरिक्त आपने 16 वर्ष तक बेले-बेले की तपस्या की, दो वर्ष तक तेले-तेले पारणा किया। 20 मास श्रमण, 10-15 दिन तपस्या, 40 अठाईया, 60 दिवस अभिग्रह युक्त तपस्या वर्धमान आयम्बिल तप आत्मा को तपाकर कुंदन बनने में निमग्न रहते थे।

आचार्य श्रीजी ने उस समय की सभी चुनौतियों को स्वीकार कर यतियों से चर्चा करके उन्हें परास्त किया और पिपाड़, जोधपुर, बीकानेर, नागौर, जैसलमेर, सांचोर, बाड़मेर, जालौर आदि क्षेत्रों को हमेशा के लिये संयम भोगियों के लिये खोल दिया। उन्होंने जिस वर्ष दीक्षा ग्रहण की उसी वर्ष चातुर्मास में पाँच आगमों को कंठस्थ एक प्रहर (तीन घंटे) में प्रथम वर्षवास में कुल 11 आगमों को कंठस्थ किया। आपने मात्र तीन वर्षों में 32 आगमों के साथ-साथ अनेक अन्य ग्रंथों को कंठस्थ कर लिया।

पू. आचार्य श्री 'भूधरजी' में के देवलोक वास पर आपने प्रतीक्षा ली कि आज से जीवन पर्यन्त लेटकर नींद नहीं लूंगा। यह आपने 52 वर्ष जीवन के अंतिम क्षण तक निभाया। आपने 700 भव्य आत्माओं को दीक्षा मंत्र प्रदान किया। आचार्य पू. श्री जयमल जी म. संयम सुमेरु के साथ ही आशु कवि, बहुश्रुत, समाज सुधारक भी थे। आपने अनेक राजा-महाराजाओं, नबाबों, ठाकुरों, जागीरदारों की व्यसनों का त्याग कराया। जगह-जगह होने वाले पशुबली, नरबली, दासी प्रथा, सती प्रथा आदि को बंद करवाया। विक्रम सम्वत् 1853 चैत्र शुक्ला पूर्णिमा के दिन 88 वर्ष की आयु में आपश्री ने चतुरविद संघ के सम्मुख नागौर में संथारा ग्रहण कर लिया। आपकी 309 जन्म जयंती पर श्रद्धासुमन अपर्ण करते हैं। आपका संघ व समाज पर आर्शीवाद बना रहे यही प्रार्थना करते हैं।

✧✧

वचन सिद्धयोगी 'श्रमण सूर्य मरुधर केसरी मिश्रीमल जी म.

- अशोक कुमार धोका जैन, राष्ट्रीय मंत्री, ज्ञान प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

वचन सिद्ध योगी, बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी, श्रद्धा के केन्द्र, दया के देवता, सन्मार्ग दर्शक, श्रमण संघ की ठाना, संगठन प्रेमी, महाउपकारी आस्था के आयाम, महान आशुकवि, श्रमण संघीय प्रवर्तक, श्रमण सूर्य मरुधर केसरी, पूज्य गुरुदेव, श्री मिश्रीमल जी म. के नाम का स्मरण करने मात्र से मन मे शुद्ध एवं पवित्र भाव प्रवाहित हो जाते हैं। ऐसे महान संत की जन्म जयंती एवं दीक्षा शताब्दी वर्ष सन 2017-2018 के पावन प्रसंग पर आप और हम सभी मिलकर भव्य आत्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

हमारा श्रद्धांजलि देना तभी सार्थक होगा जब हम गुरु भगवंत के गुणों के गुणग्राह्मी बने। जीवन में उनके बताये सन्मार्ग का अनसरण करें औपचारिकता नहीं अनुष्ठान करें। पूज्य गुरुदेव के अरमान इस प्रकार थेः-

नशा मुक्त संसार होः- आपका ध्येय रहता था कि कोई भी व्यक्ति नशा नहीं करे। आपके प्रवचनों से ओत-प्रोत होकर जैन जैनेत्तर नशा मुक्ति की ओर सहज भाव से अग्रसर होकर प्रतिज्ञा लेते थे। एक-एक व्यक्ति से समान और समाज से संसार को नशा मुक्त आपका लक्ष्य था। आपने व्यसनों के दुष्परिणाम बताते हुए कहा कि : **1. जुआ लोभ का बच्चा है। 2. माँस मनुष्यों का नहीं राक्षसों का भोजन है। 3. शराब की एक-एक बूंद जहर की बूंद है। 4. वेश्या वृति स्त्री जाति का कलंक एवं पुरुष का कोढ़ है। 5. शिकार मनुष्य का जंगलीपन है। 6. ब्रह्मचर्य की साधना सोना है। 7. चोरी मानसिक रुप से दुर्बल एवं आत्म ग्लानि की निशानी है।**

स्वस्थ्य समाज होः- आत्म कल्याण के साथ लोक कल्याण के सतत प्रहरी एवं हिमायती मुनिश्री अपने उपदेश, संदेश एवं प्रेरणा से अनेक स्थानों पर शिक्षा, चिकित्सा और साधर्मी वात्सल्य के क्षेत्र में कई संस्थाओं का निर्माण हुआ जिसका उपयोग आज जैन जैनेत्तर समाज कर रहे हैं।

संघ समाज में संगठन एवं प्रेमः- आपश्री समाज में संगठन एवं एकता के बड़े पक्षधर सदैव ही रहे। सम्प्रदायवाद के विरोधी थे- अन्य सम्प्रदाय को शरीर का अलग-अलग अंग मानते थे। आपका मानना था हर सम्प्रदाय में कोई न कोई विशेषता होती है और हमें उसको ग्रहण करनी है संगठन प्रेम की खातिर आपको कभी पद लोलुपता नहीं रही। श्रमण संघ के निर्माण में आपकी सोच 'मील का पत्थर' साबित हुई। आपके दृढ़ संकल्प से ही आज वटवृक्ष रुपी 'श्रमण संघ' का संगठन हमारे लिये वरदान साबित हुआ है।

सादा जीवन उच्च विचार के हिमायतीः आपका जीवन सादगी की प्रतिमूर्ति था। आज के चकाचौंध वाले कार्यक्रमों के विपरीत आपकी सादगीमय ढंग से सोजत सिटी में एक वटवृक्ष के नीचे पूज्य गुरुदेव बुधमल जी म. की पावन निश्रा में हुई। आपका जीवन हर पल एवं हर पहलू से सादगीमय था। आप सदैव खादी ही पहनते थे। आप संदेश देते थे कि मनुष्य सात्विक एवं सुसंस्कारी बनकर कही भी सुखी, समृद्ध एवं सफल हो सकता है।

पूज्यश्री जैसे मुर्धन्य संत जिनकी वचन सिद्धि के बारे में हर व्यक्ति जानता है। आपका जन्म पाली की धन्य धरा पर हुआ एवं दीक्षा संवत् 2075 'अक्षीय तृतीया' वैसाख सुदी 3 को सोजत सिटी में हुई। जिसे 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं। अतः हमारा कर्त्तव्य, धम्र एवं जिम्मेवारी बनती है ऐसे महान संत की दीक्षा शताब्दी वर्ष सन 2017-18 को आध्यात्मिक एवं सामाजिक कार्यक्रम आयोजित कर गुरुजनों में अर्ध्य देने एवं कृतज्ञता पूर्वक गुरुदेव के बताये मार्ग पर अग्रसर होकर जीवन को सफल बनाये।

(शेष पृष्ठ संख्या 00 पर...)

धर्म क्या है?

– शेर सिंह जैन, रोहिणी, नई दिल्ली

एक ऋषि थे, वे गंगा स्थान करके अपने आश्रम की ओर जा रहे थे। रास्ते में उन्हें एक शुद्र मिल गया, वह चाण्डाल था। ऋषि कुछ पीछे हट गये और चाण्डाल से कहने लगे- पीछे हटो, पीछे हटो।

चाण्डाल ने बड़े मार्मिक स्वरों में ऋषि से कहा- आप धर्माचार्य हैं, धर्म की लम्बी चौड़ी व्याख्याएं भी करते हैं और लोगों को धर्म के बड़े-बड़े उपदेश देते हैं। आप गंगा स्नान करके आ रहे हैं। मुझे आपने पीछे हट जाने को कहा। मैं हट जाता हूँ और आपसे दूर चला जाता हूं। लेकिन जो धरती मेरे पांव के नीचे है वही धरती आपके पैरों के नीचे है। भगवन्! आप तो आचार्य हैं, शिक्षक व उपदेशक हैं, ज्ञानी व धार्मिक हैं और मैं दुर्भाग्य से शुद्र जाति में पैदा हुआ हूं तथा चाण्डाल समझा जाता हूं। आपके चरण से सारी पृथ्वी पवित्र हो गयी है। शायद मैं इसीलिए इस पृथ्वी पर विचरण कर रहा हूं कि जो पृथ्वी आपके स्पर्श से पावन हो गयी है, उसके स्पर्श से शायद मैं भी पावन हो जाऊं। नहीं तो आप बताईये मैं कहां जाऊं?

चाण्डाल ने आगे कहा, आप मेरी छाया से भी घृणा करते हैं, लेकिन जब आप वेदांत की व्याख्याएं करते हैं और दुनिया को समझाते हैं कि **'एको ब्रह्म द्वितीयों नास्ति'** यानि इस धरती पर एक ही ब्रह्म है, वह ही ब्रह्म ब्राह्मण में हैं, वह ही क्षत्रिय में है, वह ही वैश्य और शूद्र में हैं। वह ही गरीब और अमीर में, वह ही सन्यासी और गृहस्थी में, वह ही नारी में है वह ही पुरुष में है। अत्र-तत्र-सर्वत्र वही है।

इसी प्रकार जब एक ब्रह्म सर्वत्र व्याप्त है तो में आपसे पूछना चाहता हूं कि जब कोई अन्य तत्व है ही नहीं तो फिर मैं चाण्डाल और आप ब्राह्मण - ये दो तत्व शब्द कहा से हो गये? आपने मेरी जाति को, मेरे शरीर तथा मेरे जन्म से ही देखा है, किन्तु आपने मुझे ब्रह्म के नेत्रों से नहीं देखा। इसीलिए मैं आपको चाण्डाल नज़र आने लगा हूं?

सुनकर ऋषि सोच में पड़ गये। धार्मिक अनुष्ठान तब तक आपकी शुद्धि नहीं कर सकते, जब तक कि विवेक न हो। हमें साम्प्रदायों को ही धर्म नहीं समझ लेना चाहिए।

धर्म वह होता है जो मन की शुद्धि करता है, आत्मा को शांति देता है, जीवन का निर्माण करता है, विकारों को शांत करता है, और अंत में सद्गतिप्रदान करता है। ऐसे तत्व को हम धर्म कहते हैं। ✧✧

अगर आपको जैन प्रकाश पत्रिका नहीं मिल रहा है तो कृपया ध्यान दें

1. **आपने आजीवन सदस्यता फार्म पर जो पता दिया था अगर वह बदल गया है तो उसकी सूचना केन्द्रीय कार्यालय को देवें।**
2. **आपको जैन कॉन्फ्रेंस का आई-कार्ड नहीं मिला है तो उसकी जानकारी हमें अवश्य देवें।**
3. **अगर आपके परिवार में एक से अधिक पत्रिका प्राप्त हो रही है तो इसकी सूचना भी हमें अवश्य देवें।**
4. **दिवंगत हुए आजीवन सदस्यों की जानकारी से भी अवगत कराएं।**

सम्पर्क करें : विनय द्विवेदी : 011-23363729
समय : प्रातः 11 से शाम 05 बजे तक
E-mail : aissjc1906@gmail.com

ध्यान ...

- रवि लोढ़ा जैन, महामंत्री, युवा शाखा, जैन कॉन्फ्रेंस

प्रार्थना और ध्यान इंसान के जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण है। प्रार्थना में भगवान इंसान की सुनता है और ध्यान में इंसान भगवान की सुनता है। आओ हम ध्यान के विषय में जानकारी लेते है। दुनिया में बहुत कम लोगों को ध्यान के बारे में जानकारी होती है। ध्यान की ज़रुरत सभी लोगों को होती है। ध्यान से हिंसा और मुढ़ता का खात्मा हो सकता है, ध्यान के अभ्यास से जागरुकता बढ़ती है, जागरुकता से हमें हमारी और लोगों की बुद्धिहीनता का पता चलने लगता है।

सभी व्यक्ति पूछते हैं ध्यान क्या है?

ध्यान है परदा हटाने की कला। वह पर्दा बाहर नहीं हमारे भीतर का है। वह पर्दा विचारों से बुना है, अच्छे विचार, बुरे विचार, इनके ताने-बाने से यह पर्दा बुना है। जैसे हम विचारों को छापने लगे हैं या हमारे आने वाले विचारों को ठहराने में रोकने में सफल हो जाऐंगे तभी हमारा ध्यान सफल होगा।

ध्यान का अर्थ है ऐसी कोई संधि भीतर जब तुम हो तो दुनिया भी है पर दोनों के बीच में विचार नहीं है उसे ध्यान कहते हैं

ध्यान कैसे करे?

ध्यान के लिए सुखासन या पद्माशन में बैठना चाहिए। बाद में अपना मुंह बंद कर शांत मन से बैठना चाहिए, ध्यान करते वक्त मिनट से तीस पैतीस मिनट का होना चाहिए। बाद में ध्यान में लगने के लिये साँस लेने और छोड़ने की क्रिया सही तरह करने पर, ध्यान को केन्द्रित करने से मदद मिलेगी। इसलिए जब भी आप का मन अस्थिर होकर होकर भटके तब श्वसन क्रिया पर ध्यान केन्द्रित करे, इसे आप का मन स्थिर हो जायेगा और ध्यान केन्द्रित होने लगेगा।

ध्यान करते समय और गहरी साँस लेकर धीरे-धीरे छोड़ने से बहुत लाभ मिलता है।

ध्यानः- उन्नति के शिखर पर चढ़ने के लिए सम्यक ध्यान। नित्य सम्यक ध्यान करने से लाभ।

1. मन और बुद्धि में पवित्रता आ जाती है।
2. निर्णय लेने की शक्ति।
3. विषय विकार समाप्त हो जाते हैं।
4. राग, द्वेष, ईर्ष्या समाप्त हो जाती है।
5. विचार शरीर में मोह टूटता है।
6. संवेदनशीलता का बढ़ना।
7. भावनाओं पर संयम बढ़ना।
8. काम करने की क्षमता बढ़ना।
9. एकाग्रता व स्मरण शक्ति बढ़ना।
10. वर्तमान में जीना।
11. गंभीरता और धैर्यता के गुण बढ़ते हैं।
12. झूठ के द्वार बंद हो जाते है।
13. होश का जगना।
14. कार्य करने की शक्ति बढ़ना।
15. कर्म इंद्रियों पर नियंत्रण हो जाना।
16. समस्याओं को सुलझने की शक्ति बढ़ना।
17. मौन का आनंद लेना सीख जाना।
18. शरीर और मन को पूर्ण आराम और आरोग्य मिलता है।
19. वायुमंडल स्वच्छ हो जाता है, थकान का मिटना।
20. आंतरिक और बाहर दोनों और शांति, पवित्रता आती है।
21. करुणा भाव का प्रबल शक्तिशाली साधन है।
22. आत्मा का मेल मिटाने का पूरा साधन है।
23. हल्के बनने की स्टेज आ जाती है।
24. अज्ञानता समाप्त हो जाती है, त्रिकालदर्शी बन जाता है।
25. क्रोध करने वाले व्यक्ति उनके पास नहीं आ पाते, उन्हें देखकर ही शांति भाव मन में आ जाते हैं।

क्रमश...

पर पीड़ा सम नहीं अधमाई...

- डॉ. दिलीप धींग, चेन्नई (तमिलनाडु)

भारतवर्ष आस्थाओं से भरा देश है। भगवान गौतम/महावीर के इस देश में अनेक धर्मों के लोग निवास करते हैं। अलग-अलग भाषा, विभिन्न पहनावे। यहाँ प्रत्येक प्राणी किसी ना किसी के प्रति अपनी आस्था रखता है। सच ही कहा है कि कुछ तो है तेरी अस्ति जो दिखाई नहीं देती। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 29 जून 2017 को अहमदाबाद (गुजरात) में आयोजित एक समारोह में अपने भाषण में एक ऐसी घटना कह सुनाई जिसे सुनकर शायद सभी का मन उदास हो गया होगा। जो इस प्रकार हैः-

गाय का पश्चातापः-मेरे जीवन की एक सत्य घटना है। हमारे घर के सामने एक परिवार रहता था। शादी के कई वर्षों उनके यहां संतान हुई घर के सामने संकरी गली थी। यहां रोजाना सुबह-सुबह एक गाय गुजरती और सभी बड़ी श्रद्धा से उसे रोटियाँ खिलाते। एक दिन बच्चों ने पटाखे फोड़ दिये और गाय हड़बड़ाकर भागने लगी। हालात ऐसे बने कि बड़ी उम्र के दम्पत्ती का जो बच्चा मुश्किल से तीन-चार साल का था, वह गाय के पैरों तले कुचल गया और उसकी मृत्यु हो गई।

परिवार में दुःख का माहौल था। दूसरे दिन सुबह ही गाय उनके घर के सामने आकर खड़ी हो गई थी। उसने किसी भी घर के सामने जाकर रोटी नहीं खाई। जिसकी आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं। एक दिन, दो दिन, पाँच दिन से गाय न खाना खा रही ना ही पानी पी रही थी। कई दिनों तक उसने कुछ नहीं खाया पीया।

पीड़ित परिवार के लोग भी उसे खिलाने की कोशिश करते, लेकिन गाय ने संकल्प नहीं छोड़ा। उस बालक की मृत्यु के पश्चाताप में आखिरकार गाय ने अपना शरीर छोड़ दिया और देवलोकवासी हो गई। इस मार्मिक घटना को सुनाते हुए प्रधानमंत्री भावुक भी हो गये थे। इस घटना में अनेक तथ्य समाविष्ट हैं:-

1. पटाखे फोड़ने की अप्रत्याशित धमाकेदार तेज आवाज़ पशु-पक्षियों को अत्यंत भयभीत कर देती है।
2. मूक प्राणी भी शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक सुख-दुःख, प्रेम-पीड़ा का अनुभव करते हैं।
3. परिस्थितिवश अनजाने में हुई गलती का भी गाय को भारी पश्चाताप हुआ। गाय ने खाना-पीना छोड़ दिया, लेकिन अपना संकल्प नहीं छोड़ा, 'अनशन' नहीं तोड़ा।
4. अथाह दुःख में डूबे परिवार ने भी गाय को खिलाने-पिलाने का प्रयास किया, गाय से नफ़रत नहीं की।
5. गाय रोज की तरह गली में तो आई, लेकिन किसी से कुछ भी नहीं खाया-पीया। मानो वह रोटी खिलाने वालों के प्रति आभार जताने और सबके समक्ष अपने भूलवश हुए पाप का पश्चाताप करने ही वहाँ आई।
6. कर्मों की विडम्बना कैसी कि लम्बी प्रतीक्षा के बाद हुआ बेटा भी चल बसा। ये प्रेरणा के बिन्दु इंसान को काफी शिक्षाएं देते हैं। ✧✧

दूसरों को देखकर तुम्हें भी दुःख होता है तो समझ लो, भगवान ने तुम्हें इंसान बनाकर कोई गलती नहीं की।

क्षमा वीरस्य भूषणम्

- डॉ. प्रेमसुख सुराणा, अजमेर (राजस्थान)

जब तक अपनी छद्मस्थ अवस्था है, तक तक पुण्य के मान पाप भी संभव है, सुकर्म के समान दुष्कर्म भी संभव है। किन्तु ऐसे पाप तथा दुष्कर्मों की शुद्धि के लिए प्रायश्चित, आलोचना का विधान है। प्रायश्चित से वैसे ही पाप शुद्धि होती है जैसे कि आग में तपने पर सोना शुद्ध हो जाता है, उसका मैल दूर हो जाता है, परंतु आलोचना करने वाले पापभीरु आत्मा को महापुरुषों द्वारा कथित इस गाथा को सदा याद रखना चाहिए।

जब बोलो जंपंतो, कज्जवकज्जं च उज्जयं भवई।
तं तह आलोएज्जा, माया-मयविप्पमुक्को उ।।

अर्थात् बालक जिस प्रकार से बालक उचित या अनुचित कोई भी कार्य कर लेता है और बड़े सरल भाव से अपने पिता के सामने कह देता है, ठीक इसी प्रकार से साधक-श्रावक को भी गुरुजनों/सदगुरुदेवों के समक्ष दम्भ और अभिमान से रहित होकर यथार्थ आत्मालोचना करनी चाहिए। अभी चातुर्मास चल रहा है। पर्युषण पर्व में संवत्सरि महापर्व पर वर्षभर के समस्त पापों का प्रायश्चित सद् गुरुदेव के समक्ष करने पर वे कर्म निर्जरा का कारण बनते हैं। पापों का भार स्वतः कम हो जाता है। सद् गुरुदेव के समक्ष जब पाप प्रक्षालन हो जाता है तो आप स्वयं 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' के अधिकारी बन जाते हैं।

इस रीति से आत्मालोचना करने वाला व्यक्ति पापों के भार से वैसे ही हल्का हो जाता है जैसे कि सिर का भार उतार देने से भारवाहक। हमें भी आत्मा को हल्का बनाने के लिए प्रभु द्वारा निर्दिष्ट प्रायश्चित को स्वीकार करना चाहिए। इसके लिए हमें बालक के समान गुरुजनों के समक्ष सरलतापूर्वक पापों को प्रकट करने की तैयारी करनी चाहिए। पापशुद्धि के लिए हमारा भी वैसा ही मानस बने जैसा कि मंगलमूर्ति गणधर गौतम स्वामी जी का था। वाणिज्य ग्राम में शुद्ध आहार की गवेषणा (खोज) करते हुए गणधर गौतम स्वामी जी ने लोगों के मुख से श्रावक आनंद का अनशन व्रत विषयक वार्तालाप सुना, सुनकर गणधर श्रावक का मन वैसे ही खिल उठा जैसे की सूर्य को देखकर सूर्य विकासी कमल खिल उठता है। श्रावक आनंद ने भाव भरे दिल से वंदना की ओर बोलेः-

'महाराज! मुझे अवधिज्ञान हुआ है, इस अवधिज्ञान के माध्यम से मैं पूर्व-पश्चिम तथा दक्षिण दिशा में स्थित लवण समुद्र में पाँच-पाँच सौ सौजन और उत्तर में हिमवान पर्वत तक, अधोलोकवर्ती पहली नरक के लोलमच्युत नरकावास तक तथा ऊर्ध्वलोक में सौधर्म विमान तक देख सकता हूँ'।

इस बात को सुनकर गणधर गौतम स्वामी जी ने कहा 'आनंद! गृहस्थ को अवधिज्ञान अवश्य हो सकता है परंतु जितना क्षेत्र मर्यादा तुम बना रहे हो उतने क्षेत्र तक का अवधि ज्ञान श्रावक को संभव नहीं। अतः आनंद! इस अनशन व्रत में असत्य बोलने स्वरुप इस पाप की आलोचना करो, इसके लिये प्रतिक्रमण करो, इस पाप की निदा करो और गर्हा करो और प्रायश्चित स्वरुप यथोचित तप-कर्म को स्वीकार करो।

यह सुनकर आनंद सकुचाते हुए विनीत वचनों से बोला- भंते! जिनप्रवचन में प्रायश्चित का विधान सत्य तथ्य, यथार्थ भाव कहने वाले के लिए है या फिर विपरीत मिथ्या करने वाले के लिए? गणधर भगवंत जी ने सरलतापूर्वक इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा 'जिनप्रवचन में प्रायश्चित का विधान मिथ्या

कथन करने वाले के लिए है, सत्य यथार्थवादी के लिये नहीं।

तो भगवन! आप ही मिथ्या कथन के लिए आलोचना, प्रतिक्रमण, निंदा, गर्हा व यथोचित प्रायश्चित को स्वीकार करें। आनंद श्रावक ने कहा।

यह सुनकर गणधर गौतम जी मन में शंका व जिज्ञासा को समेटे परमात्मा भगवन् प्रभु श्री महावीर स्वामी के पास पहुंचे। गोचरी की आलोचना करने के बाद गणधर जी ने आनंद के साथ हुई बातचीत प्रभु को बताई व हम दोनों में से प्रायश्चित का अधिकारी कौन है? इस विषय में जिज्ञासा प्रकट की। परमात्मा बोले, गौतम! आनंद की बात सत्य है। प्रायश्चित के अधिकारी तुक हो। तुम आनंद के पास जाओ और उनसे क्षमा मांग कर आओ।

यह सुनते ही गणधर गौतम स्वामी जी तुरंत आनंद श्रावक के पास गए उन्होंने उनसे सरलतापूर्वक क्षमायाचना की तथा दुष्कृत के लिये आलोचना, प्रतिक्रमण, निंदा गर्हा व यथोचित प्रायश्चित स्वीकार किया। ऐसा क्ष्ज्ञमा का उदाहरण पूरे विश्व में कहीं पर भी नहीं मिल सकता। यही वास्तव में **'क्षमा वीरस्य भूषणम्'**।

भाग्यशालियो! प्रतिक्रमण, निंदा गर्हा व आलोचना करने के लिए चाहिए मात्र सरलता, विनम्रता व परमात्म आज्ञा के प्रति सम्पूर्ण समर्पण भाव। ये सब तत्व हमें गणधर गौतम स्वामीजी में परिलक्षित होते हैं। गणधर भगवंत ने ज्योंहीं प्रभु महावीर के मुख से सुना कि आनंद का कथन सत्य है और तुम उससे क्षमा मांगो, त्योंही 14000 शिष्यों के स्वामी जी मांगने के लिय चल पड़े। उनके दिल में स्वयं के ज्ञान का तथा प्रभु महावीर वीर के प्रमुख शिष्य होने का थोड़ा सा भी अभिमान न था, उन्होंने स्वयं के हृदय में यह भी नहीं सोचा कि एक मैं एक प्रमुख साधु होता हुआ भी श्रावक से कैसे क्षमा मांगू? गणधर गौतम स्वामी जी को बस परमात्मा महावीर की आज्ञा हुई और वे तुरंत चल पड़े। ऐसा था गणधर गौतम स्वामी जी का समर्पण भाव। इसीलिए तो वे मंगलस्वरुप बन गये, जिसके कारण हम कहते हैं **'मंगलम् गौतम प्रभु'**।

हमें भी अपने जीवन में गणधर गौतम स्वामी जी के जीवन से विनम्रता, सरलता, शुद्धि की भावना समर्पण भाव, परमात्मा के उत्कृष्ट भक्तिभाव इत्यादि अनेक गुणों को प्राप्त करें व मंगलमय बन जाएं। अपने-अपने क्षेत्र में प्राप्त हुए इस ऐतिहासिक चातुर्मास में अपनी भूलों, त्रुटियों आदि का प्रायश्चित करते हुए 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' की सार्थकता को निश्चित करें। ✧✧

(... पृष्ठ संख्या 00 का शेष भाग)

दीक्षा शताब्दी वर्ष का आगाज तो 'अक्षय तृतीया' को शेरे राजस्थान प्रवर्तक पू. श्री रूपचंद म. ने पूरे देश में वर्षीतप करने का आव्हान के साथ ही कर दिया था। वर्षीतप के पारणे सन 2018 'अक्षय तृतीया को राष्ट्रीय स्तर पर सोजत सिटी गुरुदेव की (हृदय एवं दीक्षा स्थल) के श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति के प्रांगण में मनाने हेतु घोषणा की थी शेरे राजस्थान के आव्हान के बाद अनेक संत-सती वृंद्ध के साथ श्रावक-श्राविकाओं के वर्षीतप की तपस्या गतिमान है।

मैं अपने परिवार एवं कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से महान चरित्र आत्मा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए वंदन करता हूं एवं सभी वर्षीतप आराधकों की सुख सता पूछते हुए सफल आध्यात्मिक एवं संयम जीवन की मंगल कामना करते है। जय जिनेन्द्र! ✧✧

संवत्सरी पर्व

– बनेचंद बोथरा 'बन्नू', शहादा (महाराष्ट्र)

चातुर्मास अगर अध्यात्म का पर्व है तो पर्युषण पर्व उसकी गरिमा है, धर्मध्यान तप आराधना का आठ दिन तक चले वाला उत्सव है, एक मेला है। पर्युषण पर्व का अंतिम दिन 'संवत्सरी पर्व' मानों उसे मेले की एक ध्वजा है। मन में विचार उठता है कि संवत्सरी पर्व का चातुर्मास के ठीक पचसवे दिन ही मनाने का विधान क्यों है? इसका विधान किसने बनाया और ये प्रथा कब से चली आ रही है, इसके बारे में शायद बहुत से लोगों को पता न हो, मुझे भी नहीं मालूम है। पर मेरे विचार से जिसने भी ये विध ाान रचा सचमुच बहुत सोच समझकर व चिंतन मनन करके किया है।

मेरे कल्पना से चातुर्मास का पहला दिन बालवाड़ी के रुप में फिर क्रमशः पहली से आगे 49 दिन तक की पढ़ाई में हमारे अध्यापक (चारित्र आत्माएँ) तब तक हमें धर्मध्यान, राग द्वेष इत्यादि अनेक विषयों से हमें परिपक्क कर देते हें और पचासवे दिन तक लगभग सभी को संवत्सरी पर्व मनाने का भी महत्त्व समझ में आ जाता है। जीवन में क्षमा के महत्व को भी जान लेते हैं, इसलिए संवत्सरी पर्व का पचासवे दिन मनाना औचित्यपूर्ण व प्रासंगिक लगता है। पर्व दो प्रकार के होते हैं लौकिक और लोकोत्तर। लौकिक पर्व भौतिक उत्साह संपदा की पहचान देते हैं तो लोकोत्तर पर्व आध्यात्मिक धर्म ध्यान की पहचान देते हैं।

स्वच्छता और साफ-सफाई करने के लिए भी ये दोनों पर्व दीपावली पर्व आता है। इसी प्रकार आत्मा के अंदर की सफाई करने के लिए लोकोत्तर पर्व, संवत्सरी पर्व आता है। विशेषकर पर्युषण पर्व लगते ही बहुत से भाई-बहन तप से माध्यम से अपनी आत्मा की सफाई पूरे जोश और उत्साह के साथ करने लग जाते हैं। राग, द्वेष और कषाय के कचरे को बाहर फैंकना चालू कर देते हैं।

आत्मा से इसी तरह के सब विविध प्रकारा के कचरे को जब हम पूर्ण रुप से बाहर निकाल देते हैं तब हमारा मन निर्मल बन जाता है, अपनी गलतियों का बोध होने लगता है। हमारे मन में प्रायश्चित के भाव आते हैं, हमारी वाणी या व्यवहार से किसी का मन दुखाया हो तो उसके प्रति क्षमा मांगने के भाव जागते हैं।

इसलिए संवत्सरी भी हमारे लिए एक मार्च की तरह आती है। जिस प्रकार हमें उस दिन सरकार को व्यवसाय का हिसाब देना पड़ता है। नफ़ा-नुकसान बताना पड़ता है। उसी प्रकार आत्मा के हिसाब की आखरी तारीख संवत्सरी पर हमें हमारे व्यवहार का हिसाब देना पड़ता है। किसका मन दुःखाया किससे बैर किया, इन सबको मिटाने के लिए इन सबको भुलाने के लिए 'क्षमा वीरस्य भूषणं' के फार्म भरकर या प्रत्यक्ष जाकर अपनी गलतियों का हिसाब पूर्ण करने के अनुपम अवसर का नाम है 'संवत्सरी' महापुरुषों ने कहा है :-

रेलवे लाइन पर लोहे का पुल बनाना आसान है, नदी के दो किनारों पर पत्थर का पुल बनाना आसान है। परंतु दो व्यक्तियों के दिल तोड़ने वाला मैत्री का पुल बनाना कठिन है। क्योंकि अन्य पुलों के लिए लोहा, लकड़ी मिला जाना सुलभ है,जबकि मैत्री के पुल के लिए वात्सल्य व मित्रता मिलनी बहुत ही दुर्लभ है। यह पर्व मैत्री पुल के नव-निर्माण का अनुपम अवसर देता है। ✧✧

युवा शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ

प्रांतीय युवा - महिला शाखा की संयुक्त मीटिंग का आयोजन

सूरत (गुजरात) : जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात शाखा की प्रांतीय युवा-महिला शाखा की संयुक्त मीटिंग का आयोजन सूरत के वीर नर्मद यूनिवर्सिटी के कन्वेन्शन हॉल में किया गया। मीटिंग में गत् वर्ष में हुए कार्यों की चर्चा की गई तथा आगामी वर्ष तक सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा जैन कॉन्फ्रेंस की गतिविधि अपने-अपने क्षेत्र में करने का प्रस्ताव पास किया गया।

युवा शाखा अध्यक्ष श्री ललित जी विश्लोत द्वारा गत वर्ष किए गए कार्यों में आचार्य सम्राट् पू. श्री शिव मुनि जी म. के हीरक जन्मोत्सव में गुजरात में लगे रक्तदान शिविर एवं वन पर्यावरण वर्ष के उपलक्ष में लगाए गए पौधों का विवरण, विश्व योग दिवस के के अवसर पर योगा में रखे गए कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी। महिला एवं प्रांतीय शाखा के साथ सहयोग की सराहना की तथा हॉस्पिटलों में बिस्कीट, फ्रूट वितरण जैसे कार्यक्रमों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। सूरत में डायलिसिस सैन्टर चालू करने का प्रस्ताव रखा गया, जिससे प्रभावित होकर श्री बंशीलाल जी सूर्या ने एक डायलिसिस मशीन उनकी ओर से लगाने का सहयोग दिया।

महिला शाखा की अध्यक्षा श्रीमती स्नेहलता जी चंडालिया ने विगत वर्ष में विश्व योग दिवस, कुकिंग डे सेमीनार, फ्रूट वितरण, धार्मिक परीक्षा जैसे विषयों पर चर्चा की। पूर्व अध्यक्षा श्रीमती मीना जी रांका द्वारा चलाई गई मुहिम 'विधवा सहायता' को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया गया और भी जरुरतमंद विधवा बहनों को सहायता करने का प्रस्ताव रखा। वहीं खुले मंच में रतनजी चपलोत ने पूरे गुजरात के सभी स्थानकों को पाठशाला से जोड़ने का प्रस्ताव रखते हुए यह कार्य श्रीमान् छीतरमल जी रांका एवं श्री भंवरलाल जी परमार द्वारा किये जा रही मुहीम की सराहना की। इस अवसर पर राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री शशिकुमार जी 'पिन्टू कर्नावट जैन ने गुजरात कॉन्फ्रेंस की सराहना की। मीटिंग का संचालन श्री दिनेश जी संचेती जैन ने किया। मीटिंग को सफल बनाने में सर्वश्री राकेश जी रांका जैन, मनीष जी बाफना जैन, राकेश जी ओस्तवाल जैन, राकेश जी कोठारी जैन, सुधीर जी कोठारी जैन, बसंतजी चोपड़ा जैन, मुकेश जी रांका जैन, पवन जी संचेती जैन, प्रकाश जी भलावत जैन, राजुजी डांगी जैन जैसे कई कार्यकर्ताओं का सराहनीय सहयोग रहा।

प्रेषक : दिनेश संचेती जैन

राष्ट्रीय युवा प्रमुख मार्गदर्शक श्री रजनीश जी जैन 'एक्सीलैन्स अवार्ड' से सम्मानित

दिल्ली : मानव सेवा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाली देश की प्रसिद्ध समाजसेवी संस्था महावीर इंटरनेशनल का 39वाँ स्थापना दिवस चैम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्री, नई दिल्ली के विशाल सभागार में एक विशिष्ट उपस्थिति के बीच मनाया गया। इस अवसरपर जैन समाज में अपनी निःस्वार्थ सेवाओं से स्वच्छ एवं विशिष्ट छवि रखने वाले युवा समाजसेवी श्री रजनीश जी जैन 'अहीरमाजरा' को महावीर इंटरनैशनल के इस भव्य एवं गरिमापूर्ण समारोह की विशिष्ट उपस्थिति के बीच **'एक्सीलैन्सी अवार्ड'** से सम्मानित किया गया।

प्रेषक : सहदेव जैन

बाढ़ पीडितों के सहायतार्थ खाद्य सामग्री का वितरण किया गया

बनासकांठा (गुजरात) : जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा गुजरात व गुरु अम्बेश नमन यात्रा सेवा संस्था गुजरात के संयुक्त प्रयास से गुजरात बाढ़ पीड़ितों के सहायतार्थ एक टीम ने बनासकांठा जिले के रूणी,

राणकपुर, खारिया, उण, भानपुर, थरा, इंन्द्रानगर आदि क्षेत्रों में जाकर बाढ़ से पीड़ित परिवारों में 1500 पूड़ी व सूखी सब्जी, नमकीन व बूंदी के पैकेट 12,000 पानी के पाउच, 1500 बिस्किट, 500 दूध की थैली व 1000 मोमबत्ती व माचिस का वितरण किया गया। इस कार्य में सर्वश्री भगवतीलाल जी परमार, श्री ललित 'विजु' विश्लोत, गौतम बाफना, मुकेश कच्छारा, मनोज डांगी, राजकुमार डांगी, रतन चपलोत, सुधीर कोठारी, मनीष बाफना, राजेन्द्र मेहता, अभिषेक सियाल, पंकज पोखरना, तेजस सियाल, राजकुमार तांतेड़ व देवेन्द्र बोकड़िया आदि ने अपना सहयोग दिया। पूरी टीम को बनासकांठा के जिला कलैक्टर श्री दिलीप भाई राणा जी ने सेवकीय कार्य के लिए प्रशंसा की।

प्रेषक : मनोज डांगी जैन

महिला शाखा द्वारा आयोजित गतिविधियाँ

मानव सेवा योजना के अंतर्गत राष्ट्रीय महिला शाखा का अभिनव उपक्रम का आगाज व राष्ट्रीय महिला शाखा की तृतीय कार्यकारणी मीटिंग

पनवेल, मुंबई (महाराष्ट्र) : पनवेल जैन श्री संघ के तत्वाधान में श्री ऑल इंडिया श्वेतांबर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय महिला शाखा एवं नारायण संस्था संस्थान, उदयपुर (राजस्थान) के सहयोग से पनवेल में विशाल स्तरीय शिविर एवं तृतीय राष्ट्रीय महिला अधिवेशन का शुभारंभ। पू डॉ. अक्षय ज्योति जी म. ठाना 4 के सान्निध्य में संपन्न हुआ। श्री ऑल इंडिया श्वेंताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय महिला शाखा का यह तृतीय अधिवेशन सतीजी म.सा. के सान्निध्य में भरने वाला यह पहला अधिवेशन हुआ। इसमें परम पूज्य डॉ. अक्षय ज्योति जी म.सा. ने अपने आशीर्वचन और मंगलाचरण के साथ में ही अधिवेशन की एवं तृतीय कार्यकारिणी सभा का शुभारंभ जैन कॉन्फ्रेंस के राष्टीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपडा जैन एवं महामंत्री डॉ. अशोक जी पगारिया जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा रुचिराजी सुराणा जैन,राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष शशिकांतजी (पिंटू) कर्णावट जैन और उनकी टीम, सुनंदाजी भंसाली, मंजूजी दर्डा, श्रीसंघ अध्यक्ष राजेशजी बाठिया, स्मिता बाठिया, ज्योति बाठिया के कर कमलों द्वारा हुआ।

कार्यक्रम में प्रमुख स्तर पर पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, पंचम जोन गुजरात इन सभी शाखा सम्मिलित हुई। भारतवर्ष की जैन कॉन्फ्रेंस की महिला शाखा ने जो काम किए हैं उसकी रिपोर्ट इस कार्यक्रम में रखी गई। साथ में महिला शाखा जोन पाँच योजना में काम कर रही अध्यक्ष ने राष्ट्रीय स्तर पर जो काम चल रहा उसकी रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

शिविर के कार्यक्रम का मंच संचालन किया राष्ट्रीय सह कोषाध्यक्ष सौ. मंजू जी दरड़ा, सौ. सुनंदाजी भंसाली, सौ. एकता जी डागलीया ने किया। सभी शाखाओं को अवार्ड दिए गये। कार्यक्रम का संचालन जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष बहन ललिता जी बम्ब एवं मंजु जी दरड़ा ने किया। सभी अवार्ड के सम्मानित बहिनों का गुण गौरव राष्ट्रीय अध्यक्षा सौ. रुचिरा जी सुराणा जैन ने किया आज की सभी समस्याओं को उन्होंने समाज के सामने रखा और बहनों ने एकत्रित होकर किस ढंग से काम करना है का मार्गदर्शन किया। सौ. रुचिरा जी सुराणा जैन ने अपने शाखा की बहिनों का परिचय उपस्थित जनमानस को करवा रहे थे तब उनके काम के बारे में सारी जानकारी दी जा रही थी उस वक्त हर बहन की आँखें नम थी। तमिलनाडु की अध्यक्ष सौ. ललिता जी जांगड़ा जो 6000 कुष्ठ रोगी गरीब निराधार बच्चों के लिए काम कर रही है और उनमें संस्कारों का बीज़ारोपण कर रही है।

सौ. सुरेखा जी कटारिया पुणे से हैं जो पँचम प्राँत की अध्यक्षा है जो प्रोफेसर होते हुए महिलाओं को एक साथ जोड़ कर अनेक कार्यक्रम ले रहे हैं। सौ. सीमाजी जाम्बड औरंगाबाद से जो चतुर्थ जोन की अध्यक्ष है जो स्वाध्याय और साधना के लिए लिए कार्य कर रही है। गुजरात प्रांत से स्वीटी चन्डालिया महिला संगठन एवं महिला स्वावलंबन के लिए काम कर रही है। पंजाब की प्रांतीय अध्यक्ष श्रीमती सुनैना जैन ने उम्मीद में जरुरतमंदों को लिये काम कर रही है। गुड टच बैड टच आज के लड़के और लड़कियों को अपने जीवन कैसे बनाना इसके बारे में की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

हर योजना की राष्ट्रीय अध्यक्ष ने लोगों के जीवन में प्रकाश लाने के लिए किस तरीके से छोटे-छोटे सहयोग से आप आगे बढ़ सकते हो इसके बारे में जानकारी दी। मानव सेवा योजना की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन इंदु जी जैन ने जिस तरीके के दिव्यांग लोगों के शिविर संपूर्ण भारत भर लगाए जाने की घोषणा की। कार्यक्रम मे जैन कॉन्फ्रेंस की सभी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राष्ट्रीय मंत्री अपनी कार्यकारिणी के साथ पधारे हुए थे। फादर बॉडी ने एवं सभी कार्यकारिणी सदस्य ने आज की मीटिंग की प्रशंसा की। राष्ट्रीय नारी रत्ना, राष्ट्रीय नारी भूषण, सेवा रत्न, कर्मठ सहयोगी आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया। सभी शाखाओं को राष्ट्रीय उत्कृष्ट सेवा के लिये सम्मानित किया गया।

सौ. मंजू जी दर्डा **'राष्ट्रीय नारी रत्न'**, सौ. सुनंदा जी भंसाली **'राष्ट्रीय नारी रत्न'** से, सौ. एकता जी डागलिया **'नारी रत्न'** सौ. ललीता जी बम्ब **'राष्टीय नारी रत्न'** से सम्मानित हुए। कार्यक्रम के अंत में जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय महिला शाखा ने एक परदेशी टूर का आयोजन किया जा रहा है, उसकी जानकारी दी गयी। आये हुए पदाधिकारियों को डायरी और पेन से सौ. मीना जी जयंती जी परमार, तथा सबविमला जी शैलेंद्र जी खेरोदिया ने सम्मानित किया कार्यक्रम को सफल बनाने के लिये श्रीसंघ पनवेल ने अथक परिश्रम लिये। सारे अध्यक्ष महामंत्री और उनके कार्य करने तथा महिला शाखा से सौ. धनश्री जी भाटिया और मेवाड़ महिला मंडल से सौ. संगीता जी संचेती तथा उनकी संपूर्ण टीम को धन्यवाद।

प्रेषक : रूचिरा सुराणा जैन

ज्ञान प्रकाश योजना के अंतर्गत महिला शाखा का अनूठा उपक्रम

पनवेल (महाराष्ट्र) : पनवेल जैन श्री संघ के तत्वावधान में जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय महिला शाखा का तृतीय महिला अधिवेशन का शुभारंभ पू. डॉ. श्री अक्षयज्योति जी म. आदि ठाणा के सक्रिय में संपन्न हुआ। जिसमें ज्ञान प्रकाश योजना की अध्यक्षा सौ. कल्पना जी महेन्द्र धाड़ीवाल की गुरु आनंद-शिव-महेन्द्र' के जन्म दिवस निमित्त पूजय अमोलकऋषि जी म. की 'जैन तत्व प्रकाश' किताब के ऊपर 'कल्पतरु खुली ज्ञान प्रतियोगिता' प्रश्न पुस्तिका का विमोचन हुआ।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालचंद जी खरवड़ जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोककुमारजी एन. पगारिया जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री शशिकुमार जी 'पिन्टू' कर्नावट जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. रूचिरा जी सुराणा जैन, पनवेल श्रीसंघ के अध्यक्ष, सभी पदाधिकारी, पंचम ज़ोन अध्यक्ष श्री आदेश जी खिंवसरा जैन, श्री गणेश जी सांखला जैन, सौ. सुनंदा जी भंसाली जैन, सौ. मंजूजी दर्डा जैन, सौ. सुरेखा जी कटारिया जैन, सौ. ललिता जी बंब जैन तथा स्टेट की एवं योजना की अध्यक्षा तथा सभी मान्यवर उपस्थित थे। कार्यक्रम में 'ज्ञान प्रकाश योजना की राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा सौ. कल्पना जी महेन्द्र धाड़ीवाल को 'राष्ट्रीय नारी रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रेषक : कल्पना धाडीवाल जैन

संगीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया

चेन्नई (तमिलनाडु) : साहुकारपेट जैन भवन के प्रांगण में संघ सेतु श्रमण संघीय उपाध्याय प्रवर पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में भाषण प्रतियोगिता के अर्थ सहयोगी मुख्य अतिथि श्री ज्ञेन महासंघ चेन्नई के अध्यक्ष श्री सज्जनराज जी मेहता, एस. एस. जैन संघ साहुकारपेट अध्यक्ष श्री आनंदमल जी छल्लाणी जैन, मंत्री श्री हस्तीमल जी खटोड़ जैन, उपाध्यक्ष श्री अनोपचंद जी भिड़कचा, महिला युवती मंडल मार्गदर्शिका जसुबाई जी कोठड़िया, अध्यक्षा सौ. कमला जी मेहता जैन आदि की उपस्थिति में एस. एस. जैनसंघ साहुकारपेट एवं श्री महावीर जैन महिला मंडल के संयुक्त तत्वावधान में संगीत प्रतियोगिता का आयोजन संपन्न हुआ। मंच का संचालन सौ. कमला जी मेहता जैन ने किया। प्रतियोगिता में स्थान प्राप्त करने वाली महिलाओं को सम्मानित किया गया। **प्रेषक : कमला मेहता जैन**

चेम्बूर मेवाड़ महिला मंडल ने मनाया सावन महोत्सव

चेम्बूर, मुंबई (महाराष्ट्र) : श्री वर्धमान स्थानक जैन महिला मंडल मेवाड़ उपसंघ चेम्बूर के तत्वावधान में स्थानक भवन में सावन महोत्सव का आयोजन हुआ जिसमें सभी सदस्याओं ने भाग लिया। आरंभ में हाउजी गेम्स प्रतियोगिता एवं धार्मिक प्रश्न मंच कार्यक्रम हुआ। जिसमें बरखा बड़ोला, सरोज लोढ़ा, शांत डांगी, केशर कुमठ, मंजु दीलिवाल आदि विजेता रही। विजेताओं को पारितोषिक एवं अन्य सभी को सांत्वना पुरस्कार दिये गये। टिफिन पार्टी का आयोजन किया गया, घर से बहिनों द्वारा बनाकर लाई गई मीठाईयों एवं विविध प्रकार के व्यंजनों का सभी ने भरपूर आनंद लिया गीत गाकर सावन महोत्सव मनया। इस अवसर पर पुष्पा सोनी, मीना डांगी, फूलीदेवी वड़ाला, रिंकू डांगी, कल्पना सीयाल सिद्धी डांगी, शकुन्तला सोनी, रेखा डांगी, आरती कुमठ, सुमित्रा छाजेड़, चेतना खरवड़, मीना लोढ़ा, साधना खरवड़, दीपिका लोढ़ा आदि मौजूद रही। **प्रेषक : पुखराज सोनी बिनोल**

महिला सक्षमीकरण शिविर का सफल आयोजन

जालना (महाराष्ट्र) : भारतीय जैन संगठन की ओर से जालना में महिला सक्षमीकरण शिविर का आयोजन दानकुंवर कन्या महाविद्यालय में किया गया। शिविर का उद्घाटन संगठन में राज्य के प्रभारी श्री हस्तीमल जी बंब के कर कमलों से हुआ। प्रमुख अतिथि के रुप में महाविद्यालय के अध्यक्ष महेन्द्र गुप्ता, प्राचार्य विद्या पटवारी, जिला अध्यक्ष प्रकाश जी बोरा, शिखरचंद लोहाडे आदि उपस्थित थे। आयोजन महिला अध्यक्षा प्रेमलता मोदी, सचिव उर्मिल पिपाडा आदि रही। युवतियों ने **'आजादी के साथ-साथ जिम्मेदारी का ख्याल रखने की आवश्यकता है'** ऐसा विचार श्री श्री हस्तीमल जी बंब ने रखा तथा 'लड़कियों ने आत्म विश्वास के साथ अपने काम करने चाहिए' समाज उनका सम्मान जरुर करेगा। यह विचार श्री चन्द्रशेखर गुलवाडे ने रखा। सूत्र संचालन उर्मिल पिपाड ने किया तथा शिचारचंद लोहाडे ने अभार व्यक्त किया। **प्रेषक : उर्मिला पिपाड़ा**

उत्कृष्ट सेवा कार्य हेतु सम्मान

मुंबई (महाराष्ट्र) : प्रांतीय सम्मान समारोह के अंतर्गत उत्कृष्ट सेवा कार्य के लिए सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम स्थान श्रीमती सुरेखा जी कटारिया-मुंबई, श्रीमती शशि जी मारु-मंदसौर तथा श्रीमती लाड़ जी मेहता-भीलवाड़ा को दिया गया। द्वितीय सथान श्रीमती सीमा जी झांबड़-औरंगाबाद, श्रीमती संतोष जी बोरा-कर्नाटक, श्रीमती शोभाजी बोहरा-हैदराबाद, श्रीमती सुनयनाजी जैन-लुधियाना, श्रीमती स्नेहलता जी चंडालिया जैन-सूरत को दिया गया। तृतीय स्थान श्रीमती अंतरदेवीजी बागमार-कोलकत्ता, श्रीमती अर्चना जी जैन-दिल्ली, श्रीमती सविता जी जैन-गाजियाबाद तथा सहयोगी सम्मान सौ. मीनाजी परमार, विमल जी खेरोदिया, ज्योति जी बांठिया, स्मिता जी बांठिया, धनश्री जी बांठिया-पनवेल को दिया गया। इसके लिए 'राष्ट्रीय नारी रत्न' सम्मान से सौ. सुनंनदा जी भंसाली जैन, सौ. कल्पना जी धाडीवाल, सौ. ललिता जी बंब, सौ. एकता जी डाकोलिया, सौ. मीना जी जैन को प्रदान किया गया **प्रेषक : मंजु दर्डा जैन**

समाचार - प्रकाश

1500 साधकों ने आत्म-ध्यान सेपाया आनंद, शांति व ज्ञान का मार्ग

इन्दौर (मध्य प्रदेश) : शिवाचार्य समवशरण रेसकोर्स रोड़ के विशाल धर्म परिसर में आत्म-ध्यान शिविर का नीरव शांत वातावरण में अभिनव आयोजन हुआ। ध्यान योगी आचार्य सम्राट् पू. श्री शिवमुनि जी द्वारा प्राणी मात्र के प्रति मंगल मैत्री के शुभ भावों के उद्घोष के साथ शिविर का शुभारंभ हुआ, जिसमें स्थानीय व देश के विभिन्न नगरों से आयें 1500 साधकों ने पांच घंटे तक चले इस शिविर में आत्म-ध्यान के द्वारा आनंद, शांति व ज्ञान का मार्ग पाया। शिविर में शिवाचार्यजी ने मौन के साथ ध्यान साधनारत शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि तीर्थंकर महावीर ने ध्यान के माध्यम से केवलज्ञान और मोक्ष लक्ष्य को प्राप्त किया। जैन दर्शन में भेद विज्ञान आत्मा और शरीर के अलग अस्तित्व का दिग्दर्शन कराता है। विडम्बना यह है कि हम आत्मा के स्वरूप को अनदेखा कर मात्र शरीर को सजाने और उसका पोषण कर रहे हैं। आत्मा के बिना शरीर का कोई मूल्य नहीं हैं। शरीर से आत्मा निकल जाने के बाद इस शरीर को परिवारजन भी घर में रखना नहीं चाहते है। शरीर नश्वर है और आत्मा शाश्वत है। वह पहले भी थी, आज भी है और कल भी रहेगी।

आचार्यश्री जी ने कहा कि आत्म-ध्यान से अपने अंतरमन में उतरकर स्वयं से प्रश्न करें, मैं कौन हूँ?, जीवन क्या है मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? हम शरीर और भौतिक पदार्थों को तो जानते हैं, परन्तु आत्मा के बारें में तनिक भी चिंतन नहीं करते है। जीवन में चाहे जितनी भी समस्याएं हो, आत्म-ध्यान हमें तनावमुक्त होकर सुख, शांति और आनंदपूर्वक जीवन जीने की कला सिखता है। शिविर में ध्यान साधिका निशाजी ने सोहम् की ध्यान विधि एवं योग निद्रा द्वारा ध्यान की गहराई में उतरकर आत्मा की अनुभूति का ज्ञान दिया। मंत्री प्रवर पू. श्री शिविर मुनि जी म. ने साधकों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। अंत में आचार्य भगवंत द्वारा स्व की आलोचना एवं कृत पापों के प्रति क्षमा भावं तथा सभी प्राणियों के प्रति मंगल व कल्याण की शुभ भावना से आत्म-ध्यान शिविर संपन्न हुआ।

शिवाचार्य समवशरण में उपाध्याय कविरत्न पू. श्री केवलमुनि जी म. की १०५वीं जन्म जयंती पर के अवसर पर गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। सभा में युवाचार्य पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. ने कहा कि उनके गीत और भजन श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते थे। उनके गीतों में शब्दों व राग का सुन्दर समन्वय था। साधर्मियों के प्रति उनके मन में सदैव वात्सल्य भाव था। उनसे प्रेरणा प्राप्त कर हम अपने जीवन में ज्ञान साधना, संयम साधना और समाज सेवा का संकल्प करें। प्रवर्तक पू. श्री प्रकाश मुनि जी म. ने उनकी सरलता व विनम्रता के पर विचार रखें। चातुर्मास महासमिति के महामंत्री री रमेश जी भण्डारी जैन ने संघ की ओर से उनके प्रति श्रद्धा समर्पित की। सभा का संचालन श्री प्रकाश जी भटेवरा जैन ने किया तथा भटेवरा परिवार की ओर से प्रभावना का लाभ लिया गया।

प्रेषक : हस्तीमल झेलावत जैन

21 मासखमण तपस्वियों का नागरिक अभिनंदन अभय प्रशाल इन्दौर में सम्पन्न

इंदौर (मध्य प्रदेश) : तप एक साधना है जो असीम, अदभूत, अगणित आत्मशक्तियों का द्वार खोल देता है। तप से मन शुद्ध होता है, विकार नष्ट होते है, फिर मन सबल, सूक्ष्म और निर्विकार होकर शक्ति स्त्रोंत बन जाता है। तप आलोक रश्मियाँ बिखेरता सूर्य है, असंख्य अमृत किरणें बिखेरता चन्द्र है। तप वह ज्योति

जो अंदर के सुशुप्त शक्तियों को प्रकाशमान कर देता है, अंधकार वृत्त जीवन पथ को अलौकित कर देता है। तप द्वारा कर्मों को तपाया जाता है जिससे आत्मा की शुद्धि होती है। कर्म कचरे जलाने एवं कर्म निर्जरा के लिए तपस्या की जाती है। कषायों के क्षीण करने हेतु तप आवश्यक है इससे काम, क्रोध, मंद व लोभ क्षीण होते है। तप एक चिंतामणि रत्न है जो साधक को मोक्ष-मार्ग की ओर मोड़ता है। तपस्या एक जीवन का श्रंगार है। जीवन में हुए पापों को भस्मीभूत करने का एक उच्च व अनुकरणीय साधन है।

उक्त विचार, अभय प्रशाल में आयोजित तपोत्सव समारोह युग प्रधान आचार्य सम्राट डॉ श्री शिवमुनि जी म. ने में व्यक्त किए। युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषि जी म. के मंगलाचरण से प्रारंभ हुए समारोह में प्रवर्तक पू. श्री प्रकाश मुनि जी म., प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीष मुनिजी म. ने संबोधित किया। तप अभिनंदन गीत पू. श्री शुभम मुनि जी म. ने प्रस्तुत किया। महासती पू. श्री आदर्शज्योति म., पू. श्री मंगलप्रभाजी म., महासती पू. श्री लज्जावती जी म., श्री प्रियदर्शना जी म., महासती पू. श्री चेतना जी म. ने तप महिमा पर अपने विचार व्यक्त किए। चातुर्मास आयोजन महासमिति के महामंत्री श्री रमेश भंडारी ने स्वागत भाषण एवं तपस्वियों का अभिनंदन किया। तपस्वी श्रीमान नेमीचन्दजी आँचलियाँ, श्रीमती मंजूला आँचलिया, श्री अशोककुमारजी बरमेचा, श्रीमती सरोजबहन भटेवरा, श्रीमती मंजू छगनलालजी पोरवाल जैन, श्रीमती कांति जगदीश जी जैन पोरवाल, श्रीमती ममता ऋषभजी पोरवाल, श्रीमती विमला कमलकुमारजी पोरवाल, श्रीमती ममता अभिषेकजी मेहता, श्रीमाल मन्नालालजी गादिया, श्रीमान सुशीलजी भगोता, श्रीमती चन्दा अरुणजी जैन, श्री रानी विरेन्द्रजी नाहटा, श्रीमती पुष्पा रतनलालजी जैन पोरवाल, श्रीमती विश्रांति धरमचन्दजी पोरवाल, श्रीमती सोनल गिरीशजी जैन पोरवाल, श्रीमती निकिता अमितजी जैन, श्रीमती सपना दीपेन्द्रजी जैन, श्रीमती पूजाजी लोढा, श्रीमती सीमाजी चोरड़िया, श्रीमती संगीताजी सेठिया का बहुमान, तपस्या की बोली लगाकर रजत कलश, चुनरी, शाल, माला द्वारा किया गया। श्री नेमनाथ जैन, श्री चंदनमल चोरड़िया, श्री सतीशचंद तांतेड़, श्री मनोहर लाल जैन, हुनमान प्रसाद जैन, सुभाष विनायक्या, अशोक मंडलिक, संतोष मामा, राजकुमार जैन, डिपिन जैन, प्रकाश भटेवरा, श्रीमती रेणु जैन, श्रीमती पुष्पा डागरिया, जितेंद्र चौपाड़ा आदि ने स्वागत किया।

सोमवार दिनांक 7 अगस्त 2017 को रक्षाबंधन पर भाई-बहनो के मंगलकारी जाप का महा आयोजन हुआ जिसमें एक साथ लगभग 500 भाई-बहन एक साथ रक्षा सूत्र बांधकर रक्षाबंधन पर्व मनाया। एक दिवसीय ध्यान शिविर का आयोजन भी रखा गया जिसमें 150 साधक-साधिकायें भाग लेंगे, आयोजन का संचालन श्री जिनेश्वर जैन ने किया।

प्रेषक : रमेश भंडारी

आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म. की जन्म जयंती से संबंधित समाचार

सवाई माधोपुर (राजस्थान) : श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर, जैन धर्म दिवाकर, राष्ट्र संत महामहिम आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म. की जन्म जयंती समारोह सामूहिक एकासना एवं दया दिवस के रूप में मेवाड़ सिंहनी, भारत कोकिला, साध्वी शिरोमणी राजस्थान प्रवर्तिनी महासती पू. श्री यशकंवर जी म. की सुशिष्या, शासन दिपिका कंठ कोकिला, उप-प्रवर्तिनी महासती पू. श्री मैनाकंवर जी म. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में यश दरबार चंदनबाला भवन के विशाल प्रांगण में श्री महेन्द्र जी जैन की अध्यक्ष तमें मनाया गया। महासती पू. श्री ज्योतिप्रभा जी म. ने आचायश्री जी के जीवन दर्शन तथा उनके प्रेरणास्पद मार्ग पर चलकर उनके गुणों को आत्मसात कर जयंती मनाने के सच्चे अर्थों के विषय में बताया। भीलवाड़ा से समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती लाड़जी मेहता, अध्यक्ष महिला जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान, श्रीमती पुष्पा जी गोखरु,

महामंत्री महिला जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान, हनुमान प्रसाद जी जैन, कोटा उपस्थित रहे। समारोह की शोभा में अभिवृद्धि करने वालों में सर्वश्री देवेन्द्र सिंह जी गुलिया, संरक्षक श्रावक संघ शाहपुरा सुरेश जी जैन, रामप्रसाद जी, रतलाज जी, सुनील जी चपलोत, राजेन्द्र जी जैन, विनोद जी जैन आदि उपस्थित थे। अंत में संघ अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जी जैन ने सभी पधारे अतिथियों, आगंतुकों का धन्यवाद प्रेषित किया। समारोह का कुशल संचालन संघ मंत्री श्री रमेश जी कटला द्वारा किया गया। **प्रेषक : रमेश कटला जैन**

खार, मुंबई (महाराष्ट्र) : उप-प्रवर्तिनी महासती पू. श्री रिद्धिमा जी म., तप ज्योत्सना महासती पू. श्री हिमानी जी म. आदि ठाणा के सान्निध्य में श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म. की 118वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में पंजाब जैन भ्रातृ सभा, अहिंसा भवन, अहिंसा मार्ग, खार (पश्चिम) में ॐ आनंद नमो नमः, श्री ॐ आनंद नमो नमः, जय-जय आनंद नमो नमः, सद्गुरु आनंद नमो नमः की धुन के साथ जाप किया गया। इसके पश्चात् श्री विजय कुमार जी जैन, रीमती मोनिका जी जैन, कुमारी रिया जी जैन इत्यादि भक्तजनों ने गुरुदेव की जन्म जयंती के उपलक्ष्य अपने-अपने विचार रखें। संघ महामंत्री श्री उमेश कुमार जी जैन आने वाले सभी भाईयों का तहे दिल से स्वागत किया गया तथा आगामी होने वाले भिक्षु दया कार्यक्रम की सभी को प्रेरणा दी। **प्रेषक : उमेश कुमार जैन**

न्यू फ्रेन्ड्स कालोनी (दिल्ली) : श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा साउथ दिल्ली जैन स्थानक जे. आर. जैन भवन न्यू फ्रेन्ड्स कालोनी के तत्वावधान में आत्मज्ञानी सद्गुरुदेव युगप्रधान आचार्य सम्राट् पू. श्री शिवमुनि जी म. की सुशिष्या परम दीप्त तपस्विनी, तप चक्रेश्वरी, तप सिद्धेश्वरी परम पूज्य गुरुवर्या महासाध्वी पू. श्री विभाश्री जी म., तप चन्द्रिका महासाध्वी पू. श्री आभाश्री जी म. के पावन सान्निध्य में आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म. की जन्म जयंती साधना के साथ मनाई गई। एक सौ पचास लोगों ने एक साथ एक घंटे बैठकर महामंत्र नवकार का सामूहिक रूप से उच्चारण कर सामूहिक जाप किया। इस अवसर पर समारोह गौरव श्री प्रमोद जी जैन (आई.ए.एस. सेक्रेटरी जम्मू कश्मीर सरकार) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरा सौभाग्य है कि मैं जम्मू का हूँ। पूज्य श्री आनंदऋषि जी म. ने जम्मू में भी चातुर्मास किया था, ये जम्मू के लोगों का सौभाग्य रहा है। साउथ दिल्ली के अध्यक्ष श्री सुभाष ओसवाल जी जैन ने कहा कि मेरा भी जीवन में सौभाग्य रहा है कि मैं पिछले 40 वर्षों से पूज्य श्री आनंदऋषि जी म. का कृपा पात्र रहा। उसी का प्रतिफल है कि मैं आज सामाजिक कार्यों से जुड़ा हुआ हूँ। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री महेश जी जैन, श्री नवनीत जी जैन, श्री विनय जी जैन, श्री अशोक जी लोढ़ा, श्री संदीप जी जैन 'मिक्की', श्री आदेश जी जैन, श्री अभय जी भंसाली, श्री विपिन जी भंसाली, श्री प्रदीप जी भंसाली, श्रीमती सोनिया जी जैन, श्रीमती संगीता जी जैन, श्रीमती नीलम जी ओसवाल जैन का महत्वपूर्ण सहयोग रहा। **प्रेषक : अशोक लोढ़ा जैन**

दिल्ली : जैन स्थानक पंजाबी बाग के सभागार में श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म. की पावन जन्म जयंती महोत्सव घोर तपस्विनी महासाध्वी पू. श्री प्रोमिला जी म. एवं उप-प्रवर्तिनी महासाध्वी पू. श्री जितेन्द्र कुमारी जी म. के पावन सान्निध्य में सामायिक दिवस के रूप में मनाई गई। इस अवसर पर पंजाबी बाग के बच्चों ने आचार्यश्री के संपूर्ण जीवन व उपलब्धियों को प्रदर्शित करती नाटिका भी प्रस्तुत की तथा श्री रोशनलाल जैन व अनेक गुरु भक्तों ने आचार्यश्री जी के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित किए। **प्रेषक : मदनलाल**

भोपाल (मध्य प्रदेश) : श्रमण संघीय उप-प्रवर्तक पू. श्री अक्षयऋषि जी म. व पू. श्री अमृतऋषि जी म. की पावन निश्रा में राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म. की जन्म जयंती सप्त दिवसीय महोत्सव के रूप में सौल्लास मनाई गई। सातों दिन विशेष कार्यक्रम आयोजित हुए। दर्शन, चारित्र व तप आराधना के अंतर्गत प्रतिदिन विशिष्ट जाप, विभिन्न त्याग यथा रात्रि भोजन त्याग, कंदमूल त्याग आदि व संवर, पौषध, सामायिक का बेला व तेला, एकासना दिवस, उणोदरी, तेला दिवस, आयंबिल दिवस का आयोजन किया गया। प्रत्येक दिन विष विशेष पर प्रवचन आयोजित किए गए। भोपाल में स्थानकवासी संघ सदस्यों के घर दूर-दूर कालोनियों में हैं फिर भी इस सप्त दिवसीय आयोजन में सभी ने समय पर आकर भाग लिया व सभी कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुए। संपूर्ण आयोजन में पू. श्री अक्षयऋषि जी म. व पू. श्री अमृतऋषि जी म. की पावन प्रेरणा व मार्गदर्शन तथा अरिहंत बहु मंडल, जैन जाग्रति महिला मंडल, अरिहंत स्थानक युवा संघ का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। शाजापुर, शुजालपुर, आष्टा, सिवनीमालवा, नासिक, चालीसगांव आदि जगहों से दर्शनार्थी बंधु पधारे व संत दर्शन वंदन का लाभ लिया। **प्रेषक : अरविन्द चोरड़िया जैन**

उज्जैन (मध्य प्रदेश) : प्रज्ञामूर्ति पूज्या महासाध्वी श्री मधुकंवर जी म., पू. श्री प्रतिभा जी म. एवं स्वरकोकिला पू. डॉ. श्री चिंतनश्री जी म. की निश्राय में सुभाषनगर, उज्जैन स्थानक में चातुर्मासिक धर्म आराधना के पावन अवसर पर प्रतिदिन प्रवचन, सामायिक, संवर, प्रतिक्रमण, पौषध, तेले की लड़ी और अन्य तपस्याओं का धार्मिक समागम प्रवाहमान है। इसी कड़ी में आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म. की जन्म जयंती के अवसर पर दो दिवसीय धार्मिक आयोजन संपन्न हुआ। सामूहिक एकासन व्रत व सामायिक की आराधना हुई। महासतीवृंद ने आचार्यश्री जी के गुणगान करते हुए उनके आध्यात्मिक जीवनवृत्त पर विस्तृत प्रकाश डाला। पूज्या महासती जी ने आचार्यश्री जी को समर्पित भावपूर्ण काव्यांजलि की प्रस्तुति दी। गुणानुवाद सभा में श्रीसंघ के सचिव आर. सी. सुराना जी, संरक्षक ट्रस्टी प्रेमचंद बापना, पुखराज तलेसरा, ब्राह्मी सुन्दरी महिला मंडल की श्रीमती ज्योति बापना, वरिष्ठ श्राविका श्रीमती रेशम बहिन राठौर आदि ने आचार्यश्री जी के प्रति श्रद्धासुमन व भावांजलि अर्पित की। **प्रेषक : आर. सी. सुराणा जैन**

कलकत्ता (पश्चिम बंगाल) : श्री कलकत्ता जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी गुजराती संघ द्वारा प्रवचन प्रभावक पू. श्री अचल मुनि जी म., प्रवचन सूर्य पू. श्री भरतमुनि जी म. के सान्निध्य में विविध आयोजनों तथा अनुष्ठान भक्तिभाव पूर्वक आचार्य पू. श्री आनंदऋषि जी म. की जन्म जयंती भव्य तरीके से मनाई गई। सामूहिक एकासना तथा गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। **प्रेषक : अश्विन देसाई**

सूरत में पहली बार अभूतपूर्व तपस्या के ठाठ

सूरत (गुजरात) : पूज्य गुरुदेव अम्बेश, सौभाग्य मदन एवं गुरुणी प्रेमवती जी म. की सुशिष्या मधुर गायिका राजमति जी म., तप ज्योति जैन सिद्धातांचचार्य वियप्रभा जी म., विद्याभिलाषी विद्याश्री जी म. के चातुर्मास में अभूतपूर्व तपस्या का ठाठ लगा है। मेवाड़ के चमत्कारिक उग्र तपस्वी पू. श्री रोड़ीदास जी म. की पावन स्मृति में लगभग १२७ तपस्वी भाई-बहनों ने अठाई एवं ऊपर की तपस्या कर सामूहिक तपस्या में अपनी काया को पवित्र करते हुए शांति भवन का इतिहास रच डाला। **प्रेषक : गजेन्द्र कुमार चण्डालिया**

महासाध्वी पू. श्री विभाश्री जी म. आदि ठाणा का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

न्यू फ्रेन्ड्स कालोनी (दिल्ली) : आत्मज्ञानी सद्गुरुदेव, युग प्रधान आचार्य सम्राट् पू. श्री शिवमुनि जी म. के आज्ञानुवर्ती श्रमण संघीय सलाहकार, भीष्म पितामह, राजर्षि पू. गुरुदेव श्री सुमति प्रकाश जी म. की सुशिष्या, परम दीप्त तपस्विनी, तप चक्रेश्वरी, तप सिद्धेश्वरी परम पूज्य गुरुवर्या महासाध्वी पू. श्री विभाश्री जी

म., तप चन्द्रिका महासाध्वी पू. श्री आभाश्री जी म. का भव्य चातुर्मास प्रवेश यात्रा श्रीमती दर्शना देवी 'देवकी माता' मातृ श्री विनय जी जैन 'कागजी' के निवास स्थान से प्रारंभ होकर न्यू फ्रेन्ड्स कालोनी स्थित जे. आर जैन भवन में भव्यता के साथ सुसंपन्न हुआ। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मण्डल चेयरमैन श्री केसरीमल जी बुरड़ जैन, श्री संघ अध्यक्ष श्री सुभाष जी ओसवाल जैन, दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष री अतुल जी जैन के अलावा श्री प्रशांत जी जैन 'अध्यक्ष श्री नवकार तीर्थ', श्री रजनीश जी जैन 'अहीरमाजरा', श्री सौरभ जी जैन, श्री गौतम जी जैन, साउथ दिल्ली संघ के चेयरमैन श्री रमेश जी जैन, कोषाध्यक्ष श्री आदेश जी जैन, संयोजक श्री नवनीत जी जैन, श्री विनय जी जैन 'कागजी', श्री महेश जी जैन, श्री अजय जी जैन, श्री संजीव जैन आदि श्रद्धालु भक्त उपस्थित थे। **प्रेषक : संदीप जैन**

महासती पू. श्री इन्दूबाला जी म. आदि ठाणा का चातुर्मासिक प्रवेश

जबलपुर (मध्य प्रदेश) : सकल श्वेतामब्र जैन संघ के प्रबल पुण्योदय से तथा संघ सदस्यों की गुरु भक्ति, संघ निष्ठा, सेवा भावना से जैन स्थानकवासी सेवा समिति गोरखपुर, जबलपुर के सान्निध्य में जैन स्थानक भवन में मधुर व्याख्यात्री, महासती पू. श्री इन्दूबाला जी म., महासती पू. श्री मुदितप्रभा जी म. आदि ठाणा का चातुर्मास संपन्न हुआ। **प्रेषक : मदनलाल जैन**

पू. श्री सुभद्र मुनि जी म. का जम्मू में भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

जम्मू (जम्मू एण्ड कश्मीर) : श्री एस. एस. जैन सभा जम्मू की श्रद्धा भक्तिपूर्ण प्रार्थना को स्वीकृत कर राष्ट्रसंत पू. गुरुदेव श्री सुभद्र मुनि जी म. अपने मुनि संघ के साथ विभिन्न क्षेत्रों में धर्म की गंगा प्रवाहित करते हुए भारत के रमणीय हिमालय की तलहटी जम्मू क्षेत्र में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश किया। इस अवसर पर स्थानीय क्षेत्रों के श्रद्धालुओं के साथ बाहर से भारी संख्या में गुरु भक्तों ने उपस्थित होकर धर्म लाभ लिया। बच्चों ने, युवाओं ने, महिला संघों ने विशेष ध्वज के पंच परिधानों में भाग लेकर जिन शासन की महती प्रभावना की। सभा अध्यक्ष श्री राजकुमार जी जैन, महामंत्री श्री रमण जी जैन, मंत्री श्री संदीप जैन 'सन्नी' तथा युवा संघ, कार्यकारिणी ने सुंदर व्यवस्था की। **प्रेषक : मुनीश जैन**

नाभा में साध्वी पू. श्री महक जी म. का चातुमार्ङ्गस हेतु भव्य मंगल प्रवेश

नाभा (पंजाब) : जैन भारती, कोकिलकंठी, उप-प्रवर्तिनी महासाध्वी पू. श्री मीना जी म. की सुशिष्या रत्न, प्रवचन प्रभाविका पू. श्री महक जी म., साध्वी पू. श्री मुमुक्षा जी म., साध्वी पू. श्री समन्वय जी म. आदि ठाणा का जैन स्थानक, नाभा में भव्य मंगल प्रवेश बड़ी धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ हुआ। प्रवेश के अवसर पर सैंकड़ों जैन-अजैन श्रद्धालुओं के अलावा आर. एस. जैन हाई स्कूल, महावीर जैन सिलाई स्कूल के बच्चें शामिल हुए। इस अवसरपर महिला मंडल से सौ. अनिता जी जैन, संघ की तरफ से महामंत्री श्री शालीभद्र जी जैन तथा अन्य शहरों से आए पदाधिकारियों ने स्वागत उद्बोधन दिया। **प्रेषक : शालीभद्र जैन**

महासाध्वी मंजुलश्री जी म. आदि ठाणा का गौतमपुरी में भव्य मंगल प्रवेश

गौतमपुर (दिल्ली) : श्री वर्धमान जैन श्रावक संघ गौतमपुरी में श्रमण संघीय आचार्य सम्राट् पू. श्री शिवमुनि जी म. की आज्ञानुवर्ती महासती पू. श्री मनीषा जी म. की सुशिष्या प्रसन्नमना महासाध्वी पू. श्री मंजुलश्री जी म., सेवाभावी पू. श्री मल्लीश्री जी म., प्रवचन प्रभाविका पू. श्री भविश्री जी म. आदि ठाणा का

उप-प्रवर्तिनी पू. श्री राधा जी म. के सान्निध्य में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश बड़े हर्षोल्लास के साथ हुआ। इस अवसर पर श्रीसंघ के मार्गदर्शक श्री शीतल प्रसाद जी जैन व श्री राकेश जी जैन के दिशा-निर्देशन में जैन स्थानक गौतमपुरी में भव्य शोभायात्रा पहुंची। जहां पर कोषाध्यक्ष श्री अजय जी जैन ने सभी का स्वागत अभिनंदन किया।

प्रेषक : संदीप जैन 'सोनू'

महासाध्वी पू. श्री श्रेया जी म. आदि ठाणा का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

शक्ति नगर एक्स. (दिल्ली) : श्री जैन स्थानक, शक्तिनगर एक्स. दिल्ली में सेवा श्रमणी महासाध्वी पू. श्री श्रेया जी म. आदि ठाणा का वर्षावास हेतु मंगलकारी प्रवेश बड़े ही धूमधाम से जन समूह द्वारा जयकारों की गगन गुंजों के साथ संपन्न हुआ। प्रवेश यात्रा प्रबुद्ध समाजसेवी श्री नजरकुंवर जी सुराणा के निवास स्थान से आरंभ होकर स्थानक भवन में पहुंची। इस अवसर पर दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मंत्री श्री सत्येन्द्र जी जैन के अलावा श्री सुरेश जी जैन, श्री नंदीवर्धन जी जैन, विधायक श्री सोमनाथ जी जैन, युवा शाखा दिल्ली प्रांतीय अध्यक्ष श्री मनीष जयकुमार जी जैन, श्री राजेश जी गुप्ता, श्री नरेश जी जैन 'रिंढ़ाणा', श्री विपुल जी जैन, श्री दिनेश जी जैन, श्री नरेन्द्र जी जैन, तथा अनेक गुरुणी भक्त उपस्थित थे। श्री संघ की ओर से सभी का स्वागत, अभिनंदन किया गया तथा पधारने पर धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रेषक : सुरेश जैन

हनुमंतनगर, बैंगलोर में पू. श्री श्रुतमुनि जी म. का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

हनुमंतनगर, बैंगलोर (कर्नाटक) : कर्नाटक गज केसरी, पूज्य गुरुदेव श्री गणेशीलाल जी म. के पौत्र शिष्य, घोर तपस्वी, पू. श्री मिश्रीमल जी म. के सुशिष्य एवं वर्तमान आचार्य पू. श्री शिवमुनि जी म. के आज्ञानुवर्ती महाराष्ट्र भूषण, कर्नाटक गौरव, श्रमण संघीय उप-प्रवर्तक पू. श्री श्रुतमुनि जी म., ज्ञान पिपासु, युवा तपरत्न, सेवाभावी पू. श्री अक्षरमुनि जी म. आदि ठाणा का भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ हनुमंतनगर के तत्वावधान में जैन सथानक में विशाल जनमेदिनी के साथ चतुर्विध संघ की उपस्थिति में हुआ। इस अवसर पर पूर्व में त्यागराजनगर सिद्धाचल रेजीडेन्सी से पूज्य मुनिवृंद सह विशाल भव्य अहिंसा यात्रा प्रारी हुई जो गुरु गणेश-मिश्री दरबार अनुमंतनगर जैन भवन में विशाल धर्मसभा के रूप में परिवर्तित हो गई।

इस अवसर पर श्रमण संघीय उप-प्रवर्तक पू. श्री गौतमुनि जी म., उप-प्रवर्तक पू. श्री विनयमुनि जी म., उप-प्रवर्तक पू. श्री अभिषेक मुनि जी म., महासती पू. श्री विजयलता जी म. आदि ठाणा, महासती जी श्री सुप्रभा जी म. की पावन मंगल उपस्थिति रही। सभी गुरु भगवंतों ने अपने प्रसंगानुकूल विचार व्यक्त किए। श्री हनुमंतनगर संघ के अध्यक्ष श्री कल्याण सिंह जी बुरड़ ने स्वागत भाषण दिया। संघ मंत्री श्री भंवरलाल जी गादिया ने पूज्य मुनिवृंदों के चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश पर्दापण पर उनकी भावभीनी आगवानी की। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय एवं प्रांतीय पदाधिकारीगण अनुमंतनगर संघ, ट्रस्ट के अनेक पदाधिकारीगण सहित जैन समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। श्री अशोक कुमार जी गादिया ने संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन किया।

प्रेषक : अशोक कुमार गादिया जैन

दर्शन वंदन यात्रा का तीसरा चरण

नई दिल्ली : जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश के प्रतिनिधि मंडल ने साउथ दिल्ली सहित एन.सी.आर. में चातुर्मास स्थलों पर उपस्थित होकर पूज्य प्रवर संत-साध्वी जी महाराज के दर्शनों का मांगलिक लाभ लिया,

जिसमें जैन स्थानक, न्यू फ्रेन्ड्स कालोनी में श्रमण संघीय सलाहकार, राजर्षि पू. श्री सुमति प्रकाश जी म. की सुशिष्या तप चक्रेश्वरी, तपसिद्धेश्वरी महासाध्वी पू. श्री विभाश्री जी म., पू. श्री आभाश्री जी म. आदि ठाणा के दर्शनों एवं प्रवचनों का लाभ लिया। इसके उपरांत जैन स्थानक सैक्टर 23, नोएड़ा में विराजित श्रुतप्रेमी साध्वी युग श्री निधि-कृपाजी म. आदि ठाणा के दर्शन कर सुखसाता पूछते हुए महासाध्वी जी का मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। यहां से जैन स्थानक, सैक्टर 15, फरीदाबाद में विराजित राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म. की आज्ञानुवर्तिनी प्रवर्तिनी रत्न कंवर जी म. की सुशिष्या महासाध्वी पू. श्री दिव्यज्योति जी म. आदि ठाणा के दर्शन कर सुखसाता पूछी। यहां से जैन स्थानक, ओल्ड रेलवे रोड़, गुड़गांव में विराजित श्रमण संघीय भीष्म पितामह सलाहकार पू. श्री सुमतिप्रकाश जी म. के पौत्र शिष्य नवकार साधक पंडित रत्न पू. श्री विचक्षण मुनि जी म., मधुर प्रवचनकार पू. डॉ. पदम मुनि जी म. आदि ठाणा तथा उप-प्रवर्तिनी महासाध्वी पू. श्री सुमनकुमारी जी म. की सुशिष्या कंठ कोकिला महासाध्वी पू. श्री श्रुतिजी-पूर्णा जी म. आदि ठाणा के दर्शन वंदन एवं सुखसाता पूछी।

दर्शन-वंदन प्रतिनिधि मंडल में प्रमुख संरक्षक श्री सुभाष ओसवाल जी जैन, प्रांतीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन, प्रमुख मार्गदर्शक श्री रोशनलाल जी जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री नरेश जी जैन, महामंत्री श्री जसवंत जी जैन, वरिष्ठ मंत्री श्री ललित जी ओसवाल जैन आदि गणमान्यजन शामिल थे। **प्रेषक : जसवंत जैन**

271वाँ मासिक मानव सेवा एवं अन्नदान कार्यक्रम संपन्न

चेन्नई (तमिलनाडु) : भगवान महावीर सेवा समिति के तत्वावधान में मानव सेवा व अन्नदान के 271वें कार्यक्रम के तहत किलपॉक स्थित सी.एम.एस. अनाथ आश्रम में प्रवासित सभी बालक एवं बालिकाओं को मिष्ठान युक्त भोजन नित्यापयोगी सामग्री तथा दवाईयों का वितरण किया गया। इस अवसर पर समिति के संस्थापक डॉ. एम. उत्तमचंद गोठी सहित श्री मोहनलाल जी चोरड़िया जैन, श्री मनोज जी सिफानी, विनय जी पीपाड़ा, ज्ञानचंद जी नाहर, उदयराज जी सेठिया आदि समिति के सभी सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई व अपने हाथों से बच्चों को भोजन करवाया। **प्रेषक : एम. उत्तमचंद गोठी**

स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया

अहमदनगर (महाराष्ट्र) : आनंद-आशीष जाप प्रार्थना मंडल, अहमदनगर एवं जैन कॉन्फ्रेंस चतुर्थ ज़ोन महाराष्ट्र द्वारा स्वास्थ्य जांच शिविर के तहत 'बाल रोग शिविर' का आयोजन आनंद हॉस्पिटल में किया गया। इस अवसर पर चतुर्थ ज़ोन के महामंत्री श्री मनोज जी सेटिया जैन, कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री संतोष जी बोथरा जैन, वरिष्ठ मार्गदर्शक श्री रमेश जी बाफना जैन एवं अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

प्रेषक : मनोज सेटिया जैन

विश्व विद्यालयों में जैनदर्शन तथा प्राकृत भाषा विभाग को मिले विशेष संरक्षण

पुणे (महाराष्ट्र) : श्रमण संघीय डॉ. पुष्पेन्द्र मुनि म. ने केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री को पत्र लिखकर कहा कि वर्तमान में अल्पसंख्यक जैन धर्म के विचारों, शिक्षाओं, दर्शन, संस्कृति तथा साहित्य के संवर्धन, अध्ययन, अध्यापन, शोध व संरक्षण के लिए कुछ भारतीय विश्वविद्यालयों में जैनविद्या या जैनदर्शन विभाग तथा जैन धर्म के आगमों की भाषा 'प्राकृत' के संरक्षण, संवर्धन, अध्ययन, अध्यापन तथा शोध के लिए प्राकृत भाषा विभाग स्वतंत्र रुप से संचालित हैं लेकिन वर्तमान में कुछ विसंगतियों तथा उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारण इन

विभागों के अस्तित्व पर संकट गहरा रहा है। इसको देखते हुए विश्वविद्यालयों में जैन दर्शन एवं प्राकृत भाषा विभाग को विशेष संरक्षण दिया जाना चाहिये। जैन धर्म भारतवर्ष का अत्यंत प्राचीन धर्म है। प्रथम तीर्थंकर भगवान् ऋषभदेव जी से लेकर चौबीसवें तीर्थंकर भगवान् महावीर तथा उनके बाद सैकड़ों तपस्वी आचार्यों ने विपुल साहित्य की सर्जना करके सभी जीवों तथा मानव जाति के कल्याण के लिए तथा आतंकवाद आदि अनेक समस्याओं के निवारण के लिए अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह, योग, ध्यान जैसे अनेक सिद्धांतों के माध्यम से जो महान योगदान दिया है, उसे जैनविद्या अथवा जैनदर्शन के नाम से पूरे विश्व में जाना जाता है। जैन धर्म का मूल आगम-साहित्य प्राकृत भाषा में है। प्राकृत इस देश की, उस समय की जनभाषा रही है। जिसके निवारण के लिए सम्पूर्ण जैन समाज की ओर से आपसे निम्नलिखित तथ्यों पर गंभीरतापूर्वक विचार के लिए आग्रह किया जाता है। जैनविद्या और प्राकृत विभाग देश में बहुत ही कम संख्या में हैं, अतः इस दर्शन और भाषा के संरक्षण के लिए देश के सभी केन्द्रीय विश्व विद्यालयों में इनकी स्थापना की जाये।

1. जिन थोड़े स्थानों पर ये विभाग हैं, वहाँ अध्यापकों के पदों की संख्या नगण्य हैं, अतः नए पद सर्जित किये जाएँ। 2. इन विभागों में जो पद हैं, उन्हें विशेष अल्पसंख्यक संरक्षण के तहत किसी भी जाति के लिए आरक्षित न किया जाय तथा उन्हें नियमपूर्वक सदैव सामान्य श्रेणी के अंतर्गत ही विज्ञापित किया जाय और भरा जाय। 3. विशेष अल्पसंख्यक संरक्षण के तहत इन विभागों की संरचना तथा संचालन में विभाग में अध्यापक और विद्यार्थी यदि कम भी हों तो भी इन विभागों को बंद न किया जाय अथवा अन्य विभागों में विलीन न किया जाय। 3. विश्व विद्यालय अनुदान आयोग सभी विश्व विद्यालयों में जिस प्रकार भगवान् बुद्ध, गुरु गोविन्दसिंहजी तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के विशेष अध्ययन के लिए चेयर (देखें, पत्र संख्या D-O-No-F-91 & 25/ 2015 (SUI&I) Dated 27/09/2016) स्थापित कर रहा है, उसी प्रकार तीर्थंकर भगवान् महावीर की चेयर्स भी अवश्य स्थापित करे। 5. प्राकृत भाषा के संरक्षण, अध्ययन तथा अनुसंधान लिए केंद्र सरकार द्वारा देश में एक 'प्राकृत अकादमी' की स्थापना अवश्य की जाय। आशा ही नहीं, वरन पूर्ण विश्वास है कि आप हमारी इन मांगों पर गंभीरता पूर्वक विचार करके इन्हें शीघ्र ही पूरी करेंगे। जैन समाज आपके इस योगदान के लिए आपका सदैव आभारी रहेगा। **प्रेषक : तारक गुरु ग्रंथालय**

पिंपरी चिंचवड़ जैन महासंघ की ओर से सफल छात्रों का सम्मान

चिंचवड़, पुणे (महाराष्ट्र) : पिंपरी चिंचवड़ जैन महासंघ की ओर से 10वीं एवं 12वीं कक्षा के 75% से ज्यादा अंक प्राप्त करे वाले 90 छात्रों का सम्मान जीएसटी के सह आयुक्त श्री एस. पी. काले, श्री प्रमोद जी नाहर 'सी.ए.' तथा डॉ. अशोक कुमार एन. पगारिया जैन के कर कमलों द्वारा कासारवाड़ी के आनंद दरबार में सम्पन्न हुआ। अध्यक्षता महासंघ के अध्यक्ष प्रो. प्रकाश कटारिया द्वारा की गई। महासंघ के पूर्व अध्यक्ष अजित पाटिल, विलास पगारिया तथा विरेन्द्र जैन, सतीश खाबिया, प्रो. सुरेखा कटारिया, बसंतलाल बोरा आदि उपस्थित थे। स्वागत सुरेश गादिया ने किया तथा सूत्र संचालन पी. एम. जैन ने किया। **प्रेषक : प्रकाश कटारिया**

मुमुक्षु अंजली जैन का संस्कार ज्योति कार्यालय में भव्य अभिनंदन

मावली (राजस्थान) : श्रमण संघीय महामंत्री पू. श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' उपाध्याय पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म., सेवाभावी पू. श्री कोमल मुनि जी म., पू. श्री प्रभव मुनि जी म. पू. श्री प्रशमित मुनि जी म. आदि ठाणा एवं महासती पू. श्री प्रमिला जी म., महासती पू. डॉ. रवि रश्मि जी म., पू. डॉ. चारित्रशिला जी म., पू. डॉ. चन्द्रप्रभा जी म., पू. श्री किरण प्रभा जी म., पू. श्री प्रेक्षा जी म., पू. श्री मंजिता जी म. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में संस्कार ज्योति कार्यालय में मुमुक्षु अंजली जैन का भव्य अभिनंदन

समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुमुक्षु अंजली जैन की जैन स्थानक से भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। जो सदर बाजार से होते हुए संस्कार ज्योति कार्यालय पहुंची। शोभा यात्रा में सकल जैन समाज के श्रावक-श्राविकाएँ जयकारे लगाते हुए एवं महिलाएँ मंगल गीत गाते हुई चल रही थी। विशाल शोभा यात्रा संस्कार ज्योति कार्यालय पहुंचकर धर्मसभा में परिवर्तित हुई। मुमुक्षु अंजली जैन घोड़े से उत्तर कर संस्कार ज्योति कार्यालय आई और गुरु भगवंतों को वंदन किया। संस्कार ज्योति के संस्थापक/संपादक श्री दलीचंद जी दिव्येश ने सभी गुरुभगवंतों, साध्वीवृंद एवं श्रावक-श्राविकाओं का हृदय से स्वागत एवं अभिनंदन किया।

श्रमण संघीय महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी म. ने अपने आशीवर्चन में कहा कि शबरी की कुटिया पर राम आये। राम के साथ वन में जितने तप करने वाले तापस थे, वे भी आये आज कुछ ऐसा ही अनुभव हो रहा है, संस्कार ज्योति कार्यालय पर आकर। गुरुदेव ने कहा कि दलीचंद एक भावना से किन्तु साधारण जीवन जीने वाला एक श्रावक है और सात्विक धर्म ध्यान से अनुप्राणित इनका जीवन संघ और समाज की सेवा में तत्पर है। यहां पर आज अंजली बहन एवं हमारे सभी संत-सती आये इसकी मैं कल्पना नहीं कर सकता था। क्योंकि मैं जानता हूं एक छोटा सा परिसर और एक सामान्य जन के यहां इस तरह का आयोजन देना सोचना पड़ता है पर इसकी तीन दिन की लगन कि मुमुक्षु अंजली सहित संत-सती का हमारी झोपड़ी पर पदार्पण हो। मैंने कहा संभव नहीं है, सभी के पाँव जलेंगे। ऐसी स्थिति में संत-संती जी को कहां ले जाया जाये। किंतु इसकी उत्कृष्ट भक्ति भावना, अंतकरण की लगन मुमुक्षु कन्या अंजली सहित आज संघ सहित संभव हुआ। तो मुझे लगा शबरी की कुटिया पर पदार्पण और वो किसी एक घर पर और साधारण गृहस्थ के घर। हम कभी कल्पना भी नहीं कर सकते किन्तु इसके निरंतर आग्रह एवं भक्ति के कारण उसकी बात स्वीकार करनी पड़ी। गुरुदेव ने कहा कि दलीचंद दिव्येश संस्कार ज्योति एवं हृदय परिवर्तन आन्दोलन के माध्यम से सम्पूर्ण मानव समाज की सेवा में संलग्न है। पूरा परिवार धर्मप्रिय है। सभी के प्रति शुभकामना हैं तुम्हारी धर्म साधना और सेवा कार्य निरंतर आगे बढ़ती रहे। यही मंगल कामनाएँ।

समारोह में संस्कार ज्योति परिवार के श्री दलीचंद दिव्येश, दाखीबाई, देवनारायण, निर्मला, नरेन्द्र, पिंकी, हर्षिता द्वारा मुमुक्षु अंजली जैन की गोद भराई की रस्म अदा की गई। समारोह में मुमुक्षु अंजली जैन के जयकारों के साथ अभिनंदन किया। महासतीवृंद द्वारा मंगल गीत गाये गये। समारोह में दलीचंद दिव्येश ने सभी का इस आयोजन में पधारने हेतु आभार प्रकट किया। समारोह पश्चात् गुरुभगवंतों द्वारा संस्कार ज्योति कार्यालय का अवलोकन किया। मुमुक्षु अंजली जैन द्वारा गुरुभगवंतों से गोद भराई के बाद आर्शीवाद लिया। मंगलपाठ के पश्चात् संस्कार ज्योति परिवार द्वारा श्रीफल की प्रभावना वितरित की गई।

प्रेषक : नरेन्द्र चौहान

खड़की शिक्षण संस्था के सचिव पद पर श्री आनंद जी छाजेड़ जैन का चयन

पुणे (महाराष्ट्र) : पुणे खड़की की मशहूर शैक्षणिक संस्था 'खड़की शिक्षण संस्था' के अध्यक्ष पद पर श्री कृष्णकुमार जी गोयल तथा सचिव पद पर एकमत से श्री आनंद चन्द्रकांत जी छाजेड़ जैन का चयन हुआ। श्री आनंद छाजेड़ जी माजी मंत्री एवम् विधायक, जेष्ठ नेता स्व. श्री चन्द्रकांत जी छाजेड़ जैन के सुपुत्र है। श्री आनंद छाजेड़ जी नगर सदस्य भी रहे चुके है। उनका जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से अभिनंदन करते हैं।

प्रेषक : अशोककुमार पगारिया जैन

30 सितम्बर को जोधपुर में होगी वैरागी वरुण जैन की दीक्षा'

जोधपुर (राजस्थान) : लोकमान्य सन्त शेर-ए-राजस्थान वरिष्ठ प्रवर्तक पूज्य गुरुदेव रुपमुनिजी म. 'रजत', उपप्रवर्तक सलाहकार मरुधरा भूषण पूज्य गुरुदेव पू. श्री सुकनमुनि जी म., तपस्वी रत्न ज्योतिष सम्राट पू. श्री अमृत मुनिजी म., युवप्रज्ञ पू. डॉ. अमरेश मुनि जी म. आदि ठाणा 14 के पावन सान्निध्य में आषाढ़ शुक्ला दशमी दिनांक 30 सितम्बर 2017 (विजय दशमी) के पावन दिवस पर महावीर काम्प्लेक्स जोधपुर में

वैरागी वरुण जैन, जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करेंगे। वैरागी वरुण जैन निवासी सारण- सिरियारी श्री वच्छराज जी पीतलिया व श्रीमती संतोषी देवी के सुपुत्र हैं। वैरागी भाई पिछले 7 वर्षों से गुरु सान्निध्य में रहकर जैन धर्म के गूढ़ सिद्धांत रहस्य व जगत की नश्वरता को जानकर वैराग्य के पथ पर गुरु अमृत की प्रेरणा से बढ़े हैं। आपने अभी तक व्यावहारिक शिक्षा में बीए, एमए और भारतीय दर्शनों की तत्व मीमांसा का समीक्षात्मक अध्यनन विषय पर पीएचडी कर रहे हैं व जैन धर्म की शिक्षा में जैन सिद्धांत आचार्य तक परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त की है। आपकी योग्यता व संयम पथ पर चलने की दृढ़ निश्चयता को देखते हुए पूज्य गुरुदेव श्री रुपमुनि जी म. ने दिनांक 6 अगस्त 2017 को भरी सभा में मुमुक्षु वरुण जैन की दीक्षा की घोषणा की है। इस मौके पर मुमुक्षु वरुण जैन ने हर्षाभिव्यक्त करते हुए सभी गुरुभक्तों को दीक्षा महोत्सव में पधारने की भाव भरी विनंती की। पावन अवसर पर भारतवर्ष से विभिन्न क्षेत्रों के गुरुभक्त उपस्थित थे। **प्रेषक : रतनलाल दरड़ा**

विजापुर में भव्याति पावन चातुर्मास

विजापुर (गुजरात) : समन्वय साधिका पू. महासाध्वी प्रियदर्शनी श्रीजी 'प्रियदा' आदि ठाणा चार चातुर्मास मंगल प्रवेश जोरो शोरो से हुआ। विजापुर नगर में क्लश यात्रा निकाली गई। जिसमें सभी समप्रदाय के लोग शामिल हुए। हमारे यहाँ साध्वी समुदाय का यह प्रथम चातुर्मास है। शुरुआत से 20 तेले व 10 बेले हुए। रोज एकासन, उपवास एवं आयम्बिल की कड़ी चल रही है। तपस्या में आगे बढ़ते हुए सौ.प्रियंका गौतम बोहरा, सौ. रेणुका मुकेश डुंगरवाल तथा सौ. प्रमिला भंवरलाल जी चत्तर ने 9 की तपस्या की एवं सौ. ज्योति भाविक जी लोसर ने 16 की तपस्या की। प्रवेश के दिन से ही तेले के साथ सवा लाख नवकार मंत्र का 24 घंटे अखण्ड जांप हुआ। **प्रेषक : शांतिलाल दक**

आचार्य पू. श्री आनंदऋषी जन्मोत्सव तथा 1008 अठ्ठाई महोत्सव संपन्न हुआ

सिंकदराबाद (आंध्र प्रदेश) : राष्ट्रसंत, आचार्य भगवंत पू.श्री आनंदऋषी जन्मोत्सव निमित्त 1008 अठ्ठाई महोत्सव का भव्य समारोह श्रमण संघीय उपाध्याय पू.श्री प्रवीणऋषी ठाणा, पंन्यास डॉ. पू.श्री अरुणविजयजी म., हेमकुल दिवाकर पू.श्री ऋषभ मुनिजी म. आदि ठाणा एवं तप गंगोत्री महासतिजी संतोषजी म., स्वर्ण संयम आराधिका, श्रमणी सूर्या पू. श्री वीरकांताजी म. आदि ठाणा-4, अनुष्ठान आराधिका, प्रवचन प्रभाविका पू.श्री. कुमुदलताजी म. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में सोमवार, 24 जुलाई 2017 को आनंदतीर्थ समवशरण, रानी गंज, सिंकंदराबाद में संपन्न हुआ। समारोह पश्चात् श्रीसंघ की ओर से गौतम प्रसादी का आयोजन किया गया। गौतम प्रसादी के लाभार्थी हस्तीमलजी, भंवरलालजी,मोहनलालजी, महावीरचंदजी, प्रणय मुनोत परिवार सिकंदराबाद रहे। **प्रेषक : संपतराज कोठारी**

पर्यावरण संरक्षण के लिए महमानों में बांटे पेड़ पौधे

लुधियाना (पंजाब) : भारत विकास परिषद् के जितने भी भारत में सेवा के प्रकल्प चलाए जा रहे है उनके नैशनल चेयरमैन सेवा के प्रसिद्ध समाज सेवी यशपाल गुप्ता ने अपने नवग्रह प्रवेश पर आयोजित भजन संध्या के उपरांत सैंकड़ों की संख्या में पहुंचे सखे-सम्बंधी दोस्त-मित्रों को गुप्ता परिवार ने रिर्टन गिफ्ट से भरा विशाल काउंटर पेड़ पौधों का भंडार जाते हुए प्रसाद के रुप में दिया गया। । इस मौके पर शहर के जाने माने उद्योगपति, राज नेतायों के साथ-साथ प्रसिद्ध समाज सेवी नरेन्द्र मित्तल, नीलम गुप्ता, जे.पी. गुप्ता, रमेश रानी, पूजा-रोहित गुप्ता, आयुष-धृति, महिन्द्र पाल जैन, अजय शर्मा, सुमन गुप्ता, कमला जैन, सुरिन्द्र राणा, राज कुमार वालिया आदि गणमान्य उपस्थित थे। **प्रेषक : राजेश जैन**

गुरुदेव की जन्म जयंती

भीलवाड़ा (राजस्थान) : राजा जी का करेडा, महावीर भवन में श्रमण संघीय प्रथम युवाचार्य पू. श्री मधुकर मुनि जी म. की सुशिष्या मधुर प्रवक्ता पू. श्री कमलप्रभा जी म. आदि ठाणा-4 का भव्यातिभव्य चातुर्मास धर्मध्यान और तप-त्याग के ठाठ-बाठ से चल रहा है। 6 अगस्त को गुरुदेव मरुधर केसरी जी म. की 126वीं जन्म जयंती एवं लोकमान्य संत वरिष्ठ प्रवर्तक पू. श्री रुपचंद जी म. की 92वीं जन्म जयंती सामायिक तेला एवं एकासना दिवस के रुप में मनाई गई। तेरापंथ संघ के संत रत्न शासन श्री हर्षलाल जी म. एवं तत्वज्ञाता मुनिश्री दर्शनकुमार जी का सुन्दर संगम हुआ श्रीसंघ अध्यक्ष अमरसिंह कोठारी ने बताया कि गुरुदेव की जन्म जयंती पर बैमाली से पधारे श्रीमती मेहताब बहन सोनी ने 31मासखमण की तपस्सया के प्रत्याख्यान किये।

इस अवसर पर श्रावक-श्राविकाओं में 100 एकासना और सामासिक के तेले 100 हुए। इसके साथ ही तेले की बड़ी निरंतर एवं त्रिवेणी तप उपवास, आयम्बिल, एकासना की लड़ी चल रही है। तप-त्याग और धर्म ध्यान के ठाठ लगे हुए हैं। करोड़ा बालिका मंडल ने 'सती सुभद्रा' के जीवन पर एक सुन्दर नाटिका प्रस्तुत की।

प्रेषक : अमर सिंह कोठारी

कटक चातुर्मास में तपस्याओं की लहर

कटक (ओडिसा) : महासती पू. डॉ. विजयश्रीजी म. ठाणा-2 के सान्निध्य में चातुर्मास काल से ही तेले, आयम्बिल, दया व एकासना की कड़ी चल रही है। पूज्य महासती जी की प्रेरणा व आर्शीवाद से 'अहिंसा जैन युवा संघ' की स्थापना हुई एवं युवा संघ ने स्थापना दिवस के उपलक्ष में स्कूल के बच्चां को नोट बुक, पेन, पाठय पुस्तकें एवं पाठय साम्रगी वितरित की। 23 जुलाई से व्यसन मुक्ति अभियान का शुभारंभ हुआ एवं युवाओं ने घर-घर जाकर व्यसन मुक्ति के फार्म भरवाये और उन्हें सर्टिफिकेट प्रदान किए।

महासाध्वी पू. डॉ. विजय श्रीजी 'आर्या' की अनुपम कृति 'जैन द्रव्यानुयोग' एवं प्रश्नावली' जिसकी अखिल भारतीय स्तर पर खुली पुस्तक परीक्षा रखी गई है। उसका विमोचन श्रीमती कमलादेवी धर्मपत्नी स्व. श्री लालचंद जी खटोड कटक वालों के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। आचार्य सम्राट पू. श्री आनंदऋषि जी म. की 118वीं जन्म जयंती एवं पंजाब प्रवर्तिनी महासती पू. श्री केसर देवी जी म. की 47वीं जन्म जयंती पंच दिवसीय सहजोडे एकासने, दया, प्रश्नमंच, पचरंगी जाप एवं गुणानुवाद द्वारा अति भव्य रुप से मनाई गई।

प्रेषक : अशोक नाहटा

शक्तिपुंज युवा सम्मेलन का आयोजन

युग प्रधान, ध्यान योगी, आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. सा.,
युवाचार्य प्रवर पू. श्री महेन्द्रऋषि जी म. सा.
प्रवर्तक पू. श्री प्रकाश मुनि जी म. सा. 'निर्भय' एवं साधु-साध्वीवृंद के सान्निध्य में

शक्तिपुंज युवा सम्मेलन

का आयोजन रविवार 24 सितम्बर 2017 को इन्दौर (मध्य प्रदेश) में किया जा रहा है। आप सभी युवाओं से निवेदन है कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में सम्मेलन में भाग लेवें।

:: निवेदक ::

मोहनलाल चोपड़ा जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन
राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष

धूमधाम से मनाया आचार्य श्रीजी का जन्म दिवस

शुजालपुर मंडी (मध्य प्रदेश) : श्रमण संघीय, मालव केसरी, प्रसिद्ध वक्ता पू. गुरुदेव श्री सौभाग्यमल जी म. प्रवर्तक सौभाग्य कुल दिवाकर पू. गुरुदेव श्री प्रकाशमुनि जी म. की आज्ञानुवर्ती बा.ब्र. मालवमणि पू. गुरुवर्या पू. श्री चांद शांतिकुंवर जी म. की सुशिष्या निमाड़ सौरभ पू. श्री रमणिककुंवर जी म. 'दमु' ठाणा 6 का चातुर्मास शुजालपुर मंडी में तप-त्याग, जप-तप के साथ गतिमान चल रहा है। चातुर्मास में जप-तप की कड़ी में मालव केसरी गुरुदेव पू. श्री सौभाग्यमल जी म. की पुण्य तिथि 18 जुलाई को तप तेले तप की आराधना करवाके मनाई, जिसमें अठाई, नव एवं आयम्बिल उपवास के तेले के पच्चखाण हुए। 24 जुलाई 2017 को श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य सम्राट पू. श्री आनंदऋषि जी म. व निमाड़ सौरभ पू. श्री रमणिक कुंवर जी म (दमु) का 76 वाँ जन्म दिवस त्रिदिवसीय साधना के द्वारा मनाई गई। इस क्षेत्र की पुण्यवाणी गुरुणी मैया का प्रताप की आठ दिन में ही मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री सम्मानीय श्री शिवराज सिंह जी चौहान ने महावीर भवन में पधारकर दर्शन वंदन किया एवं आर्शीवाद का लाभ लिया। इसके लिये श्रीसंघ उत्साहवान है।

प्रेषक : विनोद जैन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 'मेरी माँ' पुस्तक का विमोचन

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के निवास पर एक शिष्ट मंडल जिसका नेतृत्व श्री सत्य नारायण जटिया जी पूर्व केन्द्रीय मंत्री व सांसद के साथ समाज रत्न श्री सुभाष ओसवाल जैन, पूर्व उपाध्यक्ष जैन कॉन्फ्रेंस, श्री मनोज भाई शाह अध्यक्ष श्री आदि घंटाकरण चेरिटेबल ट्रस्ट ठाणे, महाराष्ट्र, श्री विनय जैन कागजी उद्योगपति व सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री अवनीश जैन उद्योगपति व समाजसेवी, श्रीमती एवं श्री राज जटिया जी समाजसेवी, श्री बिंजराज रांका जी वरिष्ठ लेखक एवं संपादक 'मेरी माँ', प्रधानमंत्री द्वारा मेरी माँ श्री बिंजराज रांका जी द्वारा संकलित, सम्पादित तथा लिखित पुस्तक का विमोचन करवाया। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा कि इस पुस्तक में सभी धर्मों हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई में 'माँ' का आदर किया गया है तथा अमेरिका, कोरिया, अफ्रीका आदि कुछ देशों में माँ से संबंधित रचनायें समर्पित की गई। शिष्टमंडल ने प्रधानमंत्री का आधार व्यक्त किया, ये जैन समाज का अनोखा व अद्भुत कार्य था। **प्रेषक : अभय कुमार**

फ्री दंत जाँच शिविर का आयोजन किया गया

पश्चिम विहार, नई दिल्ली : 22 जुलाई, 2017 को गुरु पदम जैन समिति द्वारा ख्याला दिल्ली में सेवा श्रमणी महासाध्वी पू. श्री श्रेया जी म. की पावन प्रेरणा से फ्री दंत जाँच शिविर का आयोजन शैमरोक वल्स पब्लिक स्कूल, अवतार इन्कलेव, पश्चिम विहार दिल्ली में किया गया। इस शिविर में स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों एवं अभिभावकों के दाँतों की जाँच करके दवाईयां भी फ्री वितरित की गई। शिविर में लगभग 70 लोगों ने दंत जाँच कराई। शिविर में लाला जगदीश राय जैन, श्री बारूमल जैन, श्री नरेन्द्र जैन, श्री संजय जैन श्री अरूण जैन ने भाग लिया। डॉ. साहिल डबास जी की योग्यता की सभी ने सराहना की। स्कूल के प्रबंधक श्री राजेन्द्र डबास जी ने पधारे हुए सभी महानुभावों का अभिनंदन किया, गुरु पदम जैन समिति के द्वारा किये जा रहे सेवा कार्यों की प्रशंसा की तथा भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजन कराने का आश्वासन दिया। महासाध्वी पू. श्री श्रेया जी म. ने अपनी शुभमंगलकामनाएं प्रेषित करके समिति द्वारा किये जा रहे सेवा कार्यों

को और अधिक गतिमान करने की प्रेरणा दी तथा सभी कार्यकर्ताओं एवं आयोजकों को मंगल आर्शीवाद दिया। श्री ओमप्रकाश, प्रबंधक, गुरु पदम जैन समिति ने सुचारु रुप से शिविर की चलाने में चलाने में मदद की।

प्रेषक : अनिल जैन

प्रकृति संरक्षण दिवस समारोह मनाया गया

ऊटी (तमिलनाडु) : स्थानीय बोटानीकल गार्डन में क्रजेन्ट प्ले प्राईमरी स्कूल ऊटी की ओर से प्रकृति संरक्षण दिवस पर एक समारोह मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री निलगिरी जिलाधीश एनोसेन्ट दिव्या (आई.ए.एस.) थे। जिनका भव्य स्वागत क्रजेन्ट प्ले प्राईमरी स्कूल में पढ़ने वाली फ्री केजी की छात्राओं ने पुष्प गुच्छ देकर किया। फ्री केजी एवं यूकेजी तथा प्रथम कक्षा के कुल 300 छात्र-छात्राओं ने इस समारोह में अलग-अलग तरह की पोशाके पहनकर भाग लिया एवं स्कूल की ओर से जिलाधीश की उपस्थिति में पौधारोपण किया गया। स्कूल की ओर से गार्ड़न में आने-जाने वाले पर्यटकों को पौधों के व फूलों के बीच वितरित किए गए। स्कूल के संस्थापक उमर फारुख ने प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के बारें में उपस्थित लोगों को समझाया और जगह-जगह पर पौधे लगाने के लिए कहा तथा एक छोटे बच्चों की रैली भी निकाली, जिसको जिलाधीश एनोसेन्ट दिव्या ने सफल झण्डी दिखाकर रवाना किया। **प्रेषक : मोती बोथरा जैन**

एस. एस. जैन सभा नाभा की कार्यकारिणी का चयन

नाभा (पंजाब) : एस. एस. जैन सभा (रजि.) नाभा, पंजाब का जनरल संपन्न हुए, जिसमें निम्नलिखित कार्यकारिणी सर्वसम्मति से चुनी गई। प्रधान श्री नरेन्द्र कुमार गोयल, महामंत्री श्री शालीभद्र जी जैन, उप-प्रधान श्री सुरेश कुमार जी जैन, कोषाध्यक्ष श्री मोहनलाल जी जैन को चुना गया।

प्रेषक : शालीभद्र जैन

दूध की थैली, मोमबत्ती व माचिस का वितरण किया गया

बनासकांठा (गुजरात) : 500 दूध की थैली व 1000 मोमबत्ती तथा माचिस का वितरण श्री भगवतीलाल जी परमार, श्री ललित 'विजु' जी विश्लोत, श्री गौतम जी बाफना, श्री मुकेश जी कच्छारा, श्री मनोज जी डांगी, श्री राजकुमार जी डांगी, श्री रतन जी चपलोत, श्री सुधीर जी कोठारी, श्री मनीष जी बाफना, श्री राजेन्द्र जी मेहता, श्री अभिषेक जी सियाल, श्री पंकज जी पोखरना, श्री तेजस जी सियाल, श्री राजकुमार जी तातेड़ व श्री देवेन्द्र जी बोकड़िया आदि ने किया। इस सेवकीय सहयोग के लिए पूरी टीम को बनासकांठा के जिला कलैक्टर श्री दिलीप भाई राणा ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। **प्रेषक : रिंकेश डांगी**

पवन कुमार जी जैन को डॉक्टर ऑफ लिटरेचर की उपाधि

बदनावर (मध्य प्रदेश) : आयनॉक्स इंटरनेशनल विश्वविद्यालय कोरगोन-सतारा (महाराष्ट्र) द्वारा आयोजित भव्य दीक्षांत समारोह में डॉ. श्री विट्ठल श्रीरंग मदने, चांसलर, डॉ. श्री मधुसुदन घाणेकर, वाईस चांसलर, श्री बी.के. सोनार, राष्ट्रीय अध्यक्ष मानव अधिकार न्यायिक महासंघ द्वारा श्री पवन जैन द्वारा लिखित पुस्तक वर्धमानपुर 'अणु' प्रवचन एवं समाचार संग्रह, सर्वोदय श्री चांदमल जी जैन 'फूलजीबा' जीवन प्रसंग तथा जीवन सौरभ आदि लेख एवं पत्रों का विश्वविद्यालय द्वारा मूल्यांकन किया गया। तद्नुसार डॉ. पवन कुमार जैन को 'डॉक्टर ऑफ लिटरेचर' की उपाधि प्रदान की गई। **प्रेषक : विश्वास जैन**

शोक समाचार

धर्मनिष्ठ, श्रावक, समाजसेवी श्री भगवानदास जैन का देवलोक गमन

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य एवं श्री जैन स्थानक आत्म वल्लभ सोसाएटी सैक्टर-13 रोहिणी के महामंत्री श्री संजीव जैन के पिताश्री भगवानदास जैन (बी.डी.जैन) का 3 अगस्त, 2017 को स्वर्गवास हो गया। 'जैन गौरव' बी. डी. जैन के अंतिम संस्कार में निगमबोध घाट पर जैन समाज सहित बड़ी संख्या में जनसमूह शामिल हुआ।

संस्कारित सामज निर्माण में आजीवन समर्पित रहे श्री भगवानदास जी जैन रोहतक वल्लभविहार निवासी 77 साल की आयु पूर्ण कर देहावसान हो गये। आपका भरा पूरा खुशहाल सम्पन्न परिवार में आपकी तीन बहन एक भाई थे। आपके भाई श्री रोशनलाल जी जैन अल्पायु में 1983 में स्वर्ग सिधार गये थे तभी से आप अपने संयुक्त परिवार के मुखिया हो गये। आपके दो भतीजे किशन जैन एवं महेश जैन तथा चार सुपुत्र विनय जैन, धर्मपत्नी श्रीमती अंजलि जैन, संजीव जैन, धर्मपत्नी सपना जैन, संजय जैन, धर्मपत्नी उषा जैन तथा एक पुत्री श्रीमती सुनीता जैन, धर्मपत्नी प्रवीन जैन सैक्टर-8 रोहिणी निवासी है। आपके परिवार में 9 पौत्र, 6 पौत्री, 2 दोहते, 4 पड़पोते, 1 प्रदोहता, 1 प्रदोहती है एवं आपका 1 पोता हर्षित जैन एसडीएम सरिता विहार है। आपका पूरा परिवार प्रतिष्ठित सामाजिक व राजनीतिक है।

श्री भगवान दास जी हमेशा भगवान महावीर के आदर्शों व विचारों के पक्के समर्थक रहे। आप अनेक वर्षों तक विभिन्न जैन सभा के प्रधान रहे तथा आपके अथक प्रयास एवं सहयेग से मुनि मायाराज हॉस्पिटल पीतमपुरा, दिल्ली का निर्माण हुआ। रोहतक, हरियाणा में मुनी मायाराम होम्योपैथिक एवं फिजियोथेरेपी के आप संस्थापक थे। इसके अलावा रेलवे रोड़ रोहतक एवं वल्लभविहार जैन स्थानक के निर्माण में आपका विशेष योगदान रहा। आपके द्वारा हुए सामाजिक कार्य समाज व युवाओं के प्रेरणास्रोत व अनुकरणीय है। आपके व्यक्तित्व पर महामुनि श्री कन्हिराम जी, मुनिश्री सुदर्शनलाल जी म., पू. श्री सुभद्र मुनि जी का विशेष आर्शीवाद रहा। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से पुण्यात्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांसुमन **प्रेषक : जयकुमार जैन**

धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती चूंकाकंवर जी सुराणा जैन का देवलोक गमन

कुचेरा (राजस्थान) : धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती चूंकाकंवरजी सुराणा जैन धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरीलाल जी सुराणा जैन निवास कुचेरा का दिनांक 25 जुलाई, 2017 को स्वर्गवास हो गया। उन्होंने अपने जीवन की सफल यात्रा 96 वर्ष की आयु में धर्म आराधना से सम्पूर्ण करके सद्गति प्राप्त की। उन्होंने अपने जीवन काल में कई तपस्यायें की जिनमें वर्षीतप, अठाईये पर पर्युषण के अलावा उपवास बेले, तेले, जीवन परयंत रात्रि भोज का त्याग, पोषध प्रतिक्रमण, साधु-सतिवंदों की सेवा व्याख्यान का लाभ लिया। आपका परिवार युवाचार्य पू. श्री मधुकर मुनिजी म. व महासती पू. श्री उमारावकंवर जी अर्चना के अनन्य भक्तों से रहा है। आपके दो पुत्र पारसमल व नीलमचंद व पांच पुत्रियां के अलावा भरा पूरा परिवार छोड़ गई है। आपने अपने जीवन में पड़पौत्र का भी सौभाग्य प्राप्त किया। **प्रेषक : पारसमल नीलमचंद सुराणा**

श्रीमान् डालचंद जी संचेती जैन का स्वर्गवास

सूरत (गुजरात) श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की गुजराती प्रांतीय शाखा के महामंत्री श्री दिनेश जी संचेती जैन के पिताश्री श्रीमान डालचंद जी संचेती जैन, करोदरा सूरत निवासी का दिनांक 04 अगस्त 2017 को अकस्मात स्वर्गवास हो गया। श्री दिनेश जी संचेती जैन के पिताश्री बहुत ही मिलनसार, व्यवहार कुशल एवं देव-गुरु-धर्म के प्रति समर्पित व्यक्तित्व के धनी थे। उनके सुपुत्र श्री पारसमल जी जैन, श्री माणकचंद जी जैन, श्री दिनेश जी संचेती, श्री सुरेश कुमार जी जैन सभी समाज में अपना विशेष स्थान रखते हैं, जोकि उनके द्वारा दिये सुसंस्कारों का ही परिणाम है।

आप (दिनेश जी संचती जैन) वर्तमान में गुजरात प्रांतीय शाखा के महामंत्री पद पर अपनी निस्वार्थ सेवाएं समाज को प्रदान करते हुए अपनी जिम्मेदारी को खूब अच्छी तरह से निभा रहे हैं। आपके पिताश्री जी की प्रेरणा व आर्शीवाद से आज पूरा परिवार पुष्पित एवं पल्लवित है। ऐसे व्यक्तित्व का इस धरा से चले जाना सम्पूर्ण समाज के लिये दुःखद है, परन्तु ईश्वर के आगे किसी की नहीं चलती है। उनके निर्णय को शिरोधार्य करना ही होता है। उनकी आत्मा को चिर शांति प्राप्त हो, इस दुःखद बेला पर पूरा जैन कॉन्फ्रेंस परिवार आपके दुःख में सहभागी है।

प्रेषक : पारसमल जैन

धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती जमना देवी ढ़िलीवाल जी जैन का स्वर्गवास

मुंबई (महाराष्ट्र) : धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती जमना देवी ढिलीवाल जैन धर्मपत्नी स्व. श्री हगामीलाल जी जैन मूल निवास चित्तौढ़गढ़ बाद में जयपुर फंव वर्तमान मुंबई दिनांक 16 जुलाई, 2017 को स्वर्गवास हो गया। बोल्या परिवार में 6 भाई और 3 बहनों में इस पीढ़ी की अंतिम कड़ी थी। बोल्या परिवार की हमारी भुआ अपने पीछे पुत्र, पुत्रियां, पौत्र, पौत्री एवं 19 भतीजों को छोड़ गई। वे नियमित नवकार महामंत्र, सामयिक, स्वाध्याय धर्म अराधना, संयमी, आत्माओं के दर्शन मांगलिक लाभ लेना बच्चों से धर्म संस्कार की चर्चा करना प्रतिदिन साधु-साध्वियों के दर्शन तथा धर्म स्थानक में जाने का अपने जीवन में जीने का अहम हिस्सा बना लिया था।

प्रेषक : भंवरलाल मोहनलाल बोल्या

धर्मनिष्ठ, सुश्राविका सौ. संतोष कुमारी सिंघवी जैन का देवलोक गमन

दिल्ली : धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती संतोष कुमारी सिंघवी जैन का 26 जुलाई, 2017 को स्वर्गवास हो गया। हमेशा साधु-सतिवृंदों की सेवा में तत्पर रहती थी। अपने पीछे भरा पूरा छोड़ गई हैं।

प्रेषक : गजेन्द्र सिंघवी

धर्मनिष्ठ, सुश्राविका सौ. कमलाबाई राका जैन का देवलोक गमन

नाशिक (महाराष्ट्र) : सामाजिक कार्यकर्त्ता तथा पत्रकार श्री नेमीचंद राका की धर्मपत्नी धर्मनिष्ठ, सुश्राविका सौ. कमलाबाई राका का 11 जुलाई, 2017 को स्वर्गवास हो गया। परिवार में उनके पति, एक पुत्र नितिन राका 'राका एडवरटाईजिंग एजेंसी' चलाते हैं तथा दो कन्या, तीन बहनें, पोत्र-पोत्री भरा पूरा परिवार है।

प्रेषक : नितिन राका

दिवंगत आत्माओं के प्रति कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि

चलो चण्डीगढ़ | श्री महावीराय नमः | पहुंचों चण्डीगढ़

जय आत्म | जय आनंद | जय देवेन्द्र | जय शिव

जय गुरु रुप | मधुर आमंत्रण | जय गुरु निहाल

गुरु प्रेमचंद 117वीं जन्म जयंती महोत्सव

दिनांक : 10 सितम्बर, दिन रविवार, प्रातः 08:30 बजे से

भगवान महावीर शासन के महान संत,
स्थानकवासी समाज के रक्षाक
उपाध्याय प्रवर्तक जैन भूषण प्रसिद्ध वक्ता
पंजाब केसरी स्वामी श्री प्रेमचन्द जी महाराज
पावन सान्निध्य

लौह पुरुष, उप-प्रवर्तक महाश्रमण श्री ओममुनि जी म. सा., धर्म प्रभावक, गुरु निहाल प्रेम दिवाकर श्री सौरभ मुनि जी म. सा., सेवाभावी श्री राजीव मुनि जी म. सा., युवा प्रेरक श्री विज्ञान मुनि जी म. सा. 'साईंस' आदि ठाणा - 4

:: आयोजक ::

श्री एस. एस. जैन सभा (रजि.)
जैन स्थानक, 18 सैक्टर डी ब्लॉक चण्डीगढ़
संपर्क : 9872001036 - 9814962120 - 9417496057

:: नमनकर्ता ::

उमेश मोहनलाल चोरड़िया, सौ. ललित उमेश चोरड़िया जैन, पीयूष उमेश चोरड़िया जैन, हर्षिता पीयूष चोरड़िया जैन एवम् चोरड़िया परिवार
आकुर्डी, पूना - 411 035 (महाराष्ट्र)

Advt.

श्रमण संघीय एवं जैन कॉन्फ्रेंस की आध्यात्मिक, सामाजिक गतिविधियाँ

रविवार 6 अगस्त 2017 जोधपुर (राजस्थान) में लोकमान्य संत शेरे राजस्थान प्रवर्तक प.पू. श्री रूपमुनि जी म. 'रजत', उप-प्रवर्तक पू. श्री सुकुन मुनि जी म., पू. श्री अमृत मुनि जी म., पू. डॉ. अमरेश मुनि जी म. 'निराला' आदि ठाणा के दर्शन वंदन करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के रा. अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी चोपड़ा जैन, पूर्व अध्यक्ष श्री केसरीमल जी बुरड़ जैन, श्री बालचंद जी खरवड़, श्री पारस मोदी जैन, श्री अशोक धोका, विमल जैन।

मावली राजस्थान में श्रमणसंघीय महामंत्री पू. श्री सौभाग्य मुनि जी म., उपाध्याय प्रवर पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म. प्रवर्तक पू. श्री मदन मुनि जी म. सा. आदि ठाणा कु. अंजली की दीक्षा प्रसंग के अवसर पर मंचासीन।

मावली (राजस्थान) में श्रमण संघीय महामंत्री पू. श्री सौभाग्य मुनि जी म., उपाध्याय प्रवर पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म. प्रवर्तक पू. श्री मदन मुनि जी म. सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में कु. अंजली की दीक्षा प्रसंग के अवसर पर सांसारिक पारिवारिकजनों के साथ।

कानपुर में परम पू. श्री धनश्याम मुनि जी म. के 36 दिवसीय तपस्या पूर्ति समारोह में राष्ट्र संत पू. श्री कमल मुनि जी म. 'कमलेश', पू. श्री कौशल मुनि जी म. तथा महासाध्वी जी आदि ठाणा के सान्निध्य में जैन कॉन्फ्रेंस, सकल जैन समाज एवं श्रीसंघ कानपुर की ओर से तप शिरोमणि की आदर की चादर समर्पित करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन तथा साथ में संघ के अध्यक्ष श्री धनंजय जैन, महामंत्री श्री विजय जी लोढ़ा, कोषाध्यक्ष श्री भीकमजी बागमार जैन तथा श्री विनोद जी जैन, सौ. कौशल जी जैन, श्री बालमनोहर जी जैन आदि गणमान्यजन।।

पू. श्री विपुलदर्शना जी म. के सान्निध्य पिंपरी, चिंचवड महासंघ की ओर से 10वीं एवं 12वीं कक्षा में सफल छात्र छात्राओं को सम्मानित किया गया. इस अवसर पर उपस्थित बीएसटी के सहआयुक्त सर्वश्री एस.पी.काळे जी, प्रमोद जी नहार एवं डॉ. अशोककुमार पगारिया जी, प्रकाश कटारिया जी तथा सुरेश जी गादिया आदि।

पनवेल में पू. श्री अक्षय ज्योति जी म. सान्निध्य में उवसग्गहरं स्तोत्र जाप अनुष्ठान के समापन समारोह के अवसर पर कार्यक्रम के सहयोगियों को सम्मानित किये जाने का दृश्य।

कटक (ओडिसा) में मंचासीन महासाध्वी पू. श्री विजयश्री जी म. 'आर्या', पू. श्री तरुलता जी म. के सान्निध्य में अहिंसा जैन युवा संघ के स्थापना दिवस के अवसर पर संघ के कार्यकर्त्ता।